भण्डारण भारती

अंक : 74

हमारी भाषा हिंदी
इतनी मधुर इतनी
समृद्ध
जैसे लहलहाते
सुनहरे खेत

राजभाषा विशेषांक

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
जन-जन के लिए भण्डारण

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यशामलां मातरम् ।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीं
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीं
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीं
सुखदां वरदां मातरम्
वन्दे मातरम्।

कोटि–कोटि–कण्ठ–कल–कल–निनाद–कराले
कोटि–कोटि–भुजैर्धृत–खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं मातरम्
वन्दे मातरम्।

तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि ह्रदि,
तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः
शरीरे बाहुते तुमि मा शक्ति,
ह्रदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे–मन्दिरे मातरम्
वन्दे मातरम्।

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी वाणी विद्यादायिनी,
नमामि त्वाम् नमामि कमलां
अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम्
वन्दे मातरम्।

श्यामलां सरलां सुस्मितां
भूषितां धरणीं भरणीं मातरम्
वन्दे मातरम्।

– बंकिमचंद्र चटर्जी

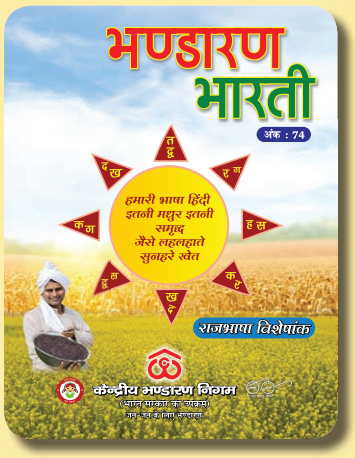

अप्रैल–सितम्बर, 2020

मुख्य संरक्षक
अरुण कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक

संरक्षक
राकेश कुमार सिन्हा
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
सोमनाथ आचार्य
महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे

संपादन सहयोग
विजयपाल सिंह, शशि बाला, वरुण भारद्वाज

केंद्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली–110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रकः शरद एडवरटाइज़िंग प्रा. लि.
184, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली

भण्डारण भारती

छमाही पत्रिका **राजभाषा विशेषांक** **अंक–74**

विषय			पृष्ठ संख्या
•	संदेश		3–12
•	प्रबंध निदेशक की कलम से.....		13
•	निदेशक (कार्मिक) की ओर से.....		14
•	प्रस्तावना		15
•	संपादकीय		16
आलेख			
✦	संगठन की गृह–पत्रिकाओं का उद्देश्य, स्वरूप...	– महिमानन्द भट्ट	17
✦	वेअरहाउसिंग और लॉजिस्टिक में तकनीक...	– सैम्युएल प्रवीण कुमार	20
✦	भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा	– के.पी. सत्यानंदन	24
✦	राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में पांच वर्षों...	– वरुण भारद्वाज	27
✦	कहानी कंटेनर की	– रोहित उपाध्याय	33
✦	भारत में कृषि के विकास में हिन्दी का योगदान	– राशिद परवेज	38
✦	हिंदी फोनेटिक की–बोर्ड पर कार्य कैसे करें?	– नम्रता बजाज	49
कहानी			
➢	वो ग्यारह मिनट	– रेखा दुबे	51
अधीनस्थ वेअरहाउस–एक परिचय			
✸	निगम के अधीनस्थ वेअरहाउस–एक परिचय		70
कविताएं			
➲	कोरोना का कालचक्र...	– इंदु रानी	19
➲	स्वाहा	– विनीत निगम	23
➲	वक्त	– प्रीति पटवाल	23
➲	मुझको "मैं" ने बहुत छला है	– निर्भय नारायण गुप्त	41
➲	पेड़–पौधों की जुबानी	– बलवंत रंगीला	46
➲	पैगाम अमन का	– पियाल चक्रवर्ती	58
➲	भूल न जाना	– आर. एन. गौतम	62
➲	भंडारगृह	– हरि मोहन	69
साहित्यिकी			
☙	मैं जिन्दा रहूँगा	– विष्णु प्रभाकर	63
विविध			
❍	प्लास्टिक का उपयोगः पर्वतीय विरासत के लिए...	– डॉ0 राजेश कपूर	30
❍	माँ की ममता	– डॉ0 विपुल जैन	40
❍	यथार्थवादी कविः...	– डॉ0 मीना राजपूत	42
❍	जन–जन से यह कहना है, वृक्ष धरा का गहना...	– प्रशांत कृष्णकुमार तायडे	47
❍	चिट्ठी–पत्री	– मीनाक्षी गंभीर	55
❍	भारतीय सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में...	– सच्चिदानंद राय	59
❍	संघर्ष और चुनौतियाँ	– विनोद जैन	74
❍	तनाव रहित जीवन–सुखमय जीवन	– शशि बाला	75
अन्य गतिविधियाँ			
★	सचित्र गतिविधियाँ		76

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण–अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भण्डारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भण्डारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थानों एवं गैर–बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन जैसे क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज कराना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।

अमित शाह
AMIT SHAH

सत्यमेव जयते

गृह मंत्री
भारत
HOME MINISTER
INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि **केन्द्रीय भंडारण निगम** विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी अपनी गृह पत्रिका **"भंडारण भारती-राजभाषा विशेषांक"** का प्रकाशन कर रहा है।

अपने कार्य क्षेत्र में तत्पर रहते हुए निगम दैनिक शासकीय कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए कृत संकल्प है। निगम के विभिन्न कार्यकलापों तथा गतिविधियों को जन-सामान्य तक पहुँचाने एवं उनकी लेखन प्रतिभा को उजागर करना ही इस पत्रिका का उद्देश्य है, जिसमें मुख्यत: वैज्ञानिक भंडारण, राजभाषा हिन्दी सहित अन्य संगत विषयों पर भी लेख प्रकाशित किए जाते हैं।

निगम किसानों को उनके कृषि उत्पादों को सुरक्षित रखने के बारे में भंडारण की वैज्ञानिक जानकारी भी उपलब्ध करा रहा है। उत्पादक और उपभोक्ता के बीच मजबूत कड़ी के रूप में कार्य कर रहा है। निगम अपने निर्धारित कार्य-उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए व्यवसायिक गतिविधियों को भली-भांति सम्पन्न कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

हिन्दी जनमानस की भाषा है और यह हमारे धर्म, दर्शन एवं आध्यात्म को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। यही कारण है कि आज के आर्थिक उदारीकरण तथा वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी का महत्व समय के साथ बढ़ता जा रहा है और इसने अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली है। आज विभिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हिन्दी भाषा को व्यापार की मुख्य भाषा के रूप में प्रयोग कर रही हैं।

मैं, **"भंडारण भारती-राजभाषा विशेषांक"** के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद सहित !

(अमित शाह)

Office : Ministry of Home Affairs, North Block, New Delhi-110001
Tel. : 23092462, 23094686, Fax : 23094221
E-mail : hm@nic.in

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
Ramesh Pokhriyal 'Nishank'

सत्यमेव जयते

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि केन्द्रीय भण्डारण निगम अपनी गृह-पत्रिका "भंडारण भारती" के 'राजभाषा विशेषांक' को प्रकाशित करने जा रहा है। निगम द्वारा अपनी गतिविधियों एवं कार्यकलापों को जन-सामान्य तक पहुंचाने तथा अपने विभागीय कर्मचारियों की लेखकीय प्रतिभा के उन्नयन हेतु विगत कई वर्षों से राजभाषा हिंदी सहित विभिन्न प्रासंगिक विषयों पर पत्रिका के विशेषांकों का प्रकाशन करना सराहनीय कार्य है।

भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका होती है। कोई भी देश अपनी भाषा के बिना अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व को मौलिक रूप से परिभाषित नहीं कर सकता है। राष्ट्र की शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में उस राष्ट्र की भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान में अन्य बातों के साथ-साथ प्रावधान किया है कि संघ हिंदी भाषा का विकास करे और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए संस्कृत एवं अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे। संविधान द्वारा प्रदत्त इस दायित्व का निर्वहन करना प्रत्येक व्यक्ति एवं संस्था के लिए अपरिहार्य है। राष्ट्रीय जीवन में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है। आज सरकारी कामकाज सहित प्रत्येक स्तर पर हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करके इसे और मज़बूती प्रदान करने की आवश्यकता है।

मुझे प्रसन्नता है कि केन्द्रीय भण्डारण निगम अपनी वाणिज्यिक गतिविधियों के साथ-साथ राजभाषा विशेषांक के प्रकाशन का भी गरिमामय उपक्रम कर रहा है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में निगम अपनी कार्यप्रणाली में राजभाषा को उत्तरोत्तर गति प्रदान कर एक नई मिसाल कायम करेगा।

मैं इस विशेषांक के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 115
Phone : 91-11-23782387, 23782698, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.hrd@gov.in

राम विलास पासवान
RAM VILAS PASWAN

सत्यमेव जयते

उपभोक्ता मामले,
खाद्य और सार्वजनिक वितरण
मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली - 110 001
MINISTER
FOR CONSUMER AFFAIRS,
FOOD & PUBLIC DISTRIBUTION
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI-110 001

संदेश

यह अत्यंत गौरव एवं प्रसन्नता का विषय है कि केन्द्रीय भंडारण निगम अपनी भंडारण गतिविधियों को जन-सामान्य तक पहुँचाने एवं लेखन क्षमता को उजागर करने के उद्देश्य से गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी **''भंडारण भारती राजभाषा विशेषांक''** का प्रकाशन कर रहा है।

केन्द्रीय भंडारण निगम देश के असंख्य किसानों को उनके कृषि उत्पादों को सुरक्षित रखने के बारे में वैज्ञानिक भंडारण की तकनीक पर जानकारी देकर देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। अपने प्रमुख व्यवसाय को निरंतर बढ़ाते हुए यह निगम सरकार की राजभाषा नीति एवं नियमों के अनुपालन की दिशा में भी सदैव प्रयासरत रहा है।

देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए हिंदी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है इसलिए इस भाषा का सम्मान करना हम सबका दायित्व है। समय की आवश्यकता है कि निगम के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य कर अपना भरपूर योगदान दें ताकि हम सरकारी अपेक्षाओं के अनुकूल अपने उद्देश्यों में पूर्ण रूप से सफल हो सकें।

मुझे विश्वास है कि निगम राजभाषा के क्षेत्र में अपना अग्रणी स्थान बनाए रखने में सफल रहेगा और पत्रिका प्रकाशन जैसे रचनात्मक कार्यों को भी निरंतर आगे बढ़ाता रहेगा।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन कार्य में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े कार्मिकों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(राम विलास पासवान)
7/8/20

Office : Room No. 179, Krishi Bhawan, New Delhi-110 001. ☎011-23070637, 23070642, Fax : 011-23386098.
Resi. : 12, Janpath, New Delhi - 110001. ☎011-23015249, 23017684

रावसाहेब पाटील दानवे
RAOSAHEB PATIL DANVE

सत्यमेव जयते

उपभोक्ता मामले,
खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण
राज्य मंत्री
कृषि भवन, नई दिल्ली–110001

MINISTER OF STATE
FOR CONSUMER AFFAIRS,
FOOD & PUBLIC DISTRIBUTION
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI -110001

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा **'भंडारण भारती'** के राजभाषा विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए खाद्यानों का रखरखाव तथा वैज्ञानिक भंडारण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है क्योंकि यह कृषि, व्यापार और उद्योग के विकास से जुड़ी हुई होती है। देश की अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हुए निगम वैज्ञानिक भंडारण के साथ-साथ किसानों के शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रमों से भी जुड़ा हुआ है, जिसकी आज नितांत आवश्यकता है।

राजभाषा हिन्दी, भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति तथा भावनात्मक एकता को मजबूत करने का सबल माध्यम है। अतः हिंदी के प्रति एक सकारात्मक सोच के निर्माण करने की आवश्यकता है। निगम, राजभाषा के काम-काज को आगे बढ़ाने की दिशा में प्रेरणादायक कार्य कर रहा है। निश्चित रूप से पत्रिका प्रकाशन जैसे महत्वपूर्ण कार्यों से राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बल मिलता है और इसके विकास कार्यों का सशक्त मार्ग प्रदर्शित होता है।

आशा है यह पत्रिका राजभाषा के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी और इससे हिंदी के प्रति अभिरूचि विकसित होगी। इसके सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

(रावसाहेब पाटील दानवे)

जागो ग्राहक जागो

Office : Room No. 173, Krishi Bhawan, New Delhi - 110001 Tel. : 011-23380630/31 Fax : 011-23380632
Residence : 2, Safdarjung Lane, New Delhi - 110029 Tel. : 011-23016895/96

डॉ सुमीत जैरथ, आई.ए.एस.
सचिव
Dr. SUMEET JERATH, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

संदेश

अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि केन्द्रीय भण्डारण निगम अपनी गृह पत्रिका "भंडारण भारती" का ' राजभाषा विशेषांक ' प्रकाशित करने जा रहा है|

2 **14 सितंबर, 2020- हिंदी दिवस के पावन अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं** !

3 स्वतंत्रता के बाद, 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था| अत: हर वर्ष 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है| संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है| संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके| राजभाषा संकल्प, 1968 के अनुसार हमें राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु और अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार करना है|

4 राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिन्दु बनवाएं और उपाय करें| **राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित होने के कारण**

तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन, जय सिंह रोड, नई दिल्ली 110001
फोन : (91) (11) 23438266, फैक्स : (91) (11) 23438267, ई-मेल : secy-ol@nic.in

-2-

आपसे यह अनुरोध है कि एक उत्साहवर्धक वातावरण सृजित कर सभी अधीनस्थ अधिकारियों को मूल कार्य हिंदी के करने के लिए प्रेरित करें|

5 **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था- " राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है| "** यह सर्वविदित है कि राष्ट्र निर्माण में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है| आज हिंदी का महत्व जनभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा और वैश्विक भाषा के रूप में बढ़ रहा है|

6 हिंदी एक वैज्ञानिक, व्यापक, समृद्ध, सशक्त और जीवंत भाषा है| राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय राजभाषा हिंदी के सरलीकरण और लोकप्रियता बढ़ाने की दिशा में दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है| **अतः मैं आप सभी को आह्वान करता हूं कि अपने प्रेरणादायक नेतृत्व और कुशल मार्गदर्शन में आप सरकारी काम-काज में राजभाषा हिंदी का अधिकतम प्रयोग करते हुए अपने संवैधानिक और सांविधिक उत्तरदायित्वों का पूर्णतः निर्वाह करें|**

जय हिन्द !

सुमीत जैरथ 24/08/2020
(डॉ. सुमीत जैरथ)

सुधांशु पाण्डेय
सचिव
SUDHANSHU PANDEY
SECRETARY

भारत सरकार
खाद्य एंव सार्वजनिक वितरण विभाग
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय
कृषि भवन, नई दिल्ली - 110 001
Government of India
Department of Food & Public Distribution
Ministry of Consumer Affairs
Food & Public Distribution
New Delhi-110 001
Tel.: 011-23382349, Fax : 011-23386052
E-mail : secy-food@nic.in

संदेश

केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा **"भंडारण भारती"** पत्रिका का **'राजभाषा विशेषांक'** प्रकाशित करना अत्यंत खुशी की बात है।

निगम गत कई वर्षों से देश में खाद्यान्नों के वैज्ञानिक भंडारण और उनकी सुरक्षा व्यवस्था तथा आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। भंडारण के क्षेत्र में निरंतर कार्य करते हुए यह निगम किसानों, व्यापारियों आदि के लाभ के लिए पेस्ट नियंत्रण सेवाएं भी प्रदान कर रहा है। इसके अतिरिक्त, निगम के कोरोना योद्धाओं ने कोविड-19 के दौरान अखिल भारतीय स्तर पर 200 से अधिक सरकारी एवं निजी कंपनियों में कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए विसंक्रमण एवं सैनेटाइजेशन सेवाएं प्रदान की है।

जैसा कि विदित है कि खाद्यान्नों का वितरण एक आवश्यक गतिविधि है और प्रसन्नता का विषय है कि इस दौर में भी खाद्यान्नों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए निगम के सभी वेअरहाउसों में सफलतापूर्वक कार्य किया गया और कुछ केन्द्रों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा रेलवे रैक हैंडलिंग का कार्य भी किया गया। इसके साथ-साथ प्रचालन शुरू होने से पूर्व रेलवे रैक एवं ट्रकों सहित गोदामों के विसंक्रमण सहित वेअरहाउसों एवं रैक हैंडलिंग से जुड़े श्रमिकों को कोरोना वायरस से बचाव हेतु सुरक्षात्मक उपकरण भी प्रदान किए गए।

निगम वैज्ञानिक एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध कराने सहित राजभाषा नीति एवं नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने का कार्य भी कर रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय की उपलब्धियों एवं कार्यशैली की जानकारी मिलती है तथा इससे राजभाषा हिंदी के प्रवाह को नई गति और दिशा भी मिलती है। निश्चित रूप से इन प्रयासों द्वारा निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी लाभान्वित होंगे तथा राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रेरित भी होंगे।

मुझे विश्वास है कि निगम अपने कार्यक्षेत्र में जनभाषा तथा राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने की ओर सदैव अग्रणी रहेगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित सुधांशु पाण्डेय

(सुधांशु पाण्डेय)

अरविंद सिंह, आई.ए.एस
ARVIND SINGH, IAS
अध्यक्ष
Chairman
दूरभाष / Phone : 011-24632930
24622796
फैक्स / Fax : 011-24641088
ई–मेल / E-mail : chairman@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गाँधी भवन
Rajiv Gandhi Bhawan
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003.
Safdarjung Airport, New Delhi-110003.

संदेश

यह बड़े हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा निरंतर गृह पत्रिका "भंडारण भारती" का "राजभाषा विशेषांक" प्रकाशित किया जा रहा है । राजभाषा के प्रचार-प्रसार कि दिशा में यह अत्यंत सराहनीय कदम है ।

केन्द्रीय भंडारण निगम भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है जो कृषि उत्पादों और अन्य अधिसूचित वस्तुओं के लिए "वैज्ञानिक भंडारण" की सुविधाएं उपलब्ध कराने में सदैव अग्रणी रहा है । इसके अतिरिक्त, केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा आयात-निर्यात कार्गो के लिए कंटेनर फ्रेट स्टेशनों / अन्तर्देशीय कंटेनर डिपों, आईसीपी तथा एअर कार्गो कॉम्प्लेक्स जैसी आधारभूत लाजिस्टिक्स सुविधाएं प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई जाती है ।

वर्तमान में केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के अंतर्गत आने वाले अमृतसर और गोवा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों पर एयरकार्गो कॉम्प्लेक्सों का संचालन किया जा रहा है और मुझे पूरा विश्वास है कि निकट भविष्य में भी केन्द्रीय भंडारण निगम के विस्तार में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण का योगदान रहेगा ।

निगम जहां एक ओर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है, वहीं दूसरी और राजभाषा के प्रति अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रहा है । यह अत्यंत सराहनीय है । गृह पत्रिका का प्रकाशन भी इस दिशा में एक कड़ी के रूप में कार्य करता है क्योंकि पत्रिका में निगम की गतिविधियों के अलावा राजभाषा में लेख, कविताएं, रचनाएं आदि भी प्रकाशित की जाती हैं । इन रचनाओं से कार्मिकों की राजभाषा हिन्दी के प्रति लगन उत्साह एवं प्रतिभा का परिचय मिलता है ।

मैं, पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं ।

अ. सिं.

(अरविंद सिंह)

प्रोफेसर अवनीश कुमार
अध्यक्ष

Professor Avanish Kumar
Chairman

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
Government of India
Commission for Scientific & Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
Department of Higher Education

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय हे कि केंद्रीय भंडारण निगम कई वर्षों से गृह पत्रिका **'भंडारण भारती' का 'राजभाषा** विशेषांक प्रकाशित करने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ ।

केंद्रीय भंडारण निगम देश की अर्थव्यवस्था में उत्पादक और उपभोक्ताओं के बीच मजबूत कडी के रूप में कार्य कर रहा है उल्लेखनीय योगदान है । निगम वैज्ञानिक भंडारण के माध्यम से तकनीक की जानकारी असंख्य किसानों को उनके कृषि उत्पादों को सुरक्षित रखने के बारे में उपलब्ध करवाने में अहम भूमिका निभा रहा है, सराहनीय कार्य है ।

केंद्रीय भंडारण निगम अपने उद्देश्यों को पूरा करते हुए अपनी व्यापरिक गतिविधियों के साथ-साथ कार्यालय दैनिक कार्यों में राजभाषा नीति के अनुकूल राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढाने की दिशा में निरंतर प्रगतिशील है, अतुलनीय है ।

कोरोना संक्रमण काल में कोरोना बचाव के सभी उपायों का पालन करते हुए निगम सभी गतिविधियों को जारी रखे हैं ।

आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार केंद्रीय भंडारण निगम राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढाने की दिशा में निरंतर कार्य करता रहेगा । निगम के सभी साथियों एवं परिजनों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ ।

17/08/2020
अवनीश कुमार

पश्चिमी खण्ड-7, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110066 | West Block 7, R.K. Puram, New Delhi-110066
☎ : 011-26165100, 26102882 📠: 011-26101220 | E-mail : chairman-cstt@gov.in, dravanishkumar@gmail.com

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
Central Warehousing Corporation
(A Government of India Undertaking)
जन–जन के लिए भण्डारण / Warehousing for Everyone

BUREAU VERITAS Certification

डी.वी. प्रसाद
अध्यक्ष

संदेश

मुझे यह प्रसन्नता है कि केन्द्रीय भंडारण निगम देश भर में वैज्ञानिक भंडारण के क्षेत्र में कार्य करते हुए किसानों के हितों के साथ–साथ दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। इस दिशा में **भंडारण भारती 'राजभाषा विशेषांक'** का प्रकाशन किया जाना एक सराहनीय एवं महत्वपूर्ण कदम है।

केन्द्रीय भंडारण निगम एक सेवा संगठन के रूप में देश में खाद्यान्नों का सुरक्षित भंडारण एवं उत्कृष्ट लॉजिस्टिक सेवा प्रदान कर रहा है। इसके अलावा, कृषक समुदाय को वैज्ञानिक भंडारण की तकनीक में प्रशिक्षित करने के साथ–साथ दैनिक शासकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने प्रयासों के प्रति पूर्णतया प्रतिबद्ध है।

मैं आशा करता हूँ कि निगम अपनी मुख्य व्यावसायिक गतिविधियों को निरंतर आगे बढ़ाते हुए सरकारी नीति एवं नियमों के तहत राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और हिंदीमय वातावरण के निर्माण में सदैव प्रयासरत रहेगा।

भंडारण भारती पत्रिका के **'राजभाषा विशेषांक'** के सफल एवं उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

डी.वी. प्रसाद
(डी.वी. प्रसाद)

4 / 1, सीरी इन्स्टीच्यूशनल एरिया, अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास, नई दिल्ली–110016, 4/1, Siri Institutional Area, August Kranti Marg, Hauz Khas, New Delhi-110 016
दूरभाष / Tel: कार्यालय / Off.: 91-11-26515980, फैक्स / Fax: 91-11-26962411 ई–मेल / E-mail : chrmn@cewacor.nic.in, website : www.cewacor.nic.in

प्रबंध निदेशक की कलम से.....

निगम के लिए यह गौरव की बात है कि गत कई वर्षो से **''भंडारण भारती पत्रिका''** निरंतर प्रकाशित हो रही है। ''भंडारण विशेषांक'' के बाद अब इस पत्रिका का **''राजभाषा विशेषांक''** प्रकाशित किया जा रहा है। जैसा कि आप सभी जानते हैं किसी भी कॉरपोरेट क्षेत्र की गतिविधियों एवं कार्यकलापों को जानने के लिए एक मंच होना चाहिए जिसके माध्यम से हम उस क्षेत्र विशेष के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं। यह पत्रिका विचारों के आदान–प्रदान के साथ वैज्ञानिक भंडारण को प्रोत्साहित करने और किसानों के बीच संपर्क स्थापित करने में एक सेतु का कार्य कर रही है।

आज के दौर में कोरोना वायरस कोविड–19 का प्रकोप होने से हम सभी इस महामारी के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं। हमारे निगम ने अपनी कर्तव्यनिष्ठा में आगे बढ़कर इस महामारी का मुकाबला करने के लिए समूचे देश में आवश्यक सेवाओं की महत्वपूर्ण सप्लाई चेन, विशेष रूप से सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा अन्य वस्तुओं की सप्लाई सुचारू रूप से सुनिश्चित की है। राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के दौरान भी खाद्यान्नों की सहज प्राप्ति एवं प्रेषण के लिए परीक्षा की इस घड़ी में अथक रूप से कार्य कर निगम ने अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया है और सरकार की योजनाओं के तहत जरूरतमंद लोगों के लिए विभिन्न वेअरहाउसों तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली तक पहुँचाया है। निगम ने रैक हैंडलिंग प्रचालनों में शामिल विशाल वर्कफोर्स के लिए रक्षात्मक उपकरण एवं सैनीटाइजर भी उपलब्ध कराए हैं। यह निगम गुणवत्तायुक्त खाद्यान्नों का वितरण सुरक्षित एवं समयबद्ध रूप से सुनिश्चित करते हुए देश की सेवा के लिए पूर्णतया प्रतिबद्ध है। इसके अतिरिक्त, कोविड–19 की विषम परिस्थितियों में देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देते हुए निगम के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपना एक दिन का वेतन भी प्रधानमंत्री केयर्स फंड में दिया है।

निगम ने लक्ष्यों के अनुरूप व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ाते हुए राजभाषा के क्षेत्र में भी अपने कार्यों को निरंतर जारी रखा। राजभाषा कार्यान्वयन सुचारु रूप से सुनिश्चित हो सके, इस उद्देश्य से जून माह में हिंदी कार्यशाला तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक ऑनलाइन आयोजित की गई और इसी अवधि में ''**भंडारण भारती** भंडारण विशेषांक'' का भी सफलतापूर्वक प्रकाशन किया गया। निगमित कार्यालय द्वारा जुलाई माह में अखिल भारतीय स्तर पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाना स्वागत योग्य कदम है। निश्चित रूप से इस प्रकार के कार्यक्रमों से अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है।

आइए, हम सब निगम के उज्ज्वल भविष्य के लिए नए जोश, सत्यनिष्ठा एवं कर्मठता से अपनी सभी गतिविधियों में नए कीर्तिमान स्थापित कर निरंतर आगे बढ़ें। इस प्रक्रिया को गति देने के लिए निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को एकजुटता का परिचय देते हुए नई संकल्पना के साथ कार्य कर भंडारण भारती पत्रिका के लिए भी अपना योगदान देना चाहिए क्योंकि यह पत्रिका वैज्ञानिक भंडारण को प्रोत्साहित करने के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य कर रही है। मैं पत्रिका प्रकाशन जैसे महत्वपूर्ण कार्य के लिए राजभाषा अनुभाग की सराहना करते हुए उनकी सफलता की कामना करता हूं।

(अरुण कुमार श्रीवास्तव)
प्रबंध निदेशक

निदेशक (कार्मिक) की ओर से.....

मुझे इस बात की खुशी है कि भंडारण भारती पत्रिका का **"राजभाषा विशेषांक"** प्रकाशित किया जा रहा है। सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए पत्र–पत्रिकाओं का विशेष महत्त्व होता है। निश्चित रूप से इन पत्रिकाओं में विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यकलापों की एक स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। निगम की प्रत्येक पत्रिका में संकलित सामग्री न केवल ज्ञानवर्धक बल्कि सूचनापरक और रुचिकर भी होती है।

मानव जीवन में भाषा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भारत जैसे विशाल देश में अनेक भाषा–भाषियों के मध्य संपर्क स्थापित करने के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की गई जो आपस में जोड़ने का कार्य करे। निःसंदेह हिंदी अपना यह दायित्व पूरा करने में सफल रही है। आज न केवल देश बल्कि विदेशों में भी हिंदी का खूब बोलबाला है। समय की आवश्यकता है कि इस भाषा की महत्ता और इसकी बाहुलता को देखते हुए हम सभी अपने दैनिक कार्यो के साथ–साथ सरकारी कामकाज में इसका यथासंभव प्रयोग करें।

निगम में राजभाषा संबंधी विभिन्न कार्यों को समय–समय पर नया अंजाम देने के लिए राजभाषा अनुभाग सदैव तत्पर है। सरकारी नियमों का समुचित अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए समय–समय पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना सकारात्मक कदम है। मैं आशा करता हूँ कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा अनुभाग का सहयोग लेते हुए अपने कार्यों में राजभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग कर सभी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास जारी रखेंगे।

इस पत्रिका के माध्यम से मेरा निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह है कि वे अपने अनुभव एवं कार्यक्षेत्र के अनुसार पत्रिका के लिए भी अपना भरपूर योगदान दें ताकि इसमें अनेक विषयों को समाहित किया जा सके और यह पत्रिका अपना गौरवशाली स्थान बनाए रखने में सक्षम हो सके।

शुभकामनाओं सहित,

राकेश

(राकेश कुमार सिन्हा)
निदेशक (कार्मिक)

प्रस्तावना

राजभाषा हिंदी के प्रसार तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के कार्य को प्रोत्साहित करने एवं लेखन के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से पत्रिकाओं के प्रकाशन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कार्यालय की विभिन्न वाणिज्यिक एवं अन्य गतिविधियों को सरल, सहज तथा सुस्पष्ट रूप से पत्रिका में संजोकर प्रस्तुत करना एक कला है।

हाल ही में निगम की पत्रिका **"भंडारण भारती"** का **"भंडारण विशेषांक"** प्रकाशित किया गया। पत्रिका का अवलोकन करने पर यह देखा गया कि इसमें प्रकाशित की गई सामग्री जैसे ई–ऑफिस में काम, सूचना तकनीक, डिजिटलीकरण की दिशा में निगम के बढ़ते कदम, मानव संसाधन विकास, भारतीय संस्कृति, वेअरहाउसों का परिचय, राजभाषा के प्रयोग में सरलता और व्यावहारिकता आदि विषय आज के संदर्भ में बहुत उपयोगी एवं सटीक हैं। इसके अलावा सचित्र गतिविधियों के साथ पत्रिका को भली–भांति संजोया गया है। मैं समझता हूं कि पत्रिका में प्रकाशित इस सामग्री को पढ़कर सभी को आपस में जानकारी भी शेयर करनी चाहिए।

आप सभी जानते हैं कि हिंदी एक संपर्क भाषा है और देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया है। अतः राजभाषा को सम्मान देते हुए हम सभी को दैनिक व्यवहार के साथ–साथ सरकारी कामकाज में इसका प्रयोग अति सहज और सरल ढंग से करना चाहिए।

जहाँ तक निगम में राजभाषा कार्यान्वयन का प्रश्न है। इस संबंध में यह उल्लेख करना चाहूँगा कि राजभाषा नीति संबंधी सभी पहलुओं का सुचारु कार्यान्वयन करना एक टीम वर्क है। राजभाषा विभाग, मंत्रालय तथा अन्य समितियों के मार्गदर्शन से निगम का राजभाषा अनुभाग अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ रहा है जिसके परिणामस्वरूप निगम को समय–समय पर राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। निगम में राजभाषा संबंधी सभी नियमों का मिलकर मजबूती से पालन करने पर हम और भी बेहतर परिणाम देने में सक्षम हो सकते हैं।

राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। अन्य सरकारी आदेशों एवं अनुदेशों की तरह राजभाषा नीति का अनुपालन करना भी हमारा दायित्व है। अतः हमें सामूहिक एवं सतत् प्रयासों से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

(सोमनाथ आचार्य)
महाप्रबंधक (कार्मिक)

संपादकीय

भंडारण भारती पत्रिका का यह अंक **राजभाषा विशेषांक** के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। जैसा कि विदित है हिंदी संपर्क भाषा की भूमिका निभाते हुए विशाल जनसमूह को आपस में जोड़ते हुए एकता के एक सूत्र में बांधती है और पारस्परिक संप्रेषण का माध्यम बनी हुई है। हिंदी की लोकप्रियता को देखते हुए भारतीय संविधान सभा ने इसे संघ की राजभाषा का दर्जा दिया। आज सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र में भी साथ में कदमताल मिलाते हुए हिंदी ने स्वयं को स्थापित किया है और इन सभी सुविधाओं के कारण आज इस भाषा में काम करना अत्यंत सरल हो गया है। अब आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि राजभाषा में काम करने के लिए इच्छाशक्ति एवं दृढ़ संकल्प मजबूत होना चाहिए।

विभिन्न विषयों पर हिंदी भाषा में लेखन को बढ़ाने के लिए **विभागीय पत्रिकाओं** का योगदान होता है। इससे संगठन में कार्य कर रहे कार्मिकों की लेखन क्षमता में निखार आता है और उनका लेखन के प्रति आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इस पत्रिका के पिछले अंकों में भी कार्मिकों ने अपने लेखों के माध्यम से इस पत्रिका को एक नया रूप दिया था और इस अंक में भी कृषि के विकास में हिंदी का योगदान, संगठन की गृह पत्रिकाओं का उद्देश्य एवं स्वरूप, भारतीय संस्कृति और सभ्यता, कहानी, कविताओं एवं निगम की विभिन्न सचित्र गतिविधियों को प्रकाशित कर इस अंक को रोचक एवं पठनीय बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है।

आशा है कि **भंडारण भारती** पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति अपना स्तर एवं गुणवत्ता बनाए रखने में सक्षम रहेगा। किसी भी कार्य का मूल्यांकन उसके प्रयोगकर्ताओं पर निर्भर करता है। हमें विश्वास है कि इस पत्रिका के पाठक अपने बहुमूल्य विचारों एवं सुझावों से हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे जिससे भविष्य में भी इस पत्रिका के माध्यम से हम और भी बेहतर परिणाम दे सकेंगे।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

संगठन की गृह-पत्रिकाओं का उद्देश्य, स्वरूप, क्षेत्र एवं दायित्व

महिमानन्द भट्ट*

सूचना क्रान्ति के युग में गृह–पत्रिकाओं के प्रकाशन को पत्रकारिता का एक लघु रूप कहा जा सकता है। किसी कंपनी या संगठन के कार्यकलाप को विस्तार देने, कम्पनी और कर्मचारियों के बीच सद्भावना पैदा करने, कर्मचारियों का हौसला बढ़ाने, संगठन की गतिविधियों से अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों का ज्ञानवर्धन करना तथा उनके बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाने में गृह–पत्रिकाओं की अहम् भूमिका है। तेजी से बदलते समय के इस दौर में गृह–पत्रिकाओं (हाऊस जर्नल्स) का प्रकाशन व प्रसार बड़े–बड़े औद्योगिक निगमों, कम्पनियों और कारखानों के हजारों, लाखों, कर्मचारियों एवं ग्राहकों के बीच आपसी सम्प्रेषण की आवश्यकता की पूर्ति के लिए सशक्त माध्यम है।

गृह–पत्रिका (हाऊस जर्नल्स) किसी कंपनी या संगठन का वह प्रकाशन है जो कंपनी के भीतर व बाहरी दोनों के लिए संचार माध्यम के रुप में नियमित रूप से प्रकाशित होता है तथा कंपनी की गतिविधियों की जानकारी अपने पाठकों को देता है अर्थात् गृह–पत्रिकाओं के प्रकाशन की रूपरेखा को चार भागों में बांटा जा सकता है। 1. सूचना देना, 2. सौहार्द पैदा करना, 3. समन्वय, 4. संप्रेषण। इन पत्रिकाओं को सूचनात्मक, निर्देशात्मक, सम्बधात्मक की श्रेणी में भी रखा जा सकता है। सूचनात्मक के रूप में कंपनी की नीति व कार्य का प्रसार जनसंपर्क बनाए रखने की भावना से किया जाता है। निर्देशात्मक के अंतर्गत अपने ग्राहकों के बीच व्यापारिक सूचनाओं का संप्रेषण तथा सम्बधात्मक का संबंध कर्मचारियों के हित से संबंधित होता है।

गृह–पत्रिका किसी संस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली वह पत्रिका होती है जिसका प्रकाशन लाभ की दृष्टि से नहीं किया जाता। ये पत्रिकाएं निजी उपयोग के लिए होती है तथा ये अपने संस्थान की विभिन्न गतिविधियों को अपने कर्मचारियों, ग्राहकों एवं पाठकों तक संदेश पहुंचाने का काम भी करती हैं।

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सामान्यतः गृह–पत्रिकाओं के प्रकाशन के निम्न उद्देश्य होते हैं।

- माल व सेवाओं की बिक्री।
- पाठकों को कंपनी की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देना।
- कंपनी के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के बीच सद्भावना पैदा करना।
- कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- कंपनी के हित के अनुकूल जनमत तैयार करना।
- कंपनी के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को उजागर करना एवं उनका ज्ञानवर्धन करना।
- प्रबंधन की नीतियों एवं उनके दृष्टिकोण से अवगत करना।

संगठन की गृह–पत्रिकाओं में अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्यक्षेत्र संबंधी लेख अधिकाधिक मात्रा में शामिल किए जाते हैं तथा संगठन के कार्य संबंधी शब्दावली से उन्हें परिचित भी कराया जाता है। इसके अतिरिक्त, इन पत्रिकाओं में अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यिक लेख भी प्रकाशित किए जाते हैं, जिससे पत्रिकाओं का महत्व और भी बढ़ जाता है।

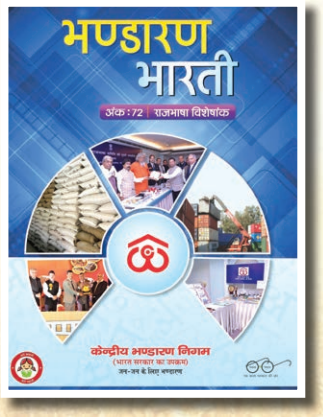

औद्योगिकीकरण की गति में तेजी के कारण गृह–पत्रिकाओं की संख्या में वृद्धि हुई है और इसका प्रसार भी बढ़ा है। बढ़ते औद्योगिक विकास, कार्यालयों एवं कर्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए संचार माध्यम के रूप में गृह–पत्रिकाओं का प्रकाशन

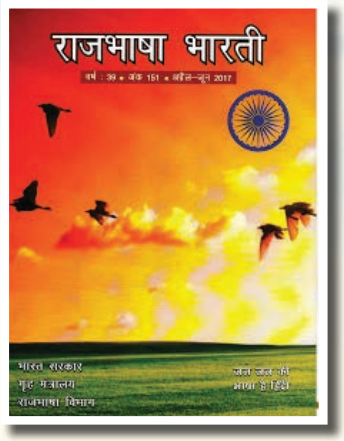

समय की मांग है। आज विभिन्न मंत्रालयों अर्थात् रेल मंत्रालय की 'रेल राजभाषा', राजभाषा विभाग की 'राजभाषा भारती', स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की 'हमारा घर', खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की 'खाद्य भारती' आदि पत्रिकाएँ बहु–उपयोगी सामग्री के साथ प्रकाशित हो रही है। इसके अलावा, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में भी कई उत्कृष्ट स्तर की पत्रिकाएं देखने को मिलती हैं। एअर इंडिया की 'विमानिका', केंद्रीय भंडारण निगम की 'भंडारण भारती', सेल की 'इस्पात भाषा भारती', टीसीआईएल की 'हमारा टीसीआईएल', एनटीपीसी की 'विद्युत स्वर' वाप्कोस लिमिटेड की 'वाप्कोस दर्पण', कोल इंडिया लि. की 'खनन भारती', पावर ग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि. की 'ग्रिड दर्पण', बीएचईएल की 'अरुणिमा' तथा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की 'अर्पण', इंडिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइजेशन की 'उद्योग व्यापार पत्रिका' आदि पत्रिकाओं की गणना श्रेष्ठ प्रकाशनों में की जाती है। इसके अलावा, राष्ट्रीयकृत बैंकों में से भारतीय स्टेट बैंक की 'हिंदी ज्ञानवेणी' सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की 'सेन्ट्रलाइट' तथा अन्य मंत्रालयों एवं उपक्रमों की गृह–पत्रिकाएं भी निरंतर प्रकाशित हो रही है। इसके अतिरिक्त, डिजिटलीकरण के दौर में अब पत्रिकाएं डिजिटल/ई–पत्रिका के रुप में भी प्रकाशित कराई जा रही हैं। निश्चित रूप से इससे हिंदी पाठकों की संख्या में वृद्धि तो होगी ही साथ ही इंटरनेट पर हिंदी की विषय–वस्तु भी बढ़ेगी।

यह सत्य है कि गृह–पत्रिकाओं का प्रसार एक क्षेत्र विशेष तक है, इसलिए इन पत्रिकाओं की उपयोगिता से अधिक लोग परिचित नहीं हैं, किंतु वर्तमान समय जिस प्रकार का जन एवं सृजनात्मक पत्रकारिता का युग है उसमें गृह–पत्रिकाएँ काफी समय से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यदि गृह–पत्रिकाओं की ओर विशेष ध्यान दिया जाए तो ये पत्रिकाएं दूसरी सामाजिक तथा राजनीतिक पत्रिकाओं से अधिक सफल एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। औद्योगिक विकास के साथ समाज में गतिशीलता आई है और नया वर्ग समाज का प्रमुख अंग बनता जा रहा है। अतः नए सामाजिक दृष्टिकोण को देखते हुए हर वर्ग की उन्नति एवं उनके मानसिक विकास के लिए गृह–पत्रिकाएं सृजनात्मक एवं गतिशील साहित्य का निर्माण कर सकती है। सृजनात्मक एवं गतिशील साहित्य से औद्योगिकरण में नवजीवन का निर्माण होगा, जिससे श्रमिकों के विकास के साथ–साथ सृजनशीलता को भी बढ़ावा मिलेगा।

किसी कंपनी के निर्माण एवं उत्पादन में उसके श्रमिकों एवं प्रबंधकों की सराहनीय भूमिका होती है। कंपनी के कार्यकलाप संपूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। अतः गृह–पत्रिकाओं पर स्वस्थ रचनात्मक साहित्य के सृजन की अपेक्षा करना स्वाभाविक है। अन्य व्यावसायिक पत्रिकाओं की अपेक्षा गृह–पत्रिकाओं के प्रकाशन के साधन व क्षेत्र सीमित हैं जबकि इन पत्रिकाओं की अपेक्षा अधिक की जाती है। चूंकि गृह–पत्रिकाओं का प्रकाशन का खर्च व्यवस्थापक वर्ग ही उठाता है इसलिए उन्हें इन पत्रिकाओं से अधिक अपेक्षा होती है। पत्रिकाएं कंपनी के हित में खरी उतरें, इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए इन पत्रिकाओं का भविष्य चुनौती और समस्याओं से भरा हुआ है। इन पत्रिकाओं से प्रबंधन को अधिक आशाएं होती हैं, इसलिए इन पत्रिकाओं का उद्देश्य कंपनी की चौतरफा प्रगति में ही निहित है। अच्छी गृह–पत्रिकाएं संगठन की छवि बनाने, उत्पादकता में सहायक बनने और प्रबंधन तथा कर्मचारियों के बीच सेतु बनने का काम करती हैं।

कंपनी में अधिकांशत औद्योगिक अंशाति कई बार इसलिए भी होती है क्योंकि श्रमिक बाहरी तत्वों द्वारा फैलाए अनेक भ्रमों के शिकार बन जाते हैं। कई समस्याएँ ऐसी होती हैं जो प्रबंधन व श्रमिक वर्ग के मध्य संचार व्यवस्था सही न होने के कारण उत्पन्न होती हैं। अतः गृह–पत्रिकाएं प्रबंधन और श्रमिक वर्ग

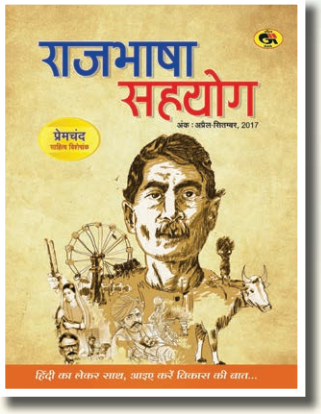

के मध्य संचार व्यवस्था बनाए रखने का सशक्त माध्यम है।

गृह पत्रिकाओं की अपनी एक निश्चित सीमा होती है। व्यावसायिक पत्रिकाओं की तरह औद्योगिक गृह–पत्रिकाओं के पास भी अपने विषय का अनुभव रखने वाले अच्छे लेखक होते हैं किंतु उनका क्षेत्र विस्तृत नहीं होता। वे अपने अनुभव और कार्य–क्षेत्र के अनुसार इन गृह–पत्रिकाओं में अपना लेख लिखते हैं। यह भी देखा गया है कि इन पत्रिकाओं में सरल भाषा में प्रबंधन, प्रशासन, लेखा एवं तकनीकी साहित्य, सामयिक लेख, यात्रा संस्मरण, कहानी, कविता, पत्रकारिता, स्वास्थ्य, हास्य–व्यंग्य आदि विषयों पर उच्चकोटि की रचना काफी मात्रा में प्रकाशित होती हैं। यह सत्य है कि इन पत्रिकाओं को अपने सीमित साधन में ही निर्वाह करना होता है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इन पत्रिकाओं का दायित्व कम है। औद्योगिक पत्रिकाओं का यह दायित्व है कि वह तकनीकी एवं विषयानुकूल दृष्टि केंद्रित करते हुए ऐसे वातावरण का निर्माण करे जिससे उद्योग को तकनीकी आधार तो मिले, साथ ही उसमें काम करने वाले श्रमिकों की योग्यता व साहित्यिक क्षमता का भी निरंतर विकास हो।

गृह–पत्रिकाओं की साज–सज्जा, आकर्षक एवं गुणवत्ता स्तरीय होनी चाहिए ताकि वह अपने पाठकों को अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें नई–नई जानकारी दें सके तथा विभिन्न गतिविधियों से भी अवगत कराए। निःसदेह श्रेष्ठ पत्रिकाएं भाषा को गौरवान्वित कर ज्ञान का प्रकाश फैला रही है और भाषा को सार्थकता प्रदान करती हुई प्रेरणादायी भूमिका अदा कर रही हैं।

कोरोना का कालचक्र- 'विपदा से बचाव तक'

इंदु रानी*

गजब ये नई विपदा है आई,
जैसे कोई आंधी, काली घटा घेर लाई,
हाथ मिलाना दूर हुआ अब,
'नमस्ते' की घर वापसी हो आई,
ना छूना, दूर ही रहना, ना छूना अब दूर ही रहना,
छः फुट की दूरी हो आई,
गजब ये नई विपदा है आई।।

रेलें, मेट्रो ठप हुई, ठप हुई सब हवाई यात्राएं,
न इनसे मिलना, ना उनसे मिलना, बंद हुई सब सभाएं,
वक्त से मजबूर, न जाने कितने मजदूर और
न जाने उनकी कितनी यातनाएं,
तिनका–तिनका बुना जो वर्षों से और सोची कितनी संभावनाएं,
बिखर गया पल भर में ही, बची तो बस कुछ संवेदनाएं।।

थी किसी के पीठ पर गठरी लदी और कांधे पर थे बच्चे लदे,
जाना था मीलों दूर तक और जाने कितनी थी कठिनाई,
गजब ये नई विपदा है आई।।

पर अब धीरे–धीरे जिंदगी पटरी पर है लौट रही,
मास्क, सैनिटाइजर, 'दो गज की दूरी' ही सही,
'इलाज से परहेज ही अच्छा', सही ये बिल्कुल बात कही,
सहज सही पर सजग रहो, डरने की कोई बात नहीं।।

माना गजब विपदा है आई,
पर अब लड़ने की बारी है आई,
हाय–बाय सब दूर कर 'इम्यूनिटी' बढ़ाने की बारी है आई,
डरो नहीं बस डटे रहो सबके लिए मंत्र ये लाई।।

इससे लड़ने का जज्बा जब ये जागेगा,
अंधेरे का सीना चीर फिर नया सवेरा जागेगा,
वक्त कितना भी मुश्किल हो चाहे ये 'डर' निकल भागेगा,
देखना एक दिन ये 'कोरोना' भी भागेगा,
देखना एक दिन ये 'कोरोना' भी भागेगा।।

*सहायक प्रबंधक (लेखा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

वेअरहाउसिंग और लॉजिस्टिक में तकनीक आधारित क्रांति

सैम्युएल प्रवीण कुमार*

भूमिका

वेअरहाउसिंग तकनीक आधारित क्रांति की ओर अग्रसर है क्योंकि कंपनियां उन उभरती प्रौद्योगिकियों को पहचानने और अपनाने में लगी हैं जिनसे लागत में कमी, अनुकूल प्रचालन तथा समस्त आपूर्ति श्रृंखला दक्षता में सुधार आए। नवीनतम तकनीक आधारित सोल्यूशंस को अपनाने वाली न केवल बड़ी लॉजिस्टिक कंपनियां है अपितु स्वचालन लागत में कमी के साथ लघु और मध्यम उद्यमों तथा स्टार्टअप कंपनियों नें भी इन दक्ष प्रौद्योगिकियों में निवेश करना शुरू कर दिया है।

आगामी वर्षों में निम्नलिखित दस प्रमुख प्रौद्योगिकियां पारंपरिक वेअरहाउसिंग परिदृश्य को बदल सकती हैं। इस अंक में पहली पांच प्रौद्योगिकियों का उल्लेख किया जा रहा है :

1. ड्रोन

छोटे गतिशील ड्रोन वेअरहाउसों में दिखाई दे रहे हैं क्योंकि विश्व में कंपनियां इंवेंट्री और एसेट मैनेजमेंट को स्वचालित करना चाहती हैं। कई वेअरहाउसों में 12 मीटर तक की ऊँचाई पर भंडारित किए गए स्टॉक पर बारकोड को देखने के लिए पहुंचना बहुत कठिन होता है जिसके लिए पारंपरिक रूप से सीढ़ी या फोर्कलिफ्ट का प्रयोग करने से कई घंटों की मेहनत लगती है।

स्कैनर लगे ड्रोन वेअरहाउसों के शैल्फ को नेविगेट तथा स्टॉक की स्वचालित रजिस्ट्री करके गति और सटीकता को बढ़ाते हैं। रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन टैग को 10 मीटर की दूरी से कैमरों के माध्यम से पढ़ा और लगाया जा सकता है। यद्यपि, हमें अभी भी प्रगति की आवश्यकता है जो कई ड्रोनों को वेअरहाउसों में संकरे स्थानों पर भी बिना टकराए नेवीगेट करने की अनुमति दे।

वेअरहाउसों में इंवेंट्री प्रबंधन के लिए स्वचालित ड्रोन की सफलता वितरण केंद्रों, पूर्ति केंद्रों, एअर कार्गो सुविधाओं तथा यहां तक कि खुदरा स्टोरों जैसे 3 प्रमुख कारकों पर निर्भर करती है।

यह निम्न हैं:–

1. ड्रोन हार्डवेयर की विश्वसनीयता, स्थायित्वता, मापनीयता तथा सामर्थ्य,
2. सॉफ्टवेयर की क्षमता पूरी तरह से स्वायत्त इनडोर नेविगेशन और बारकोड, क्यूआर कोड, अल्फान्यूमेरिक लेबल, आरएफआईडी टैग, आदि के स्वचालित स्कैनिंग को सक्षम करने हेतु,
3. इंवेंट्री ड्रोन सोल्यूशंस और वेअरहाउस इंवेंट्री प्रबंधन की मूल वास्तविकताओं के बीच प्रचालन, वाणिज्यिक और रणनीतिक रूप से उपयुक्त।

किसी भी नई तकनीक की तरह ड्रोन–विशेष रूप से वेअरहाउस प्रचालन के लिए 2013 से 2018 के दौरान अपने स्वयं के प्रचार दौर से गुज़रा। यद्यपि, यह अब आपूर्ति श्रृंखला उद्योग में निश्चित रूप से इंडोर (और संभवतः बाहरी के लिए शीघ्र) एप्लीकेशन हेतु व्यावसायिक तौर पर व्यवहार्य रूप में उभर रहे हैं।

2. रोबोट

वेअरहाउसिंग उद्योग में रोबोट गेम चेंजर हैं। वे स्वयं का मार्गदर्शन करने और आर्डर लेकर उसे पैक करके वेटिंग कार्ट या ट्रकों में डालने के लिए प्रोग्राम किए जाते हैं। कुछ

*महाप्रबंधक (वाणिज्यिक), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

गोदाम पहले ही रोबोट का उपयोग कर पूर्ण ऑटोमेशन में शिफ्ट हो गए हैं। उदाहरण के लिए, वितरण गोदाम के लिए ऑनलाइन ब्रिटिश सुपरमार्केट ओकेडो में अलग बक्से में किराने का सामान पैक करने के लिए हजारों रोबोट का उपयोग किया जाता है।

रोबोट जटिल एल्गोरिदम पर चलते हैं जो उन्हें सिखाते हैं कि इन्वेंट्री कैसे चुनें और उन्हें किराने की सही थैली में डालने के लिए मार्गदर्शन देते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि वे आर्डर भरने के लिए घूमते समय एक–दूसरे से टकराएं नहीं। वेअरहाउसों में पैलेटाइज्ड कार्गो/औद्योगिक वस्तुओं/व्हाइट गुड्स की हैंडलिंग के लिए रोबोट उपयुक्त हैं और वेअरहाउस में होने वाले श्रमिक मुद्दों से निपटने में मदद करेंगे।

लगभग प्रत्येक उद्योग में फैले वेअरहाउस में रोबोट का उपयोग किया जाता है, यद्यपि कुछ उद्योगों के वेअरहाउस अन्य उद्योगों की तुलना में रोबोटिक्स पर अधिक निर्भर करते हैं। वेअरहाउस रोबोटिक्स अपनाने में वृद्धि समग्र रूप से ''बढ़ते ई–कामर्स उद्योग, वेअरहाउस प्रचालन में गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता बढ़ाने की आवश्यकता, स्टार्टअप रोबोटिक्स कंपनियों के लिए उद्यम पूंजीपतियों से निरंतर फंडिंग तथा लघु एवं मध्यम दर्जे के उद्यमों द्वारा वेअरहाउस रोबोटिक्स को अपनाने में वृद्धि'' के कारण हुई है। मार्केट स्टडी के अनुसार, यह अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2022 तक खाद्य एवं पेय उद्योग में वेअरहाउस रोबोटिक्स उच्च दर से निरंतर बढ़ता रहेगा।

ऑटोमोटिव उद्योग, विशेष रूप से ऑटोमोटिव स्पेयर पार्ट्स क्षेत्र में भी वेअरहाउस रोबोटों की बहुत अधिक मांग है। ई–कॉमर्स खाद्य एवं पेय पदार्थ क्षेत्र की तुलना में ऑटोमोटिव कंपनियां प्रायः उन भारी पेलोड क्षमता वाले रोबोट पर निवेश करती हैं। ये रोबोट उन स्पेयर पार्ट्स को हैंडल करते हैं जो मानव श्रमिकों के लिए अत्यधिक भारी होते हैं। वेअरहाउस रोबोट का उपयोग करके ऑटोमोटिव कंपनियां स्पेयर पार्ट्स की डिलीवरी में तेजी लाती हैं और अपनी समग्र व्यावसायिक उत्पादकता को बढ़ाती हैं।

3. बेहतर बैटरियां

हालांकि बैटरीज वेयरहाउसिंग से सीधे तौर पर जुड़ी हुई नहीं है, परन्तु बैटरीज उन मशीनों को शक्ति प्रदान करती हैं जो वेअरहाउस प्रचालन को सुविधाजनक बनाते हैं जिससे दक्षता में सुधार होता है।

लिथियम–आयन विद्युत बैटरी के विकास से लम्बे समय तक चलने वाली बैटरी का निर्माण संभव हुआ है, ऐसी बैटरीज को दस साल तक बदलने की आवश्यकता नहीं जरा सोचिए कि रोबोट, इलेक्ट्रिक फोर्कलिफ्ट तथा अन्य वेयरहाउस मशीनें यदि इन बैटरीज प्रौद्योगिकियों का उपयोग करें तो वे कितनी शक्तिशाली, कुशल और किफायती हो सकती हैं।

रिडोक्स फ्लो बैटरी (RFB) लिथियम आयन बैटरी की तुलना में एक बहुत लंबे समय तक चार्ज/डिस्चार्ज चक्र प्रदान करती हैं और ये एक अतुलनीय इलेक्ट्रोलाइट का उपयोग करते हैं जिसे कई लोग मानते हैं कि यह समाधान हो सकता है।

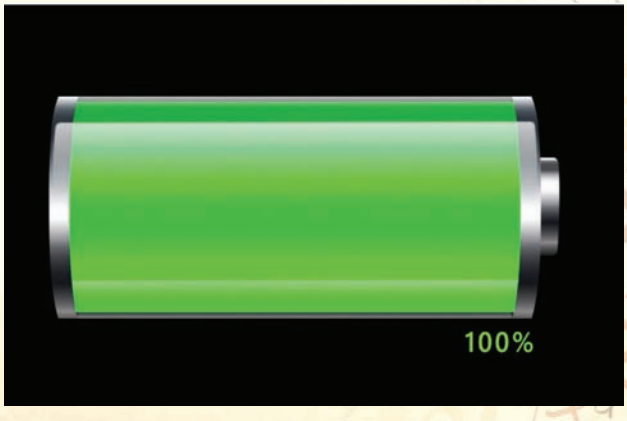

इन बैटरीज के अन्य लाभों में कमरे का तापमान संचालन, उच्च दक्षता और मापनीयता शामिल हैं। इन बैटरीज का नकारात्मक पक्ष है अधिक लागत, क्योंकि

वैनेडियम बड़ी मात्रा में प्राप्त करना आसान नहीं है और साल्यूशन में उन्हें शामिल करने के लिए विशेष पोलिमर की आवश्यकता होती है, हालांकि इन बैटरियों को किफायती बनाने के लिए कई तरीके विकसित किए जा रहे हैं।

हीटिंग और कूलिंग वेअरहाउस स्पेस बड़ी मात्रा में ऊर्जा का उपभोग कर सकते हैं, इसलिए इन प्रणालियों को ऊर्जा देने के लिए बेहतर बैटरी का उपयोग करने से वेअरहाउस प्रचालन में महत्वपूर्ण बचत हो सकती है।

4. थ्रीडी प्रिंटिंग

थ्रीडी प्रिंटिंग प्रोद्योगिकी निर्माण को उपभोक्ताओं से जोड़ते हुए इस प्रिंटिंग ने उस सम्पूर्ण वैश्विक सप्लाई चेन में परिवर्तन ला दिया है. उदाहरण के लिए अब वाहनों के लिए ऑटो पार्ट्स एशिया में बनते हैं और मेक्सिको में असेंबल होते हैं तथा उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में बेचा जाता है। कुछ पार्ट्स को शिपमेंट समय और लागत में कटौती करने के लिए बाजार के निकट ही तैयार किया जा रहा है।

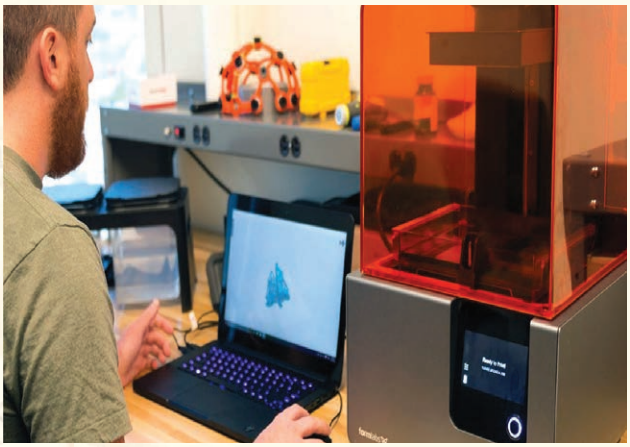

यह प्रक्रिया एक अंतिम उत्पाद पूरा होने तक लेयर द्वारा सामग्री लेयर को जोड़ने के लिए कंप्यूटर–एडेड डिजाइन (सीएडी) से तीन आयामी उद्देश्यों के निर्माण में अनिवार्य रूप से बल देती है। थ्रीडी प्रिंटिंग से बड़ी मात्रा में वस्तुओं के लिए काम्प्लेक्स ट्रेड और कस्टम्स रेड टेप से जुड़ी लागत को कम किया जा सकता है, क्योंकि थ्रीडी प्रिंटिंग का सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव भी हो सकता है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, कंपनियां ऑन–डिमांड विनिर्माण प्रक्रिया की खोज कर रही हैं, अर्थात् किसी वस्तु के निर्माण और उसे गोदाम या ग्राहक को शिपिंग करने के स्थान पर उसे डिजिटल फाइल के रूप में भेजा जा सकता है। तथापि, वस्तु को थ्रीडी प्रिंटेड ऑन–साइट किया जा सकता है। यह तकनीक शिपिंग वस्तुओं के साथ–साथ शिपिंग सामान के नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव से जुड़ी लागतों को भी कम करेगी।

5. स्वचालित निर्देशित वाहन

स्वचालित निर्देशित वाहन (एजीवी) रोबोट से भिन्न होते हैं क्योंकि अधिक स्वायत्तता से संचालित होने के बजाय वे गोदामों के आसपास निर्देशित मार्गों पर चलते हैं। एजीवी का एक बड़ा लाभ यह है कि वे फोर्कलिफ्ट ट्रकों की जगह लेते हैं, इसलिए किसी गोदाम की मूल व्यवस्था को बदलना आवश्यक नहीं है। अगर एजीवी किसी कार्य को कर रहे हैं तो उसे सुरक्षित विराम पर लाने के लिए भी डिजाइन किया गया है। यह दक्षता बढ़ाता है क्योंकि एजीवी बिना ब्रेक के लगातार चल सकता है। एजीवी की सबसे छोटे वितरण केंद्रों, जैसे एसएमई के रूप में भी व्यावहारिक होने की उम्मीद है, क्योंकि उनकी लागत में कमी जारी है।

आधुनिक आपूर्ति श्रृंखला विभिन्न स्वायत्त ड्राइविंग वाहनों जैसे स्वचालित स्टेकर्स, फोर्कलिफ्ट, पैलेट ट्रक और छोटे रैक–ले जाने वाले रोबोट के रूप में वेअरहाउस ऑटोमेशन देख रही है।

ऑटो–निर्देशित वाहनों से गोदाम को निम्न चार प्रमुख लाभ हो सकते हैं:

» **सुरक्षा:** ये वाहन मैटिरियल की हैंडलिंग के लिए सबसे सुरक्षित हैं, जो गोदाम क्लर्कों को ऐसे कार्यों को करने से बचाते हैं जो वस्तुओं की क्षति, चोट या शारीरिक थकावट पैदा कर सकते हैं। वे निर्दिष्ट सुरक्षित रास्तों का उपयोग कर सकते हैं। यहां तक कि अगर रास्ता अत्यधिक उपयोग किया जाता है, तो वाहन पर एजीवी सेंसर इसे धीमा या बंद करने का निर्देश देता है क्योंकि यह वस्तुओं या लोगों के साथ इसकी निकटता को महसूस करता है।

» **लचीलापन:** स्ववचालित निर्देशित वाहनों को वेअरहाउस मैनेजमेंट सिस्टम, ऑटोमेटेड स्टोरेज और रिट्रीवल सिस्टम, कन्वेयर आदि के साथ एकीकृत किया जा सकता है। इसके अलावा, उनकी गतिशीलता उन्हें स्थायी बाधा बनने से रोकती है।

» **लागत में कमी:** वेअरहाउस में ऑटोमेटिड निर्देशित वाहन से श्रम लागत को काफी कम किया जा सकता है। वे 24/7 और ऑन–डिमांड काम कर सकते हैं, इस प्रकार श्रम/श्रमिकों के मामले में प्रशिक्षण और थकान की आवश्यकता को समाप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, जब वे विश्वसनीय गति प्रदान करते हैं, तो उन्हें कम रखरखाव की आवश्यकता होती है।

» **उत्पादकता और परिशुद्धता में वृद्धि:** डब्ल्यूएमएस/वेअरहाउस ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर और सेंसर प्रौद्योगिकी के साथ एकीकृत करने की क्षमता इन वाहनों को सटीक बनाती है। वे एक सुसंगत गति से काम करते हैं, इस प्रकार ये मेटीरियल हैंडलिंग को समय प्रभावी, सुसंगत और त्रुटि रहित बनाते हैं।

इस अंक में उपरोक्त पांच प्रौद्योगिकियों के बारे में उल्लेख किया गया है। शेष पांच प्रौद्योगिकियों का उल्लेख इस पत्रिका के अगले अंक में किया जायेगा।

कविता

स्वाहा

विनीत निगम*

तुम अनजान डगर के राही हो, और मैं तुम्हारी छाया हूँ।
तुम जिस बस्ती के राही हो, मैं उस बस्ती की माया हूँ।
तुम जहाँ चले मैं साथ चली, तुम मोहन और मैं राधा हूँ।
तुम इष्ट देव मैं समिधा हूँ, तुम अग्नि और मैं स्वाहा हूँ।।

तुम वर्षा की बूंदे हो, मैं चातक–सी प्यासी पिया।
तुम फागुन के मौसम हो, मैं टेसू के रंग पिया।
अपनी–अपनी किस्मत है, तुम सूरज मैं चाँद पिया।
बसंत पंचमी के मौसम में, मैं नागिन तू नाग पिया।

अनजानी इन्हीं राहों पर, मिलते हैं साथी बनने को।
पाप–पुण्य की परिभाषा, हम साथ–साथ लिखने को।।
तुम ठान अगर निकलो, घर से मुझे साथ ले चलना।
मार्ग अकंटक हो जाएगा, सत्यवान जैसा तुम देखना।

*पूर्व प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

कविता

वक्त

प्रीती पटवाल*

वक्त बुरा जरूर है, पर बीत जाएगा
आने वाला वक्त एक नई सुबह लाएगा।।

चिंतन भविष्य का, तुझे हर पल सताएगा
हर मुश्किल में खड़े रहना, ये वक्त सिखाएगा।।

कुछ आस टूटेगी, कुछ ख्वाब बिखर जाएंगे
पर उम्मीद की एक किरण से, हम फिर से सँवर जाएंगे।।

सैलाब में आँसुओ के, कुछ दर्द छिप जांएगे
तूफान से लड़कर भी हम, एक नया आशियाना बनाएंगे।।
तूने जो सोचा है, वो वक्त भी आएगा
वक्त बुरा जरूर है, पर बीत जाएगा।।

तुझे गिरकर संभलना है, ये वक्त सिखाएगा
फिर घनघोर काली रात ये, नए सवेरे में बदल जाएगी।।

वक्त बुरा जरूर है, पर बीत जाएगा
आने वाला वक्त एक नई सुबह लाएगा।।

*सुपुत्री श्रीमती लक्ष्मी बिष्ट, हैल्पर, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा

के.पी. सत्यानंदन*

समाज, संस्कृति और भाषा परस्पर अन्योन्याश्रित है। भाषा और संस्कृति में देह और आत्मा का संबंध होता है। प्रत्येक समाज का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन उसकी भाषा में गुँथा होता है। शब्दकोश उलटने पर संस्कृति की अनेक परिभाषाएं मिलती हैं। एक बड़े लेखक का कहना है कि 'संसार भर में जो भी सर्वोत्तम बातें जानी या कही गई हैं, उनसे अपने आप को परिचित करना संस्कृति है।'संस्कृति शब्द का अर्थ है स्वच्छता, शुद्धि, परिमार्जन या सुधार। प्रकृति की दी हुई प्राकृतिक वस्तु को सुंदर बनाना, संभाल कर रखना जीवन जीने के लिए परिवार एवं समाज के निमित्त अनुशासन एवं नियम युक्त, संस्कार, सभ्यता या धरोहर, जो समय के साथ मर्यादित परंपराओं के रूप में संस्कारों का निर्माण करता है। किसी परिवार, समाज या राष्ट्र की मर्यादित परंपराएं ही उसके अस्तित्व को पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित रखती है। विभिन्न सभ्यताओं का उत्कर्ष तथा अपकर्ष संस्कृति के द्वारा ही नापा जाता है।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीनतम एवं समृद्ध संस्कृति रही है। भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता यह है कि वह विश्व की सभी संस्कृतियों तथा धर्मों के अस्तित्व का सम्मान एवं प्रशंसा करती है। हमारी संस्कृति अनेकता में एकता पर विश्वास करती है। भारत भौगोलिक, भाषिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विविधताओं का देश है। इसके इंद्रधनुषी रंगों में विविधता में एकता के दर्शन होते हैं। यही 'विविधता में एकता' भारत की गंगा–यमुना संस्कृति का मूल आधार है। सर्वधर्म समभाव ही हमारी पहचान है। यह संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है और काल के प्रवाह में जब अनेक समृद्ध संस्कृतियाँ नष्ट हो चुकी हैं और उसमें यह भारतीय संस्कृति ही है जो आज भी टिकी हुई है । यह एक सामासिक संस्कृति है और उसने विभिन्न संस्कृतियों को आत्मसात करने और अपने स्वभाव से समन्वित करने में अद्भुत प्रतिभा और लचीलेपन का परिचय दिया है। इसकी उदारता एवं समन्वयवादी दृष्टि ने अन्य संस्कृतियों की कई विशेषताओं को स्वयं में समाहित तो कर लिया, परन्तु अपने मूल स्वरूप को कभी नष्ट नहीं होने दिया। यही कारण है कि आज भी उसका अस्तित्व मूल रूप से सुरक्षित है। वेदों से भी भारतीय संस्कृति की प्राचीनता, श्रेष्ठता, अध्यात्म एवं चिंतनपरकता के प्रमाण उपलब्ध होते हैं।

अधिकांश भारतीय जनता आध्यात्मवाद पर विश्वास रखने वाली हैं। हमारी संस्कृति की विशेषताओं में सबसे मुख्य आधार आध्यात्मवाद को मानते हैं जोकि हमें वेदों, उपनिषदों, सूत्रों, दर्शनशास्त्रों और पुराणों में उपलब्ध है। विश्व को आध्यात्मिक प्रकाश भारत की ही देन है। भारत में खानपान, उठना–बैठना, जन्म–मरण, वेशभूषा, यात्रा, विवाह, तीज–त्यौहार आदि उत्सवों का निर्माण भी आध्यात्मिक बुनियादों पर टिका हुआ है। जीवन का कोई भी ऐसा पहलू नहीं है जिसमें अध्यात्म का प्रवेश न हो, या जिस

*पूर्व निदेशक (राजभाषा), रेल मंत्रालय, नई दिल्ली

पर पर्याप्त चिंतन या मनन न हुआ हो। इसकी आत्मा एक सनातन विश्व धर्म (सर्वधर्म समभाव) है जिसे आर्य वैदिक धर्म या वर्तमान में सनातन वैदिक हिन्दू धर्म कहते हैं। यह कोई मजहब या संप्रदाय नहीं है, बल्कि यह एक मानव जीवन दर्शन है जिसे मानव जीवन पद्धति या मानव जीवन शैली भी कह सकते हैं। इस संस्कृति का आधार अर्थ एवं विलास कभी नहीं रहा है।

भाषा प्रत्येक देश के समाज एवं उसकी संस्कृति की पहचान होती है। वहाँ के दर्शन, चिंतन, शोध, ज्ञान–विज्ञान, पारस्परिक संपर्क एवं अनेकता में एकता स्थापित करने की कड़ी के रूप में भाषा को देखा जाता है। भाषा के माध्यम से ही वह समाज समग्रता में अभिव्यक्त हो सकता है। भारतीय भाषाओं ने भी देश को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में पिरोये रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है, जिसमें यहाँ के धर्म एवं साहित्य का अहम योगदान रहा है। रामायण, महाभारत की कथा देश की हर भाषा में है। हिंदी भारतीय संस्कृति की संवाहिका है। यदि यह कहें कि हिंदी एक राष्ट्र, एक सभ्यता, एक संस्कृति है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हिंदी की अंतरर्राष्ट्रीय क्षमता का विकास नये विश्वग्राम और नए विश्वमानव की माँग है। किसी भाषा की महत्ता और श्रेष्ठता के मूल्यांकन का मुख्य आधार उसका प्रचार एवं साहित्य भंडार है। हिंदी रूपी वृक्ष का तना हमें दिन व दिन विकसित होता हुआ दिखलाई देता है और जिसकी हजारों शाखाएँ/प्रशाखाएँ, हरे भरे पत्तों, सुगंधित फूलों और स्वादिष्ट फलों से लदी हुई चारों ओर खूब तेजी से फैलती हुई दिखाई देती हैं। मॉरिशस, फिजी, त्रिनिदाद, गुयाना आदि देशों में हिंदी भाषा को केवल भाषा के रूप में व्यवहार में नहीं लाया जाता अपितु उसे वे अपनी संस्कृति का एक जीवंत अंग भी समझते हैं। वे अपने ऐतिहासिक संबंधों की सांस्कृतिक कड़ी और अपनी भावनात्मक एकता का मूल आधार हिंदी भाषा को ही मानते हैं। वहाँ हिंदी उपनिषद्, रामायण, गीता बेटी बनकर गई। यह उनके धर्म एवं संस्कृति का अंग बनकर अभी भी जीवित है। अभी भी वहाँ धार्मिक अनुष्ठानों की भाषा हिंदी है। हिंदी भाषा उनकी अस्मिता का प्रतीक है।

भारत के संविधान ने सामासिक संस्कृति पर बल दिया है। हमने भारत को धर्मातीत राज्य बनाया है। भारत की प्रत्येक समृद्ध साहित्यिक भाषा का वर्तमान कलेवर उस प्रदेश की सामासिक संस्कृति का द्योतक है। स्वाभाविक रूप से विकसित खड़ी बोली हिंदी स्वयं ही एक सामासिक संस्कृति की देन है। यह तो सर्वविदित है कि भाषा और संस्कृति का अटूट संबंध होता है और संस्कृतियाँ आज के युग में भी बहुत हद तक धर्मों और संप्रदायों से अनुशासित होती रही हैं। भारतीय संस्कृति आध्यात्म तथा धर्म प्रधान रही है और इसके उत्थान एवं विकास में हिंदी भाषा के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। हिंदी भाषा का आरंभ से लेकर अब तक का साहित्य भारतीय संस्कृति के क्रमिक विकास का एक प्रामाणिक घोषणापत्र है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों की बहुरंगी संस्कृति को लोककथा, लोकनाट्य, लोकगाथा, आदि द्वारा भी हिंदी और उसकी बोलियों ने उजागर किया है।

हिंदी साहित्य जिस प्रदेश में शताब्दियों से रचा जा रहा है, उसकी भावनात्मक प्रकृति और भाषिक चेतना प्रारंभ से ही सामासिक एवं समन्वयात्मक रही है। यह कहना अनुचित न होगा कि भारत देश का सांस्कृतिक संतुलन गंगा यमुना की घाटी में विशेषतः केंद्रित रहा है। राम, कृष्ण और बुद्ध जैसे अवतारी पुरुषों की जन्मभूमि तथा काशी, मथुरा, मायापुरी (हरिद्वार), नैमिषारण्य और प्रयाग की पुण्य भूमि देशव्यापी आकर्षण का केन्द्र रही है। 'मथुरा' के साथ दक्षिण की 'मदुरा' और 'काशी' के साथ 'कांची' का नाम अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। नाथों और सिद्धों का साहित्य पूर्वी परंपरा और रासो तथा वीरगाथाओं का साहित्य पश्चिमी परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हुए हिन्दी की विशाल चेतना में एकान्वित हो गया है। दोहा, चौपाई तथा अन्य समरूप छंदों ने इसे एक सूत्र में बाँधा हुआ है। उसी भक्ति का नवोन्मेष हिन्दी भाषी क्षेत्रों में सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, जायसी जैसे सांप्रदायिकता रहित उदार एवं उदात्त प्रेम भाव से परिपूर्ण संतों की वाणी हिन्दी साहित्य को दे गया। रसखान, रहीम, जायसी जैसे कवियों की रचनाओं को देखकर कहीं यह नहीं लगता कि हिन्दू और मुसलमान के बीच में कभी कोई सांप्रदायिक वैमनस्य रहा हो।

साहित्य, सत्य के साथ शिव और सौंदर्य का भी समन्वय करता है। साहित्यिक रूप में कबीर, जायसी जैसे महाकवियों के काव्य में भारतीय सामासिक संस्कृति का उज्ज्वल अंश प्रकट हो रहा है। आध्यात्मिक मूल्यों की भौतिक सुख सुविधाओं पर वरीयता, मनुष्य और मनुष्य के

बीच प्रेम–भाव पर आधारित स्नेह संबंधों की उत्कट आकांक्षा तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में मौजूद है जिसके देश विदेश की अनेकानेक भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध हैं। आज भी ऐसे अनेक देशों में भारत की महत्ता रामचरितमानस के कारण मानी जाती है जिसका गौरव हिन्दी को मिलता है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने धार्मिक विचारों को 'सत्यार्थ प्रकाश' के नाम से हिन्दी में लिखा। आर्य समाज के अनुयायियों द्वारा इसे धर्म ग्रंथ के रूप में पूजा जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद हिन्दी में स्वभाषा की चेतना के नए संदर्भ में आदि प्रवर्तक कहे जा सकते हैं क्योंकि उन्होने पहली बार अंग्रेजों की और अंग्रेजी की गुलामी के विरुद्ध देशवासियों को सचेत किया।

द्विवेदी युग में 'भारत भारती' के माध्यम से मैथिलीशरण गुप्त जी ने जिस गहरी राष्ट्रीय भावना के साथ देश के पुनरुद्धार का संकल्प किया था वह आज भी ढूँढने से नहीं मिल रहा है। मैथिलीशरण गुप्त की निरंतर उदारता की ओर उन्मुखता और 'राम' में किसी विशिष्ट धर्म एवं संप्रदाय को न देखकर व्यापक मानवीय रूप को देखना सामान्यतः हिन्दी साहित्य की राष्ट्रीयता के विकास का उदाहरण है। जयशंकर प्रसाद के नाटकों में हिन्दू धर्म के ऐसे उदात्त रूप के प्रति समरसता है जो धर्मातीत अध्यात्म की छाया में पलती है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य का चरमोत्कर्ष 'तुलसीदास' और 'राम की शक्तिपूजा' में हुआ है। महादेवी की कविता के रसास्वादन के लिए हिन्दू होना आवश्यक नहीं है।

मुंशी प्रेमचंद से लेकर नरेन्द्र कोहली तक के हिन्दी उपन्यासकारों ने नारी–पुरुष की समानता को सभी स्तरों पर स्वीकारा है। दिनकर ने 'उर्वशी' के माध्यम से घर टूटने की, मनुष्य के अति अकेले पड़ने की त्रासदी को संकेतिक किया है। जयशंकर प्रसाद ने सांस्कृतिक चेतना का रागात्मक संस्करण हिंदी साहित्य में प्रस्तुत किया। अब हिन्दी साहित्य केवल हिन्दी भाषा–भाषियों का साहित्य नहीं रहा। हिंदीतर भाषी भारतीय एवं अभारतीय भी साहित्य की सेवा कर रहे हैं। विदेशों से अच्छी–अच्छी हिंदी साहित्यिक पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। कुछ विद्वानों के कृतित्व को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। इंटरनेट पर हिंदी साहित्य पर आधारित बहुत सारे स्तरीय ब्लॉग एवं ई–पत्रिकाएँ आजकल उपलब्ध हैं। विदेशों से प्रकाशित होने के बावजूद भी इनमें भारतीय संस्कृति का विशेष ध्यान रखा जाता है।

प्रारंभ से ही हिन्दी साहित्य ने जिस आदर्श को प्रतिष्ठित किया, वह सांस्कृतिक एकता, मानवीय समता तथा सारे संसार को अपने भावनात्मक विस्तार में समेट लेने की, देशव्यापी ही नहीं, विश्वव्यापी सामासिक चेतना से युक्त हो रहा है। चूँकि हिंदी संपूर्ण भारत की संपर्क भाषा है, साथ ही भारतीय संस्कृति की संवाहिका भी, इस कारण हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता की पहचान बन गई है। भारतीय संस्कृति की निष्ठावान संवाहिका हिंदी ने संपूर्ण देश को एक सूत्र में ही नहीं बाँधा, अन्य प्रांतीय भाषाओं के गुण को भी अपनाकर सेतु की भूमिका निभाई है। वर्तमान परिस्थिति में हिंदी की संस्कृति केवल देशीय नहीं है। इसमें कोई तर्क नहीं है कि भारत देश की आत्मा को हिंदी के माध्यम से ही जाना–समझा जा सकता है। भारतीय संस्कृति को पूरे विश्व में प्रचारित–प्रसारित करने में हिंदी की अहम भूमिका है। हमारी संस्कृति के संवाहक हजारों शब्द यथावत् हिंदी में विद्यमान हैं। अतः स्वाभाविक रूप से वे संस्कृति को स्वयं में धारण किए हुए हैं। वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक भारतीय संस्कृति वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, प्राकृत भाषाओं तथा जनपदीय भाषा–बोलियों के माध्यम से भारत से लेकर पूरे एशिया महाद्वीप तक प्रचार–प्रसार पाती रही है तथा वर्तमान में हिंदी भाषा के माध्यम से उसकी अक्षुण्ण परंपरा प्रवाहमान है। निसंदेह हिंदी आगे बढ़ेगी। उसकी गति के रथ को रोका नहीं जा सकता, क्योंकि हमने अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए प्रेम की भाषा में शांति का संदेश दुनिया को सुनाया।

भागने की जरूरत नहीं है। ना बीते कल से, न आज से और न ही आने वाले कल से। अपने बीते कल को अपना कर ही हम आज में संतुलन बनाए रख सकते हैं। आने वाले कल के लिए उत्सुक रहकर ही आज कुछ बेहतर कर सकते हैं। वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था, 'बीते कल से सीखें, आज में जिएं और भविष्य के लिए उम्मीद रखें। सबसे जरूरी है कि सवाल पूछना बंद न करें।'

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में पांच वर्षों का यादगार सफर

वरुण भारद्वाज*

कुछ यादें ऐसी होती हैं जो भुलाए नहीं भूलती और स्मृति – पटल पर सदैव बनी रहती हैं। इन्हीं यादों में से अपने क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में बीते पिछले पांच वर्ष मेरे लिए सदा चिरस्मरणीय बने रहेंगे। इसलिए इस लेख के माध्यम से मैं कुछ बातों का उल्लेख करना चाहूंगा। इस निगम में कार्यभार ग्रहण करने से पहले मैंने भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मेरठ में अनुवादक के पद पर लगभग 8 माह कार्य किया था। इस अल्प कार्यकाल में वहां कार्य करके राजभाषा कार्यान्वयन की कुछ बातों एवं अनुवाद का बेसिक अनुभव हासिल कर लिया था। मैंने पांच वर्ष पूर्व केंद्रीय भंडारण निगम में हिंदी अनुवादक के पद पर क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद में कार्यभार ग्रहण किया। उस समय वहां पर कार्यरत क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय के सानिध्य में कार्य करते हुए मुझे जो मार्गदर्शन मिला वह मेरे लिए एक पूंजी के रूप में सदैव याद रहेगा।

मेरे वहां पर कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व राजभाषा अनुभाग की जिम्मेदारी हिंदीतर भाषी मेरे एक सहकर्मी निभा रहे थे। इसी कड़ी में कार्यभार ग्रहण करने के मात्र 6 दिन बाद ही हिंदी पखवाड़ा जैसे कार्यक्रम की बड़ी जिम्मेदारी मेरे कंधों पर आ गई थी। क्योंकि मेरे लिए यह पहला प्रयास था, इसलिए मन में थोड़ी घबराहट थी। मेरी इस घबराहट को मैंने तत्कालीन क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय को बताया तो उन्होंने मेरा हौंसला बढ़ाते हुए पखवाड़े के आयोजन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया और इसके लिए तैयारी शुरू करने को कहा। क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय के मार्गदर्शन से मैंने अपने सभी कार्यों को अंजाम देना शुरू कर दिया। पखवाड़े की शुरूआत राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक से हुई। पखवाड़े के दौरान हमने विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करवाईं। जिसमें कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल हुए और यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित हुआ। इस प्रकार क्षेत्रीय कार्यालय में मुझे नियमित रूप से प्रतिवर्ष हिंदी पखवाड़ा आयोजित करने का अवसर मिलता रहा और अपने अनुभव के आधार पर मैं इसका आयोजन करने में सफल रहा।

हिंदी पखवाड़े में निगम में मुझे पहली हिंदी कार्यशाला के आयोजन करने का भी मौका मिला। वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग से मुझे नियमानुसार प्रत्येक तिमाही कार्यशाला करने का अवसर मिलता रहा। वहां पर मेरे पूरे कार्यकाल में कुल 19 कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में अधिकतर केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप–संस्थान के प्राध्यापक, विश्वविद्यालयों से सहायक प्रोफेसर, नराकास तथा सदस्य कार्यालयों के हिंदी अधिकारियों को व्याख्याता के रूप में आमंत्रित किया गया और मुझे भी इनके व्याख्यान से नई–नई जानकारी मिलती रही।

मेरे इस कार्यकाल में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों को नियमानुसार आयोजित किया गया। उक्त बैठकों के माध्यम से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की भावी योजनाओं का खाका तैयार किया जाता था। कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन में आ रही विभिन्न कठिनाईयों का समाधान भी इन बैठकों के माध्यम से किया जाता था। प्रसन्नता की बात है कि सभी बैठकों की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय द्वारा ही की जाती थी, जिससे मेरा मनोबल भी बढ़ जाता था। इसी के परिणामस्वरूप इस कार्यालय को निगमित कार्यालय स्तर पर 'ग' क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन में किए गए उत्कृष्ट कार्य–निष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

यह कार्यालय, हैदराबाद नराकास (उपक्रम), हैदराबाद –सिकंदराबाद का सक्रिय सदस्य रहा है। नराकास की बैठकों में कार्यालय प्रधान के साथ नियमित रूप से भाग

*हिंदी अनुवादक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

लेना तथा बैठकों में लिए गए निर्णयों पर उचित कार्रवाई करना, नराकास को अंशदान राशि का समय से भुगतान करना आदि मेरी प्राथमिकता में रहते थे। इस कार्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में किए गए उत्कृष्ट कार्य–निष्पादन को नराकास द्वारा सराहा गया जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2016–17 में लघु कार्यालयों की श्रेणी में क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम)
हैदराबाद - सिकंदराबाद

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि वर्ष 2016-17 के दौरान राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए केंद्रीय भण्डारण निगम को लघु कार्यालय श्रेणी के अंतर्गत "राजभाषा शील्ड" के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

हैदराबाद
दिनांक : 25-10-2017

अध्यक्ष

नराकास की बैठक में निगम के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यों की जानकारी क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रस्तुतीकरण देना भी एक उपयोगी कार्य साबित हुआ क्योंकि नराकास द्वारा विशेष रूप से इसके लिए हमारे कार्यालय से आग्रह किया गया था। नराकास हैदराबाद द्वारा आयोजित अंतर–उपक्रम अनुवाद प्रतियोगिता में मुझे दो बार प्रथम पुरस्कार तथा एक बार द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत चलाए जा रहे प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ तक का प्रशिक्षण सभी कार्मिकों द्वारा पूर्ण करवाने तथा इस योजना द्वारा चलाए जा रहे अभ्यास आधारित पाठ्यक्रम 'पारंगत' के 3 सत्र का सफल आयोजन क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में करवाने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। जिसमें केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप–संस्थान के प्राध्यापकों का सहयोग अविस्मरणीय रहेगा।

क्षेत्रीय कार्यालय में गृह–पत्रिका प्रकाशन के क्षेत्र में कार्य किया गया। क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय के निर्देशन एवं मार्गदर्शन से मुझे क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में अर्धवार्षिक गृह पत्रिका ''भंडारण गौरव'' के संपादक का दायित्व निर्वहन करने का मौका मिला। इस पत्रिका के तीन अंकों का सफल प्रकाशन किया गया, जो राजभाषा को गति प्रदान करने एवं लेखन के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जागरूक करने का एक सशक्त मंच साबित हुआ।

क्षेत्रीय कार्यालय में कार्मिकों को हिंदी में टाइप करने में प्रोत्साहित करने के लिए मेरे द्वारा सभी कार्मिकों को उनकी टेबल पर ही हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया गया। सभी कंप्यूटरों में यूनिकोड सुविधा संबंधी एप्लीकेशन इंस्टॉल करके हिंदी टाइप को सुगम बनाया गया। खुशी की बात है कि आज क्षेत्रीय कार्यालय के कार्मिक आसानी से हिंदी में टाइप कर राजभाषा में अपना योगदान दे रहे हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा के लिए किए गए अनेक कार्यों में से एक कार्य क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय की संकल्पना एवं प्रेरणा से 'राजभाषा सहायिका' पॉकेट बुक तैयार करना था जिसे मेरे द्वारा एक साकार रूप दिया गया। यह सहायिका निगम के कार्मिकों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

यह भी प्रसन्नता की बात थी कि इस सहायिका का विमोचन निगम के वर्तमान प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा किया गया, जिससे हमारे कार्य को एक नई प्रेरणा और दिशा भी मिली।

संसदीय स्थायी समितियों के निरीक्षण, मंत्रालय द्वारा किए जाने वाले कार्य–निष्पादन समीक्षा बैठकों हेतु समय–समय पर आने वाली प्रश्नावली और प्रोफाइल के अनुवाद को मेरे द्वारा बखूबी से करने का प्रयास किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू में मंत्रालय द्वारा ली गई कार्य–निष्पादन समीक्षा बैठक के मद्देनजर अनुवाद कार्य के लिए मुझे बेंगलूरू, क्षेत्रीय कार्यालय में भी तीन दिन के लिए प्रतिनियुक्ति पर भेजा गया। मेरे द्वारा बनाई गई द्विभाषी प्रोफाइल को काफी सराहा गया।

तिरूपति और हैदराबाद में संसदीय समिति के अध्ययन दौरे से संबंधित समस्त सामग्री का अनुवाद कार्य भी मेरे द्वारा किया गया। कई नाम पट्टिकाओं को तत्काल बदलकर नए नामों की पट्टिकाओं को द्विभाषी बनाना मेरे लिए रोमांच से पूर्ण कार्य था। हैदराबाद, क्षेत्रीय कार्यालय के अधीनस्थ आने वाले समस्त वेअरहाउसों/सीएफएस की समस्त जानकारी से जुड़ी पुस्तक ''विग्नेटी ऑफ वेअरहाउसेस इन हैदरबाद रीजन'' का हिंदी अनुवाद मेरे द्वारा किया गया तथा इसे द्विभाषी रूप में प्रकाशित किया गया। गर्व की बात ये थी कि इस प्रकार की पुस्तक प्रकाशित करने वाला यह कार्यालय निगम का प्रथम क्षेत्रीय कार्यालय है। इस पुस्तक का विमोचन निगम के स्थापना दिवस पर किया गया।

हैदराबाद में पदस्थ रहते हुए मुझे कई कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला। मैंने ईसीआईएल द्वारा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के तत्वावधान में संक्षिप्त अनुवाद कार्यक्रम में भाग लिया। इसके अतिरिक्त, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप–संस्थान द्वारा 5 दिवसीय हिंदी में कम्प्यूटर प्रशिक्षण, सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी) द्वारा आयोजित दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला, नराकास द्वारा आयोजित नवनियुक्त राजभाषा अधिकारियों के लिए अभिमुखीकरण कार्यक्रम, निगमित कार्यालय द्वारा आईजीएमआरआई, हापुड़ में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरू में 3 सप्ताह के अनुवाद परिचय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इन सभी कार्यक्रमों में शामिल होने का न केवल सुअवसर मिला बल्कि नई–नई जानकारी मिलने से सुख का अनुभव भी हुआ तथा इनसे प्राप्त ज्ञान व अनुभव से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को गति भी मिली।

यहां पर यह भी उल्लेख करना आवश्यक होगा कि हिंदी अनुवादक और हिंदी अधिकारी को राजभाषा संबंधी किसी कार्यक्रम के आयोजन के समय स्टॉफ के उपस्थित रहने के लिए प्रत्येक विभाग और अनुभाग में अनेक बार जाकर आग्रह करना पड़ता था किंतु अपने कर्तव्य का पालन करते हुए मैंने इसे संपन्न किया। मुझे कई बार विपरीत स्थितियों का भी सामना करना पड़ता था किंतु कार्यक्रम की समाप्ति पर विशेष प्रकार की आत्मिक संतुष्टि/आनंद की अनुभूति होती थी। राजभाषा के कार्य को बढ़ाने के लिए स्वयं ही आगे आकर कार्यान्वयन तथा अनुवाद कार्य करना मेरी आत्मिक इच्छा रहती थी और आज भी है। क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में राजभाषा कार्यान्वयन में सराहनीय प्रगति भी हुई जिसमें क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय का मार्गदर्शन सदैव साथ रहा।

राजभाषा के कार्य को बढ़ाने के लिए मैंने जो प्रयास किया उससे मैं संतुष्ट हूं। यह सब कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से संभव हो पाया। अन्यथा उन सबके सहयोग के बिना राजभाषा के कार्य को आगे बढ़ाना असंभव था। इस परिपेक्ष्य में ''मजरूह सुल्तानपुरी'' का एक शेर याद आता है –

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर,
लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि क्षेत्रीय कार्यालय निरंतर राजभाषा के क्षेत्र में आगे बढ़ता रहेगा और हमारा निगम इस क्षेत्र में अपना विशेष स्थान बनाए रखेगा।

प्लास्टिक का उपयोग : पर्वतीय विरासत के लिए खतरा

डॉ. राजेश कपूर*

प्रस्तावना :

प्रकृति का जिक्र हो या प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन, पर्वतीय क्षेत्रों के उल्लेख के बिना संभव प्रतीत नहीं होती। उद्देश्य चाहे पर्यटन का हो या फिर स्वास्थ्य–लाभ का, वैज्ञानिक सर्वेक्षण का हो या फिर अनुसंधान का, पर्वतीय भूभाग का महत्व नकारा नहीं जा सकता। हिमालय और उसके पर्वतीय क्षेत्र हमारे देश का ही नहीं पूरे विश्व का गौरव हैं। इसकी गरिमा जितनी अधिक है, उतना ही अधिक यह बात भी अहम है कि उसके संरक्षण के लिए हम कितने सक्रिय हैं, कितने प्रयत्नशील हैं। इसका आधार है, पर्वतों के साथ हमारा जुड़ाव, पर्वतीय क्षेत्रों के प्रति हमारी संवेदनशीलता। प्रकृति की इस धरोहर के लिए वनों का कटाव, खनन, पहाड़ों की कटाई जैसे अनेक खतरे मंडराते रहते हैं। इसके अलावा, प्लास्टिक के रूप में एक बहुत बड़ा खतरा पर्वतीय क्षेत्रों के सामने विद्यमान है। यदि समय रहते इस दिशा में सतर्कता न बरती गई तो पूरी मानव–जाति को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए, इसलिए इस विषय पर गौर करना निहायत ही जरूरी है।

जोखिम के घटक :

पर्वतीय क्षेत्रों में श्रीनगर हो या पहलगाम, शिमला हो या कसौली, गंगटोक हो या शिलोंग, मसूरी हो या नैनीताल, अलमोड़ा हो या धर्मशाला, सतपुड़ा हो या माउंट आबू, ऊटी हो या मुन्नार सभी स्थल हमारी अत्यंत मूल्यवान विरासत में सम्मिलित हैं। यहां पर्यटकों की संख्या भी बहुत अधिक रहती है। इन क्षेत्रों में पॉलीथीन के कैरीबैग, पैक की गई खाद्य वस्तुओं के रैपर, रोजमर्रा के इस्तेमाल की चीजों के पैकेट आदि का उपयोग भी उतना ही ज्यादा है। पर्यटन स्थलों पर पानी अपने साथ लेकर चलना पर्यटकों के लिए एक आम बात है और अनिवार्यता भी, इसलिए प्लास्टिक की बोतलों का इस्तेमाल यहां सबसे अधिक किया जाता है। यह ऐसा प्लास्टिक है जिसका केवल एक ही बार उपयोग होता है, उसके बाद इसे कचरे में फेंक दिया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इस प्रकार का 'एकल उपयोग' अर्थात 'सिंगल यूज' प्लास्टिक सबसे अधिक प्रचलन में है। चूंकि इसे डिकम्पोज होने में 500 से 600 वर्ष का समय लगता है, इसलिए यह और भी घातक सिद्ध हो रहा है। इसमें केवल पर्यटकों को ही आरोपित करना उचित नहीं होगा, स्थानीय

*सहायक निदेशक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी

लोगों को भी क्लीन चिट नहीं दी जा सकती, वे भी प्रकृति के प्रति इस अन्यायपूर्ण कृत्य में बराबर के भागीदार हैं। एकल उपयोग के प्लास्टिक का इस्तेमाल करना उनकी भी आदत का एक हिस्सा बन चुका है। स्थानीय दुकानदार भी ग्राहकों की सुविधा के चलते पॉलीथीन के कैरीबैग्स रखते और उपलब्ध कराते दिखाई देते हैं। यहां प्लास्टिक के बहुत छोटे हिस्सों यानी 'माइक्रो पार्ट्स' का उल्लेख भी बहुत जरूरी हो जाता है। ज्यादातर माइक्रो पार्ट्स में बोतलों के ढक्कन, कैंडी या चॉकलेट के रैपर, शैंपू आदि के पाउच, सॉस या जैली के पैकेट, जूस के टैटरापैक के साथ मिलने वाले स्ट्रॉ, इयर बड्स, नए कपड़ों के साथ लगे टैग जैसे छोटे आकार के प्लास्टिक के अवयव शामिल हैं। यह बात विचार करने योग्य है कि बड़े आकार में प्लास्टिक का कचरा तो रीसाइकलिंग में आसानी से जा सकता है किन्तु इतने छोटे प्लास्टिक के टुकड़ों को न तो इकट्ठा करना ही आसान है और न ही उसे रीसाइकलिंग के लिए भेजना ही संभव हो पाता है। श्रमिकों, टैक्सी ड्राइवरों आदि जैसे व्यक्तियों द्वारा पान मसाले, गुटखे आदि के पैकेट अक्सर पर्वतीय रास्तों में फेंके हुए दिखाई पड़ते हैं, जो इस जोखिम को और ज्यादा बढ़ाते हुए नजर आते हैं।

विनाशकारी प्रक्रिया :

पर्वतीय क्षेत्रों की यह विशेषता है कि यहां समतल स्थान की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में नहीं होती। रास्तों में कहीं चढ़ाई है तो कहीं ढलान, पहाड़ों को काट कर बनाई गई सड़कें घुमावदार तो हैं ही, चौड़ी भी उतनी नहीं हो सकतीं जितनी कि समतल क्षेत्रों में संभव हो पाती हैं। भूभागीय सीमाओं के कारण सड़कों के किनारे या रास्तों के बीच फेंका गया प्लास्टिक का कचरा ज्यादा देर तक उसी जगह पर पड़ा नहीं रह पाता। थोड़ी–सी भी हवा चलने पर वह नीचे खाइयों में चला जाता है। इसके अलावा पहाड़ी

इलाकों में बारिश भी बहुत अधिक होती है। बारिश के पानी में बहता हुआ यह कचरा तुरन्त खाइयों में जमा हो जाता है, जहां प्राकृतिक रूप से उगे हुए पेड़ों के इर्द–गिर्द इकट्ठा हो जाता है। एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी के बीच दूर तक दिखाई देते पेड़ इन पर्वतीय क्षेत्रों की वास्तविक वन–संपत्ति हैं। घाटियों में पेड़ों के आस–पास जमा होता यह प्लास्टिक कचरा सबसे ज्यादा घातक और विनाशकारी है। सर्वाधिक विनाशकारी इसलिए कि धीरे–धीरे पेड़ों के आधार में प्लास्टिक कचरे की एक तह बन जाती है जिसके कारण पेड़ों की जड़ों में पानी पहुंचना बंद हो जाता है और वे सूख जाते हैं तथा एक–एक करके गिरने शुरू हो जाते हैं। इस समस्या पर पूरी संजीदगी से विचार करना समय की मांग भी है और तात्कालिकता भी।

घातक परिणाम :

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि ऊंचाई पर स्थित होने के कारण पर्वतीय क्षेत्रों में ऑक्सीजन समतल क्षेत्रों की तुलना में काफी कम होती है। विशेष तौर पर रात के समय इन इलाकों में ऑक्सीजन की मात्रा में बहुत कमी आ जाती है। ऐसी स्थिति में प्लास्टिक कचरे से पेड़ों को पहुंचने वाला क्रमिक नुकसान गंभीर चिन्ता का एक विषय है। पेड़ों की संख्या में लगातार कमी से स्थानीय लोगों का जीवन खतरे में पड़ना तय है। इसके अलावा, यदि प्राकृतिक सौन्दर्य ही नहीं बचेगा तो पर्यटक भी इन क्षेत्रों की ओर आकर्षित नहीं होंगे और चूंकि यहां के लोगों के रोजगार का मुख्य स्रोत पर्यटन है, इसलिए स्थानीय लोगों के रोजगार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता।

एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि अनेक पर्वतीय इलाके ऐसे हैं जहां पक्षियों की दुलर्भ प्रजातियां पाई जाती हैं। अलग–अलग तरह के, विविध आकार के तथा विभिन्न रंगों के पक्षी यहां के सौन्दर्य में तो वृद्धि करते ही हैं, साथ ही साथ ये क्षेत्र इन दुलर्भ प्रजातियों का महत्वपूर्ण आश्रय–स्थल भी हैं। पेड़ों को होने वाली क्षति के साथ–साथ पक्षियों की इन प्रजातियों को नुकसान पहुंचना स्वाभाविक है। इसके अलावा, यह समझना भी अति आवश्यक है कि तरह–तरह के प्लास्टिक का कचरा इकट्ठा होने से वातावरण में विषैले मिश्रण हो जाते हैं, पक्षियों के लिए यह बहुत अधिक घातक है, इस बात का बोध होना भी बहुत जरूरी है।

यही नहीं, पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले अन्य वन्य–जीवों पर भी यही बात लागू होती है। पर्यावरण को होने वाले नुकसान से वन्यदृजीव भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। खाने की चीजों के साथ–साथ प्लास्टिक के माइक्रो अवयव भी उनके पेट में जाते हैं और उनके जीवन के लिए खतरा पैदा करते हैं।

पहाड़ी क्षेत्रों में सुबह के समय प्रायः ऐसा देखने को मिल जाता है कि सफाई कर्मचारी सड़क की सफाई के बाद रास्ते पर गिरे पत्तों को इकट्ठा करके उन्हें जला देते हैं जिसमें सिंगल यूज प्लास्टिक की वस्तुएं भी शामिल होती हैं। कई जगहों पर स्थानीय लोगों द्वारा भी यही प्रक्रिया अपनाई जाती है। अज्ञानतावश हो या फिर सहूलियत के चलते ऐसा किया जा रहा हो, किन्तु इससे पैदा हुए जोखिम को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। प्लास्टिक जलने से हवा में अनेक विषैली गैसों का मिश्रित होना निश्चित है जो उस क्षेत्र में रहने वाले स्थानीय लोगों के लिए, वहां से गुजरने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए, आस–पास होटलों में ठहरे पर्यटकों के लिए, पक्षियों के लिए और वन्य–जीवों के लिए भी घातक है।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि पर्वतों में झरनों से आने वाले पानी में खनिज पदार्थों की पर्याप्त मात्रा होती है, इसका अर्थ यह है कि यह पानी प्राकृतिक रूप से ही मिनरल होता है। स्थानीय निवासियों के लिए पानी का यही मुख्य स्रोत है, इसी पानी का संग्रहण किया जाता है और पीने के लिए तथा अन्य कार्यों के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है। किन्तु दुखद बात यह है कि कई जगहों पर प्लास्टिक कचरे के साथ बहने से यह पानी विषैला हो जाता है। पानी में मिश्रित ये विषैले तत्व स्थानीय लोगों के जीवन के साथ–साथ यह पक्षियों और दूसरे वन्य–जीवों के जीवन के लिए भी गंभीर खतरा हैं।

निवारक उपाय :

पर्वतीय क्षेत्रों में प्लास्टिक के उपयोग और उसके कचरे से पैदा होते खतरे से कई स्तरों पर निपटने की आवश्यकता है। चूंकि सबसे ज्यादा खतरा सिंगल यूज प्लास्टिक का है, इसलिए सबसे पहले इसी ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। पर्यटकों को इस प्रकार की वस्तुओं के उपयोग से परहेज करने के लिए जागरूक करने के साथ–साथ दुकानदारों और व्यवसायियों को भी इसके नुकसान और खतरे से आगाह करते हुए इसकी बिक्री न करने के लिए प्रतिबद्ध किया जाना जरूरी है। आवासीय क्षेत्रों में इस प्रकार के प्लास्टिक का कचरा फेंकने में स्थानीय लोगों की भी भूमिका स्पष्ट है, इसलिए उन्हें भी इस संबंध में शिक्षित करने के लिए अभियान चलाने की जरूरत है। सूखे पत्तों और प्लास्टिक कचरे को न जलाने के लिए भी सफाई कर्मचारियों एवं स्थानीय लोगों को जागरूक किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इस संबंध में स्थानीय नगर निगमों द्वारा गैर–सरकारी अथवा स्वयंसेवी संगठनों की मदद ली जा सकती है। इसके साथ ही नगर निगम निकायों द्वारा कचरे के निस्तारण के लिए निश्चित की गई व्यवस्था और निर्धारित किए गए नियमों को भी कड़ाई से लागू किया जाना जरूरी है। पर्वतीय इलाकों में एक समस्या यह भी है कि रास्तों पर दूर–दूर तक कूड़ेदान उपलब्ध नहीं हैं। इस समस्या से निपटने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के मॉडल को अपनाया जा सकता है। पूर्वोत्तर राज्यों में स्थानीय महिलाओं द्वारा घरों में बांस से छोटे–छोटे कूड़ेदान बनाए गए हैं और पहाड़ी क्षेत्रों में थोड़ी–थोड़ी दूरी पर सड़क के किनारे लगे पेड़ों के तनों या खंभों पर उन कूड़ेदानों को बांध दिया गया है। नगर निगम निकायों द्वारा उन कूड़ेदानों को नियमित रूप से खाली किया जाता है। स्वाभाविक है, सड़कों पर न तो कूड़ा फैलता है और न ही प्लास्टिक का कचरा हवा या बारिश से खाइयों में जाकर जमा होता है। क्षेत्रीय सीमाओं के मद्देनजर यह उदाहरण अनुकरणीय एवं कारगर साबित हो सकता है। प्रधानमंत्री द्वारा 2019 के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने भाषण में प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान के लिए जो आह्वान किया गया है उसे पूरी संजीदगी के साथ सफल बनाए जाने की जरूरत है और पर्वतीय क्षेत्रों में इस अभियान को गति प्रदान करना हमारा दायित्व भी है और हमारे राष्ट्र की पर्वतीय विरासत के प्रति नैतिक जिम्मेदारी भी है।

कहानी कंटेनर की

रोहित उपाध्याय*

आपने मालगाड़ियों पर लदे लाल, हरे, नीले, पीले, सफेद, भूरे रंग–बिरंगे डिब्बे देखे होंगे। यही नहीं, राजमार्गों पर भी अक्सर इन रंग–बिरंगे डिब्बों से लदे ट्रकों को दौड़ते देखा होगा। हर आम और खास आदमी ने इन डिब्बों को देखा होगा, लेकिन इन डिब्बों के बारे में उन्हें अधिक जानकारी नहीं होती, न ही यह पता होता है कि ये डिब्बे ट्रक या मालगाड़ी का हिस्सा न होकर अपना अलग अस्तित्व रखते हैं। इन रंग–बिरंगे डिब्बों को अंतर्राष्ट्रीय भाषा में 'कंटेनर' कहा जाता है। 'कंटेनर' का हिंदी में अर्थ होता है बर्तन, पात्र या धारक । अधिकांश लोगों को लगता है कि ये रंग–बिरंगे कंटेनर सदा से ही हमारी सड़कों और पटरियों पर ऐसे ही दौड़ते रहे हैं। राजमार्गों के किनारे बसे गाँव वालों के लिए ये कंटेनर से लदे हुए ट्रेलर साक्षात किसी यमदूत से कम नहीं होते क्योंकि कंटेनर पलटने या ट्रेलर की चपेट में आने से हर साल सैकड़ों जानें जाती हैं।

विगत छह दशकों में न जाने ये कंटेनर कब हमारी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए, पता ही नहीं चला। क्या आप जानते हैं, आज आपके हाथ में जो सस्ता मोबाइल है, घड़ी है अथवा जो विदेशी सेब, बादाम या पिस्ता आप खा रहे हैं तथा जो विदेशी ब्रांडेड कपड़े आप पहन रहे हैं, सब इसी कंटेनर के द्वारा आप तक पहुँचते हैं। आज ये कंटेनर हमारे आयात और निर्यात के महत्वपूर्ण अंग बन गए हैं। आज विदेश में बना सामान भारत में बने सामान से सस्ता बिक रहा है। इन महंगी वस्तुओं को भारत तक सस्ते में पहुँचाने में इन रंग–बिरंगे कंटेनरों का ही योगदान है। आज दुनिया का शायद ही कोई देश होगा जहाँ तक कंटेनर न पहुंचा होगा। भारत से बासमती चावल, गेहूं, चीनी, मसाले, दालें, कपास, कालीन, दवाइयाँ, सिले–सिलाए वस्त्र और मशीनें इत्यादि इन्हीं कंटेनरों के माध्यम से निर्यात होते हैं जबकि चिकित्सा एवं दूरसंचार उपकरण, प्लास्टिक दाना, मोम, वनस्पति तेल इत्यादि का आयात किया जाता है। आज भारत विश्व के 190 देशों को लगभग 7500 वस्तुएँ निर्यात करता है और 140 देशों से लगभग 6000 वस्तुएँ आयात करता है। आज हर वस्तु हर देश में उपलब्ध है इसका श्रेय कंटेनर क्रांति को ही जाता है।

निगम के अपने कार्यकाल में मैंने अनुभव किया है कि आम लोगों को ही नहीं, बल्कि निगम के कर्मचारियों को भी इन कंटेनरों के बारे में अत्यंत सीमित जानकारी है। अधिकांश लोगों ने कंटेनरों को मार–धाड़ वाली फिल्मों में ही देखा होता है जिसमें हीरो कंटेनरों के पीछे छिपे गुंडों को चारों खाने चित कर देता है। रंग–बिरंगे कंटेनर अक्सर फिल्मों के मार–धाड़ वाले दृश्यों को और भी अधिक प्रभावशाली बना देते हैं।

हमारा निगम देश की एक प्रमुख वेयरहाउसिंग संस्था के तौर पर आज लगभग 415 गोदामों का संचालन कर रहा है। निगम की वेयरहाउसिंग गतिविधियों में भांडागार, कस्टम बांडेड भांडागार, कंटेनर फ्रेट स्टेशन, इनलैंड कंटेनर डिपो, एयर कार्गो कॉम्प्लेक्स, इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट और इंटीग्रेटेड रेल टर्मिनल शामिल हैं। इसके अलावा पेस्ट कंट्रोल भी निगम की प्रमुख गतिविधियों में से एक है। निगम के अधिकांश कर्मचारी अनाज के भांडागारों या क्षेत्रीय कार्यालय अथवा निगमित कार्यालय में कार्यरत हैं। बहुत से क्षेत्रीय कार्यालयों के अंतर्गत तो एक भी कंटेनर फ्रेट स्टेशन या अंतर्देशीय कंटेनर डिपो नहीं है। आप इसी से अंदाजा लगा सकते हैं कि 25 में से 10 कंटेनर फ्रेट स्टेशन/इनलैंड

*प्रबंधक, कंटेनर फ्रेट स्टेशन–मुंद्रा, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

कंटेनर डिपो निगम के मुंबई और अहमदाबाद में स्थित क्षेत्रीय कार्यालय के अंतर्गत आते हैं। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि कंटेनर परिचालन से संबंध न रखने वाले कर्मचारियों को कंटेनरों के बारे में सीमित जानकारी हो।

हालांकि भारत में पहला आईएसओ–कंटेनर 1973 में कोच्चि में हैंडल किया गया था। 1981 में पहली बार भारतीय रेल ने भारत के पहले इनलैंड कंटेनर डिपो–बंगलोर तक कंटेनर को पहुंचाया। यह अंतर्देशीय कंटेनर डिपो भारतीय रेल द्वारा ही संचालित किया जाता था। हमारा निगम इस काम में पीछे नहीं रहा और वर्ष 1985 में निगम ने मुंबई के भांडुप में अपने पहले सी.एफ.एस. की स्थापना की। इसके बाद निगम ने इस क्षेत्र में पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

1989 का वर्ष न केवल भारत, बल्कि निगम के इतिहास में भी एक मील के पत्थर की तरह हमेशा याद रखा जाएगा। इसी वर्ष मुंबई के निकट देश के सबसे बड़े पोर्ट न्हावा शेवा पोर्ट का संचालन शुरु हुआ। इसी पोर्ट का नाम बाद में बदलकर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर रख दिया गया। जवाहर लाल नेहरू पोर्ट के सी.एफ.एस. के परिचालन का कार्य इसी वर्ष निगम को अपनी बेहतरीन भंडारण सेवाओं के कारण मिला। निगम ने 31.12.2005 तक जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट के इस सी.एफ.एस. का बखूबी परिचालन किया और बाद में अपने अनुभव और कौशल से अपना विस्तार करते हुए अपने स्वयं के 25 सी.एफ.एस. और आई.सी.डी. खोल लिए। विगत वर्षों में सरकार की नीतियों में बदलाव आने से इस क्षेत्र में निजी क्षेत्र की पैठ बढ़ी है और निगम को भी समयानुकुल निर्णय लेते हुए अपनी नीतियों में परिवर्तन करने पड़े हैं। आज निगम अपने बहुत से सी.एफ.एस. और आई.सी.डी. निजी क्षेत्र के साथ रणनीतिक साझेदारी के आधार पर चला रहा है।

आइए, अब आपको ले चलते हैं इन रंग–बिरंगे कंटेनरों की दुनिया की सैर पर:

कंटेनर का इतिहास

दुनिया के सभी देशों के बीच समुद्री व्यापार सदियों से चल रहा है। समुद्री रास्ते से व्यापार भले ही हवाई मार्ग से होने वाले व्यापार की तुलना में अधिक समय लेता हो, लेकिन समुद्री रास्ते से होने वाला व्यापार सस्ता रहता है। भारत में भी ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापार के लिए समुद्री मार्ग ही चुना था। भारत से सस्ते कपास का निर्यात करके इंग्लैंड की मिलों में बना हुआ कपड़ा भारत में बेचा जाता था। इसी तरह केरल से मसाले का निर्यात भी सैंकड़ों वर्षों से किया जाता रहा है। आयात और निर्यात का यह व्यापार हजारों वर्षों से चल रहा है–अनवरत–कंटेनरीकरण से भी बहुत पहले से।

कंटेनरीकरण से पहले समुद्री व्यापार तो होता था, लेकिन यह प्रक्रिया कभी–भी आसान नहीं थी। भूमि परिवहन से पूर्व जहाज के जाने और वापस आने पर बैरल, बोरियों और लकड़ी के बक्से में व्यक्तिगत रूप से माल की लदाई और उतराई अत्यंत बोझिल, ऊबाऊ और धीमी थी। इसे ब्रेक–बल्क शिपिंग कहा जाता था। 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक अन्य कोई उपाय न होने के कारण माल के परिवहन के लिए एकमात्र ज्ञात तरीका यही था।

जहाज पर माल की लदाई और उतराई में अत्यधिक श्रम लगता था। जहाज को भी अक्सर बंदरगाह में अधिक समय बिताना पड़ता था। इसमें हमेशा दुर्घटना, हानि और चोरी का भी जोखिम बना रहता था। हालांकि, 18वीं शताब्दी में रेलवे के प्रसार ने व्यापार को और बढ़ावा दिया। अंग्रेजों को अक्सर भारत में रेल के प्रसार के लिए याद किया जाता है, लेकिन यह योगदान भी उन्होंने भारत के भले के लिए नहीं, बल्कि केवल अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए किया था। उन्होंने दूर–दराज के स्थानों को बंदरगाहों तक रेल मार्ग से जोड़ा। तीन ओर से समुद्र से घिरे होने के कारण भारत में समुद्री रास्ते से व्यापार करना बहुत सस्ता था। समुद्री किनारों पर बसे देशों के लिए यह एक बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य था। एक बंदरगाह से दूसरे बंदरगाह तक तो माल पहुँच जाता था, लेकिन वहाँ से अंतिम उपभोक्ता तक पहुँचने में नाकों चने चबाने पड़ते थे।

कंटेनर शिपिंग उद्योग के अस्तित्व में आने से पहले, माल के परिवहन में अक्सर विभिन्न आकार–प्रकार के बक्से इस्तेमाल किए जाते थे। चीजों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए वे एकमात्र उपलब्ध साधन थे। यूं तो इंग्लैंड में आधुनिक कंटेनर की तरह के बक्से का उपयोग 1792 में घोड़ा परिवहन के लिए किया जाता था।

बाद में सयुंक्त राज्य अमेरिका में भी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान छोटे आकार के मानक कंटेनर प्रयोग में लाए गए। आधुनिक कंटेनर शिपिंग और हमारे निगम के जन्म में लगभग एक वर्ष का ही अंतर है। जहां हमारे निगम की स्थापना 1957 में हुई वहीं आधुनिक कंटेनर शिपिंग की शुरुआत 1956 में हुई। आज केवल 65 वर्ष के अंदर कंटेनरीकरण ने आयात–निर्यात और लॉजिस्टिक्स की दुनिया को पूरी तरह से बदलकर रख दिया है।

मैल्कम पी. मैकलीन को वर्तमान कंटेनर शिपिंग का जनक माना जाता है। मैकलीन संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी कैरोलिना के एक ट्रकिंग उद्यमी थे। वर्ष 1955 में उन्होंने एक स्टीमशिप कंपनी खरीदी। उन्होंने महसूस किया कि यदि कंटेनर को बिना उसके अंदर का माल उतारे, ट्रेलर से उतारकर सीधे जहाज पर चढ़ा दिया जाए तो यह प्रक्रिया और सरल तथा तेज हो जाएगी। आज लोग हेनरी फोर्ड को मोटरकार के आविष्कारक के रूप में जानते हैं लेकिन मैल्कम मैकलीन को शायद ही कोई जानता हो। मैल्कम मैकलीन का जन्म 1914 में हुआ था और वे संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी कैरोलिना में बड़े हुए थे। 1931 में स्कूल की पढ़ाई खत्म करने के बाद उन्होंने कई सालों तक सेकंड हैंड ट्रक खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे बचाने के लिए काम किया। 1934 में उन्होंने अपना परिवहन व्यवसाय शुरू किया। 1937 में उत्तरी केरोलिना से न्यू जर्सी तक कपास की गांठों की एक नियमित डिलीवरी के दौरान मैकलीन ने डॉक वर्कर्स को जहाज पर माल की लदाई और उतराई करते हुए देखा, जिसमें घंटों लगे। समय और धन की इस तरह से बरबादी होते देख कर उन्हें बहुत दुख हुआ। 1937 से 1950 की शुरुआत तक, मैकलीन ने अपने परिवहन व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित किया, जिसमें 1,750 से अधिक ट्रक और 37 परिवहन टर्मिनल थे। इस समयावधि के दौरान सड़क परिवहन के लिए कई भार प्रतिबंध और लेवी शुल्क भी लागू किए गए। इस कारण उनकी कंपनी को बहुत बार जुर्माना भी भरना पड़ता था।

मैकलीन के विचार 'इंटरमॉडलिज्म' पर आधारित थे। उनका मानना था कि इस प्रणाली के प्रयोग से कार्गो को एक कंटेनर के अंदर रखकर विभिन्न परिवहन साधनों, यथा– सड़क, रेल और समुद्र मार्ग से न्यूनतम बाधा के अलावा, अधिक सरलता और तीव्रता से उसके गंतव्य स्थान तक पहुंचाया जा सकता है। कंटेनर को जहाज, ट्रक और ट्रेन के बीच सरलता से स्थानांतरित किया जा सकता है। उनके इस छोटे से विचार ने एक बहुत बड़ी कंटेनर क्रांति का सूत्रपात किया और तब से केवल 65 वर्ष के अंदर पूरी लॉजिस्टिक्स प्रक्रिया और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में एक बहुत बड़ा बदलाव आ गया। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में इस अहम योगदान के लिए इंटरनेशनल मैरिटाइम हाल ऑफ फेम द्वारा मैकलीन को 'मैन ऑफ दी सेंचुरी' चुना गया।

इंटरमॉडलिज्म एक प्रणाली है, जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि जब एक ही कंटेनर, एक ही कार्गो के साथ, अपने प्रारंभिक स्थान से विभिन्न परिवहन साधनों के माध्यम से, अपने गंतव्य स्थल तक बिना किसी रुकावट के साथ पहुँच जाएगा तो दक्षता में बहुत सुधार होगा। यह सोचने और पढ़ने में जितना सरल लगता है, उतना था नहीं। इंटरमॉडल कार्गो परिवहन के लिए परिवहन श्रृंखला के सभी क्षेत्रों को एकीकृत किया जाना था। यह केवल कंटेनरों में माल लादने का सवाल नहीं था। कंटनरों को संभालने के लिए जहाजों, पोर्ट टर्मिनलों और ट्रकों को इसके अनुकूल बनाना भी बहुत बड़ी चुनौती थी।

26 अप्रैल 1956 को, मैल्कम मैकलीन ने विश्व युद्ध टैंकर, 'आइडियल एक्स', को परिवर्तित किया और इस कंटेनर से लदे जहाज ने संयुक्त राज्य अमेरिका के पोर्ट नेवार्क से ह्यूस्टन तक की अपनी पहली यात्रा की। इसमें 58 मेटल कंटेनर बॉक्स के साथ–साथ 15,000 टन थोक पेट्रोलियम भी लदा था। इस तरह से 'आइडियल एक्स' को पहला कंटेनर–वाहक जहाज माना जाता है। 6 दिन बाद जब यह जहाज पोर्ट ऑफ ह्यूस्टन पहुंचा तो कार्गो से लदे कंटेनर वापस पोर्ट नेवार्क ले जाने के लिए मैकलीन की कंपनी को ऑर्डर मिलने लगे। मैकलीन का यह प्रयोग बेहद सफल रहा और उसकी कंपनी शीघ्र ही सी–लैंड सर्विसेज के नाम से प्रख्यात हो गई। विशेष रूप से कंटेनरों के परिवहन के लिए डिजाइन किए गए पहले जहाज 'सी–लैंड्स गेटवे सिटी' ने पोर्ट नेवार्क से मियामी के लिए 4 अक्तूबर 1957 को अपनी पहली यात्रा की। इसके बाद इस जहाज ने पोर्ट नेवार्क, मियामी, ह्यूस्टन और टाम्पा के बीच एक नियमित यात्रा शुरू की।

जब भी कोई प्रयोग सफल होता है तो तुरंत अन्य लोगों का ध्यान भी उस ओर चला जाता है। इसके दो साल बाद, मैट्सन नेविगेशन कंपनी ने प्रशांत महासागर में कंटेनर शिपिंग का प्रारम्भ किया, जिसमें 20 कंटेनर अल्मेडा से होनोलुलु तक ले जाए गए। कुछ ही समय बाद, जनवरी 1960 में ग्रेस लाइन द्वारा संचालित 'सांता एलियान', विदेशी व्यापार में प्रवेश करने वाला पहला पूर्ण रूप से कंटेनर वाहक जहाज बन गया। 23 अप्रैल 1966 को 'सी–लैंड्स फेयरलैंड' संयुक्त राज्य अमेरिका के पोर्ट एलीजाबेथ से नीदरलैंड्स के पोर्ट रोटेर्डम तक 236 कंटेनर के साथ यात्रा करने वाला पूर्णतः कंटेनर वाहक जहाज बन गया।

कंटेनरों का मानकीकरण

कंटेनर का मानकीकरण एक बेहद आवश्यक कार्य था जिसके बिना यह काम आगे नहीं बढ़ सकता था। पूरे विश्व में एक ही मानक आकार के कंटेनरों का बनाया जाना इसलिए भी आवश्यक था कि उनके अनुरूप जहाज, ट्रेन, ट्रक तथा अन्य मशीनरी जैसे क्रेन इत्यादि बनाए जा सकें। कंटेनरों के आकार को मानकीकृत करने की आवश्यकता इसलिए भी पड़ी ताकि उन्हें कुशलता से स्टैक किया जा सके। शाब्दिक रूप में कहें तो, एक के ऊपर एक कंटेनर रखे जा सकें। 1960 की शुरुआत में, पहले से ही कंटेनर शिपिंग के भविष्य की संभावनाओं को पहचानने वाले दूरदर्शी अंतर्राष्ट्रीय समूहों ने मानक कंटेनर के आकार को तय करने के लिए बातचीत शुरू कर दी थी, जिससे कि कंटेनर के आकार के हिसाब से बंदरगाहों पर जहाज, ट्रेन, ट्रक और क्रेन को विशेष रूप से फिट किया जा सके। अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आईएसओ) ने सभी कंटेनरों के लिए मानक निर्धारित किए, जो कि आज समूचे कंटेनर व्यवसाय पर लागू होते हैं। कंटेनरों के लिए आईएसओ मानक 1968 और 1970 के बीच इंटरनेशनल मैरिटाइम ऑर्गनाइजेशन (आईएमओ) द्वारा प्रकाशित किए गए थे। ये मानक दुनिया भर के बंदरगाहों में अधिक सुसंगत माल लदाई, परिवहन और माल उतराई की अनुमति देते हैं, जिससे समय और संसाधनों की बचत होती है।

कंटेनर के सुरक्षित संचालन और परिवहन पर अंतर–सरकारी समुद्री परामर्शदात्री संगठन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन फॉर सेफ कंटेनर्स 1972 का रेग्युलेशन है। यह तय करता है कि अंतर्राष्ट्रीय रूप से यात्रा करने वाले हर कंटेनर को सीएससी सेफ्टी–अप्रूवल प्लेट के साथ लगाया जाए। यह कंटेनर के बारे में सभी तरह की आवश्यक जानकारी रखता है, जिसमें कंटेनर का बनाए जाने का वर्ष, पंजीकरण संख्या, आयाम और वजन, साथ ही इसकी शक्ति और अधिकतम स्टैकिंग क्षमता शामिल है।

कंटेनर शिपिंग पारंपरिक शिपिंग से अलग है क्योंकि यह माल लादने, परिवहन करने और उतारने के लिए विभिन्न मानक आकारों के 'कंटेनरों' का उपयोग करता है–20 फुट (6.09 मीटर), 40 फुट (12.18 मीटर), 45 फुट (13.7 मीटर), 48 फुट (14.6 मीटर), और 53 फुट (16.15 मीटर)। नतीजतन, जहाजों, ट्रकों और ट्रेनों के बीच कंटेनरों को मूल रूप से स्थानांतरित किया जा सकता है। दो सबसे महत्वपूर्ण, और सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले आकार आज भी 20–फुट और 40–फुट की लंबाई वाले हैं। 20–फुट कंटेनर, जिसे ट्वेंटी–फुट इक्विवेलेंट यूनिट (टीईयू) कहा जाता है, अब टी.ई.यू. में मापे जाने वाले कार्गो वॉल्यूम और पोत क्षमता के साथ उद्योग की मानक इकाई बन गए हैं। 40 फुट की लंबाई वाला कंटेनर– वस्तुतः 2 टीईयू– चालीस फुट इक्विवेलेंट यूनिट (एफईयू) के रूप में जाना जाता है। 40 फुट की लंबाई वाला कंटेनर आज विश्व में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला कंटेनर है। कंटेनर की ऊंचाई सामान्य तौर पर आठ फीट छः इंच (8.6'') होती है लेकिन अभी अधिक ऊंचाई वाले कंटेनर भी प्रचलन में हैं, जिनकी ऊंचाई नौ फीट छः इंच (9.6'') होती है, इन्हें हाई क्यूब कंटेनर कहा जाता है।

कंटेनर के प्रकार

अपने आकार के अलावा कंटेनर के प्रकार भी अलग–अलग होते हैं। सामान्य कंटेनर को स्टैंडर्ड ड्राइ कार्गो कंटेनर कहा जाता है। इनके अलावा कुछ विशेष प्रकार के कंटेनर भी होते हैं जैसे ओपन एंड, ओपन साइड, ओपन टॉप, हाल्फ हाइट, फ्लैट रैक, रेफ्रीजरेटेड (रीफर), लिक्विड बल्क (टैंक) तथा मोडुलर। कंटेनर किसी भी प्रकार का हो लेकिन उसकी लंबाई और चौड़ाई अंतर्राष्ट्रीय मानक के हिसाब से सामान्य कंटेनर के बराबर ही होती है। इस समय विश्व में 34 मिलियन टी.ई.यू. से भी अधिक कंटेनर मौजूद हैं।

स्टैंडर्ड ड्राइ कार्गो कंटेनर का उपयोग सामान्य वस्तुएँ, यथा– अनाज की बोरियाँ, इलेक्ट्रोनिक सामान तथा अन्य सामान्य कार्गो को रखने के लिए किया जाता है।

ओपन टॉप तथा फ्लैट रैक कंटेनर का प्रयोग मशीनरी, वाहन तथा अन्य विषम आकार का कार्गो रखने के लिए किया जाता है। ओपन साइड का प्रयोग प्याज, लहसुन तथा आलू जैसी खराब हो जाने वाली वस्तुओं के परिवहन के लिए किया जाता है। टैंक कंटेनर का प्रयोग रसायन तथा अन्य तरल पदार्थों जैसे तेल इत्यादि के परिवहन के लिए किया जाता है। रीफर कंटेनर फ्रीजर की तरह काम करते हैं। इनमें दवाइयों और शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं को रखा जाता है। रीफर कंटेनर के अंदर के तापमान को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे इनके अंदर का सामान अपने उद्‌गम से गंतव्य स्थल तक सुरक्षित रहता है। आमतौर पर रीफर कंटेनर 40 फीट आकार के ही बनाए जाते हैं और सफेद अथवा हल्के स्लेटी रंग के होते हैं।

हर कंटेनर का अपना एक विशेष अंक होता है, जिसे बॉक्स नंबर कहा जाता है। इसी नंबर के आधार पर हर कंटेनर की कभी भी ट्रैकिंग की जा सकती है। दुनिया के किस कोने में आपका कंटेनर पड़ा है यह आप उसी तरह ट्रैक कर सकते हैं जैसे कूरियर कंपनी या भारतीय डाक सेवा से भेजे जाने वाली स्पीड पोस्ट को। कुछ कंटेनर शिपिंग कंपनी के स्वयं के होते हैं और कुछ कंटेनर वे लीजिंग कंपनी से लीज पर लेती हैं। कंटेनर के नंबर में पहले चार अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर होते हैं और अंतिम सात संख्यात्मक अंक होते हैं, जैसे भारतीय शिपिंग कंपनी– शिपिंग कार्पोरेशन ऑफ इंडिया का कंटेनर नंबर कुछ इस तरह से होगा एससीआईयू 1234567 और यूनाइटेड किंगडम की बालाजी शिपींग का कंटेनर नंबर होगा बीएलजेयू 1234567, इसी तरह हर कंपनी के कंटेनर नंबर अलग–अलग होते हैं, जिनसे कंटेनर की मालिक कंपनी तथा कंटेनर के आकार और प्रकार का पता चलता है। किस कंपनी का, कौन–सा कंटेनर, भरा या खाली, कितने दिन से, कहाँ पड़ा हुआ है, अपने विशेष नंबर के आधार पर यह जाना जा सकता है। कंटेनर नंबर कंटेनर के चारों ओर के अलावा ऊपर, नीचे तथा अंदर की ओर भी लिखा रहता है। अब आप सोचेंगे कि भला जब नंबर चारों तरफ से लिख दिया तो ऊपर और नीचे लिखने की भला क्या आवश्यकता है? पोर्ट पर कंटेनर को बड़ी–बड़ी क्रेन (जिन्हें आरटीजीसी या आरएमजीसी कहा जाता है) के द्वारा उठाया जाता है जिसमें ऑपरेटर ऊपर से ही कंटेनर का नंबर देखता है और सुपरवायजर नीचे का नंबर। इस तरह से सही नंबर के कंटेनर की जहाज, रेल या ट्रेलर पर उतराई या चढ़ाई संभव हो पाती है। इस तरह से काम करने से शायद दुनिया में लाखों करोड़ो में ही कोई एक कंटेनर गलत ठिकाने पर पहुंचता होगा। प्रत्येक कंटेनर को एक मानकीकृत आईएसओ 6346 रिपोर्टिंग चिह्न (स्वामित्व कोड) आबंटित किया जाता है, जो यू, जे या जेड में चार अक्षर तक समाप्त होता है, उसके बाद छह अंक और एक चेक अंक होता है। इंटरमॉडल कंटेनरों के लिए स्वामित्व कोड फ्रांस में ब्यूरो इंटरनेशनल डेस कंटेनर (अंतर्राष्ट्रीय कंटेनर ब्यूरो, बी.आई.सी.) द्वारा जारी किया जाता है, इसलिए इंटरमॉडल कंटेनर रिपोर्टिंग मार्क के लिए बी.आई.सी.–कोड नाम ही प्रयोग में लाये जाते हैं। अभी केवल 'यू' में समाप्त होने वाले केवल चार–अक्षर बी.आई.सी.–कोड ही प्रचलन में हैं।

कंटेनर का महत्व

कंटेनर एक तरह से एक बेहद सुरक्षित तिजोरी का काम करते हैं और इस तिजोरी में सेंध लगाना बेहद मुश्किल होता है। सर्दी, गर्मी और बरसात कोई भी मौसम हो इनके अंदर आपका सामान सुरक्षित रहता है और आप विश्व के किसी–भी कोने में आसानी से पहुंचा सकते हैं। कंटेनर शिपमेंट लंबी दूरी के लिए कार्गो परिवहन का सबसे लोकप्रिय तरीका है। 1956 से शुरू हुआ ये सफर निरंतर नित नई ऊंचाइयों को छू रहा है। जहाँ अपनी पहली यात्रा में कंटेनर शिप पर केवल 58 कंटेनर ले जाए गए थे वहीं इसी वर्ष जून 2020 में ''HMM ALGECIRAS'' नाम के 23,964 टीईयू कंटेनर क्षमता वाले कंटेनर शिप ने चीन से एसेक्स तक की अपनी यात्रा पूर्ण की। इस तरह कंटेनरों का कारवां बढ़ता ही जा रहा है। अब तो घरेलू ट्रांसपोर्ट के लिए भी लोग कंटेनर का प्रयोग करने लगे हैं। खुली मालगाड़ियों में या खुले ट्रक में अनाज ले जाने से होने वाली परिवहन हानि में भी कंटेनरों के प्रयोग से कमी आई है। लोग अपने घर का सामान एक शहर से दूसरे शहर तक ले जाने में भी कंटेनर का प्रयोग करने लगे हैं। पुराने कंटेनर में थोड़ा बदलाव करके उसमें खिड़की बनाकर और एयर कंडीशनर लगाकर ऑफिस की तरह भी प्रयोग किया जा रहा है।

आशा है कि भविष्य में यदि आपको कोई कंटेनर दिखाई देगा तो उसे आप एक साधारण रंगीन डिब्बा समझने की भूल नहीं करेंगे, बल्कि उसका आभार प्रकट करेंगे क्योंकि यही रंगीन डिब्बा आपकी भौतिकतावादी दुनिया को रंगीन बना रहा है।

भारत में कृषि के विकास में हिंदी का योगदान

राशिद परवेज*

भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारी जनसंख्या का लगभग 75 प्रतिशत भाग कृषि एवं उससे संबंधित कार्यो पर निर्भर रहता है। हमारी देश की राष्ट्रीय आय का लगभग एक तिहाई भाग कृषि क्षेत्र से आता है तथा अर्थव्यवस्था बहुत कुछ कृषि पर आधारित है। कृषि के विकास और देश के आर्थिक कल्याण के लिए भारत सरकार ने समय–समय पर कई योजनाओ को लागू किया है, जिससे किसान सीधे तौर पर लाभान्वित हुए हैं।

कृषि ऐसी नवप्रवर्तन शैली और कृषि पद्धति है जिसमें स्वदेशी ज्ञान के साथ–साथ आधुनिक ज्ञान, आधुनिक उपकरण तथा प्रत्येक पहलु जैसे खेत की तैयारी, खेत का चुनाव, खरपतवार नियंत्रण, पौध सरंक्षण, फसलोत्तर प्रबंधन, फसल की कटाई आदि जैसी महत्वपूर्ण कृषि पद्धतियों के उपयोग शामिल हैं। इस तरह की कृषि में संसाधनों का अनुकूलन होता है जिससे किसानों की दक्षता और उत्पादकता बढ़ती है।

भारत में कृषि प्राचीन काल मे पूर्ण रूप से विकसित नहीं थी और हम अपने लोगों के लिए पर्याप्त अन्न उत्पन्न नहीं कर पाते थे। भारत को अन्य देशों से अनाज खरीदने की जरूरत होती थी। आजादी के पहले हमारी कृषि बारिश पर निर्भर थी। इसके परिणामस्वरूप हमारा कृषि उत्पाद बहुत कम था। हम पूर्णता मानसून पर निर्भर थे अगर बारिश अच्छी होती थी तो हमें अच्छी फसल मिलती थी और यदि बारिश कम होती थी, तो फसलों की पैदावार खराब हो जाती थी जिसके चलते देश के कुछ हिस्सों में अकाल भी आ जाता था। भारत में निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण इसकी बढ़ती हुई मांग के अनुरूप पूर्ति ना कर पाना भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए एक चिन्ता का विषय था।

कृषि प्रगति में तेजी लाने के लिए यह और भी जरूरी था कि उन्नत तकनीकों, प्रजातियों व अनुसंधान परिणामों को शीघ्रता से किसानों तक पहुंचाया जाए। कृषि अनुसंधानों द्वारा विकसित तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाना हमेशा से एक बड़ी चुनौती रही हैं। अतः यह जरूरी है कि विकसित कृषि तकनीकि उचित माध्यम से कृषकों तक पहुंचे ताकि वह इससे अधिक लाभ आर्जित कर सकें। जिसमें कि राजभाषा हिन्दी की विशेष भूमिका साबित हुई। हमारे देश में कश्मीर से कन्याकुमारी, कच्छ से कोहिमा और लक्षद्वीप से कार निकोबार तक हिन्दी ही विचारों के आदान–प्रदान की सहज स्वीकार्य भाषा है। कृषि के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग नितांत आवश्यक है क्योंकि बहुसंख्यक किसान सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करते हैं। विश्व के तकरीबन 175 देशों में यह बोली समझी जाती है और विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में इसे पढ़ाया जा रहा है। राजभाषा के संबंध में संवैधानिक प्रावधान हैं। राष्ट्रपति महोदय ने 1960 में आदेश जारी किया। 1963 में राजभाषा अधिनियम बनाया गया। 1968 में राजभाषा संकल्प जारी किया गया। वर्ष 1976 में भारत सरकार ने राजभाषा नियम बनाए।

कृषि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग कई गुणा बढ़ रहा है और विभिन्न डिजिटल माध्यमों में हिन्दी ने अपनी उपयोगिता, प्रासंगिकता और वर्चस्व को स्थापित किया है। सरकार द्वारा हर तरह के संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। विभिन्न सॉफ्टवेयरों के विकास ने कृषि सूचना प्रौद्योगिकी को व्यावहारिक दृष्टि से बहुत आसान बना दिया है। इन सुविधाओं का कृषक भरपूर लाभ उठा रहे हैं।

कृषि तकनीकी क्षेत्रों से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली एवं विषयक शब्दावली के निर्माण और मानकीकरण के कार्य लगभग पूरे हो चुके हैं और इनमें दिन–प्रतिदिन विकास हो रहा है। परन्तु भविष्य में अभी और शब्दावली के नवीनीकरण करना होगा। जो भी कृषि तकनीकी प्रौद्योगिकी से संबंधित सुविधाएं आज अंग्रेजी में उपलब्ध हैं, उन्हें हिंदी में भी उपलब्ध कराना हमारा लक्ष्य होगा।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक में राजभाषा प्रभाग का गठन राजभाषा नीतियों और

*प्रधान वैज्ञानिक, सूत्रकृमि संभाग, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान सस्थांन, नई दिल्ली

राजभाषा अधिनियम 1963, 1967 में यथा संशोधित और राजभाषा नियम 1976 की प्रावधानों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए किया, जिसका उद्देश्य भारत सरकार की नीतियों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना और भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना था।

देश में हरित क्रांति अर्थात खाद्य निर्भरता से आत्म निर्भरता की ओर ले जाने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की महत्वपूर्ण भूमिका है। परिषद के अधीन संस्थानों द्वारा किये जा रहे अनुसंधान कार्य कृषकों को अधिक लाभान्वित करने के लिए होते हैं। अतः कृषि के विकास में जो भी नवीन अनुसंधान तकनीकें विकसित हुई हैं, वह बहुत सहज एवं सरल हिन्दी भाषा में कृषकों तथा आम जनता तक पहुँचाए जा रहे हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अधीन 100 से अधिक अनुसंधान संस्थानों द्वारा विभिन्न फसलों की विकसित प्रजातियों, खरपतवार नियंत्रण, फसल सरंक्षण, फसलोत्तर प्रबंधन, फसल की कटाई आदि जैसी महत्वपूर्ण कृषि पद्धतियों पर हो रहे नवीन शौध कार्यो को कृषकों तक पहुँचाने के लिए प्रत्येक संस्थान अपनी बार्षिक रिपोर्ट तथा अनुसंधान के मुख्य अंश के अतिरिक्त पत्रिका को हिन्दी मे प्रकाशित करता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अधीन प्रत्येक संस्थान अपनी अधिदेश फसलों से संबंधित सारी जानकारी युक्त पुस्तिका भी हिन्दी मे प्रकाशित करके किसानों तक विभिन्न माध्यमों जैसे, संस्थान की वेबसाइट, कृषि मेलों मे प्रदर्शनी, कृषि बिज्ञान केंद्र, राज्य कृषि विश्वविद्यालय तथा राज्य कृषि विभागों द्वारा पहुँचाए जा रहे हैं।

इसके साथ–साथ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कृषकों को हिन्दी के माध्यम से लाभ पहुँचाने वाले वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को उत्साहित करने के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों को देती है, जिससे वह अधिक ऊर्जा के साथ किसानों की भलाई के लिए कार्य कर सकें।

- राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार
- हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार
- गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार
- परिषद् के अधीनस्थ संस्थानों आदि में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढावा देने के लिए "राजर्षि टंडन पुरस्कार"

आज भारत अपनी आवश्यकताओं के मुकाबले अधिक अनाज का उत्पादन कर रहा है। कुछ खाद्यान्नों का अन्य देशों को निर्यात भी किया जाता है। अत्यधिक सुधार किये गये हैं। कृषि पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति लाई गई है। अब देश खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर हैं। यह अब अधिशेष अनाज और अन्य कृषि उत्पादों को दूसरे देशों में निर्यात करने की स्थिति में है। अब भारत को चाय और मूंगफली के उत्पादन में दुनिया में पहला स्थान प्राप्त है। वहीं चावल, गन्ना, जूट और तेल के बीज के उत्पादन में दुनिया में दूसरे स्थान पर है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारी कृषि को विकसित करने और कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। हमें अभी भी रुकना नहीं है, हमें अपनी कृषि अभी भी आगे बढ़ाने के लिए अपने प्रयासों को जब तक जारी रखना है, तब तक भारत में निरतर बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण इसकी बढ़ती हुई मांग के अनुरूप पूर्ति कर पाने में कामयाबी हासिल न कर ले।

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि कृषि प्रौद्योगिकियों को कृषकों तक पहुँचाने मे राजभाषा हिन्दी ने तेज गति प्रदान करने के साथ–साथ कार्यान्वयन में समयानुकूल जरूरतों के अनुसार सफलता प्रदान की है।

अध्याय 1– संघ की भाषा

अनुच्छेद 120– संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा।
अनुच्छेद 210– विधान–मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा।
अनुच्छेद 343– संघ की राजभाषा।
अनुच्छेद 344– राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति।

अध्याय 2– प्रादेशिक भाषाएं

अनुच्छेद 345– राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं।
अनुच्छेद 346– एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा।
अनुच्छेद 347– किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

माँ की ममता

डॉ0 विपुल जैन*

एक गरीब परिवार में एक सुन्दर सी बेटी ने जन्म लिया...
बाप दुखी हो गया बेटा पैदा होता तो कम से कम काम में तो हाथ बटाता,
उसने बेटी को पाला जरूर,
मगर दिल से नहीं....

वो पढ़ने जाती थी तो ना ही स्कूल की फीस टाइम से जमा करता,
और ना ही कापी किताबों पर ध्यान देता था...
अक्सर शराब पीकर घर में कोहराम मचाता रहता था.....

उस लडकी की माँ बहुत अच्छी व भोली भाली थी। वो अपनी बेटी को बडे लाड़ प्यार से रखती थी..
वो पति से छुपा–छुपा कर बेटी की फीस जमा करती।
और कापी किताबों का खर्चा भी देती थी..
अपना पेट काटकर फटे पुराने कपड़े पहन कर गुजारा कर लेती थी।
मगर बेटी का पूरा खयाल रखती थी...
पति अक्सर घर से कई कई दिनों के लिये गायब हो जाता था।

जितना कमाता था शराब में ही खर्च कर देता था...
वक्त का पहिया घूमता गया
बेटी धीरे–धीरे समझदार हो गयी..
दसवीं क्लास में उसका एडमिशन होना था।
माँ के पास इतने पैसै ना थे जो बेटी का स्कूल में दाखिला करा पाती..
बेटी डरडराते हुये पापा से बोली,
पापा मैं पढ़ना चाहती हूँ मेरा हाईस्कूल में एडमिशन करा दीजिए मम्मी के पास पैसे नहीं है...
बेटी की बात सुनते ही बाप आग बबूला हो गया और चिल्लाने लगा बोला, तू कितनी भी पढ़ लिख जाये तुझे तो चौका चूल्हा ही सम्भालना है, क्या करेगी तू ज्यादा पढ़ लिख कर..

*प्रतिनिधि, डेरावाल फार्मिंग कोआपरेटिव सोसाइटी लि0, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

उस दिन उसने घर में आतंक मचाया व सबको मारा पीटा।
बाप का व्यवहार देखकर बेटी ने मन ही मन में सोच लिया कि अब वो आगे की पढ़ाई नहीं करेगी....
एक दिन उसकी माँ बाजार गयी।

बेटी ने पूछा, माँ कहाँ गयी थी
माँ ने उसकी बात को अनसुना करते हुये कहा,
बेटी कल मैं तेरा स्कूल में दाखिला कराउंगी।
बेटी ने कहा– नहीं माँ मै अब नहीं पढूंगी। मेरी वजह से तुम्हें कितनी परेशानी उठानी पड़ती है। पापा भी तुमको मारते पीटते हैं, कहते कहते रोने लगी..
माँ ने उसे सीने से लगाते हुये कहा, बेटी मै बाजार से कुछ रुपये लेकर आयी हूँ मै कराऊँगी तेरा दाखिला..
बेटी ने माँ की ओर देखते हुये पूछा, माँ तुम इतने पैसै कहाँ से लायी हो??
माँ ने उसकी बात को फिर अनसुना कर दिया...
वक्त बीतता गया

...माँ ने जी तोड़ मेहनत करके बेटी को पढ़ाया लिखाया।
बेटी ने भी माँ की मेहनत को देखते हुये मन लगा कर दिन रात पढ़ाई की
और आगे बढ़ती चली गयी.....
इधर बाप शराब पी–पी कर बीमार पड गया,
परिवार वाले उसे डाक्टर के पास ले गये।
डॉक्टर ने कहा इनको टी.बी. है।

एक दिन तबियत ज्यादा गम्भीर होने पर बेहोशी की हालत में अस्पताल में भर्ती कराया..
दो दिन बाद उसे जब होश आया तो डाक्टरनी का चेहरा देखकर उसके होश उड़ गये।

वो डाक्टरनी कोई और नहीं बल्कि उसकी
अपनी बेटी थी..
शर्म से पानी–पानी हो गया बाप।
कपड़े से अपना चेहरा छुपाने लगा

और रोने लगा हाथ जोड़कर बोला, बेटी मुझे माफ करना मैं तुझे समझ ना सका...
बेटी तो आखिर बेटी ही होती है।
बाप को रोते देखकर बेटी ने बाप को गले लगा लिया..

किसी ने सही कहा है कि गरीबी और अमीरी से कोई फर्क नहीं पडता,
अगर इन्सान का इरादा हो तो आसमान में भी छेद हो सकता है।

एक दिन बेटी माँ से बोली, माँ तुमने मुझे आजतक नहीं बताया कि मेरे हाईस्कूल के एडमिशन के लिए पैसै कहाँ से लायी थी??
बेटी के बार–बार पूछने पर
माँ ने जो बात बतायी
उसे सुनकर
बेटी की रूह काँप गयी....
माँ ने अपने शरीर का खून बेच कर बेटी का एडमिशन कराया था....

इसलिए ही तो माँ को भगवान का दर्जा दिया गया है।
माँ, जितना औलाद के लिये त्याग कर सकती है, उतना दुनिया में कोई और नहीं..

हमारे जीवन में माँ के इतने परोपकार होते हैं कि अगर हम पूरे जीवन भी उसकी सेवा करें तो भी कम ही पड़ता है...

माँ वो सितारा है जिसकी गोद में जाने के लिए हर कोई तरसता है,
जो माँ को नहीं पूछते वो जिंदगी भर जन्नत को तरसते हैं।

मुझको ''मैं'' ने बहुत छला है

कविता

निर्भय नारायण गुप्त 'निर्भय'*

मुझको ''मैं'' ने बहुत छला है,
बहुत देर से पता चला है ।।

इसमें इतना उलझ चुका हूँ,
''मैं'' को अब मैं समझ सका हूँ ।
नयनों से इस पर परदा था,
अहम भाव जिससे भरता था ।।

मुझको देर हुई तब जाना,
इसके कारण सब बदला है ।।1।

''मैं'' अपनों से दूर ले गया,
मुझको कर मजबूर ले गया ।
अपने दूर हो गये मुझसे,
अलग हो गया हूँ मैं सब से ।।
टूट गये सम्बन्ध सभी से,
गया हृदय जैस कुचला है ।।2।

अपने, अनजान बहुत हैं,
मेरे भी अरमान बहुत हैं ।।
मधुर–मधुर संबंध रहे हैं,
नहीं कभी प्रतिबंध रहे हैं।।
जाने इस ने जकड़ लिया कब,
छूटा सब प्रिय और भला है ।।3।

जाने कब हावी हो जाता,
बिन जाने मन पर चढ़ आता ।
क्रोध दम्भ फिर सभी पकड़ते
मिथ्या लालच लोभ जकड़ते ।।
कोई समझ न पाये इसको,
ऐसी यह भी एक बला है ।।4।

मैं ही ''मैं'' को समझ न पाया,
भागूँ पीछे पकडूँ छाया।
लेकिन कहां पकड़ मैं पाया,
जब पकड़ा कुछ हाथ न आया ।।
मृग मरीचिका मैं भटकाये,
हर नहले पर, दहला है।।5।

*पूर्व उप महाप्रबंधक, 5/49, विकास खण्ड, गोमती नगर लखनऊ

यथार्थवादी कविः गजानन माधव मुक्तिबोध

डॉ. मीना राजपूत*

कवि अपने युग के जीवन का आईना होता है। वह अपने अनुभवों, विचारों और आंतरिक संवेदनाओं को अपनी विशिष्ट भाषा–शैली में पिरोता है और तात्कालीन मानव जीवन, समाज और युग के यथार्थ का साक्षात्कार कराने का महत्त कार्य करता है। प्रगतिशील और सतत संघर्षशील कवि गजानन माधव मुक्तिबोध भी एक ऐसे ही महान और लोकप्रिय कवि हैं, जिनके काव्य को एक अलग पहचान और उन्हें समाज में विशिष्ट सम्मान मिला। वे हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने छायावाद से अपनी काव्य रचना आरंभ की और वे प्रगतिवाद, प्रयोगवाद व नई कविता की युगधाराओं से जुड़े। साहित्य के प्रति समर्पित एवं प्रतिबद्ध मुक्तिबोध ने देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक गतिविधियों को सही ढंग से समझा, महसूस किया और लिपिबद्ध किया। उनके काव्य में युग की चेतना नए रूप, नई शैली और नए भाषा प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है, जो कि पूर्ववर्तियों की परंपरा से अलग, अनोखी और विशिष्ट है।

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार और छायावादोत्तर हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ स्तंभ मुक्तिबोध का जन्म 13 नवंबर, 1917 को शिवपुरी, जिला–मुरैना, ग्वालियर में हुआ था। माता का नाम पार्वती बाई था और वे बुंदेलखंड के एक किसान परिवार से थीं। मुक्तिबोध के पिता माधवराव ग्वालियर रियासत के पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत थे। वे बहुत ही आत्मिक, निर्भीक और न्यायनिष्ठ व्यक्ति थे। उन्हीं के व्यक्तित्व का प्रभाव था कि मुक्तिबोध में ईमानदारी, न्यायप्रियता और दृढ़ इच्छा शक्ति कूट–कूट कर भरी थी। कहा जाता है कि गजानन के किसी पूर्वज ने 'मुक्तिबोध' नामक आध्यात्मिक ग्रंथ लिखा था, जिसके आधार पर इस वंश का नाम 'मुक्तिबोध' चल पड़ा था। गजानन की शिक्षा–दीक्षा इंदौर में हुई, परंतु नौकरी उन्होंने इलाहाबाद, उज्जैन, कलकत्ता, जबलपुर, नागपुर, बनारस, भोपाल आदि कई शहरों में की और हर जगह आत्मसंघर्ष करते रहे। अपनी ईमानदारी और गैर–समझौतावादी स्वभाव के चलते वे किसी एक जगह टिक नहीं पाए। पत्रकारिता, समसामयिक राजनीति एवं साहित्य के विषयों पर लेखन में रुचि रखने वाले मुक्तिबोध ने स्कूल में अध्यापकी की, रेडियो में गए, रिपोर्टर रहे, पत्रिकाओं के संपादन से जुड़े। तत्पश्चात् हिंदी में एम.ए. किया और राजनांदगांव के दिग्विजय कॉलेज में प्रोफेसर हुए। व्यक्तिगत जीवन में बहुत ही सरल एवं जागरूक रहे गजानन माधव मुक्तिबोध आजीवन बीमार एवं संघर्षरत रहे।

कवि, कथाकार, उपन्यासकार, निबंधकार, आलोचक और साहित्यिक डायरी लेखक मुक्तिबोध की मुख्य साहित्यिक विधा कविता रही। विशेष रूप से उन्होंने कवि और कथाकार के रूप में ख्याति प्राप्त की। प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले सर्वाधिक चर्चित रचनाकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के संपादन में निकले 'तार सप्तक' से उन्होंने अपनी काव्य यात्रा आरंभ की। काव्य लेखन में उनकी अपनी विचारधारा, भावधारा और एक अनूठी भाव दृष्टि रही। समसामयिकता, अनुभूति की सत्यता, विचार की व्यापकता, विराट काल्पनिकता, संवेदनाओं की यथार्थता और अभिव्यक्ति की स्पष्टता उनके काव्य की विशेषता रही। मानवतावाद, रहस्यवाद, अस्तित्ववाद, राष्ट्रप्रेम के सहज चित्रण सहित मूल्यों, सत्यों और तथ्यों के लिए निरंतर संघर्ष उनके काव्य में स्पष्ट झलकता है।

सरल भाषा और औजपूर्ण भावनाओं के अनूठे हिंदी रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीयता शैली और सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा की रहस्यात्मक शैली का मुक्तिबोध की कविताओं पर विशेष प्रभाव पड़ा। जीवन–दृष्टि और काव्य–दृष्टि मार्क्सवादी

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

होने के कारण अपनी कविताओं के माध्यम से पूँजीवादी व्यवस्था की विद्रूपताओं, सामाजिक व आर्थिक विषमताओं, राजनीतिक विसंगतियों व विडंबनाओं, अन्याय व अत्याचार आदि पर खुलकर प्रहार किया। आत्मसंघर्ष, अंतःकरण और आत्माभियोग के हिमायती रहे सजग, समर्थ और संघर्षधर्मी मुक्तिबोध का काव्य इतिहास–बोध और जीवन–बोध कराता है, जीवन–मूल्यों व जीवन–आदर्शों को प्रतिस्थापित करता हुआ निरंतर मुक्ति–मार्ग की ओर अग्रसर करता है।

मुक्तिबोध की कविता का मूल कथ्य वह संघर्ष है जो आत्मसंघर्ष के माध्यम से बाह्य संघर्ष की ओर अग्रसर होता है। उनकी कविता आत्मसंघर्ष और आत्ममंथन के आधार पर कभी अद्‌भुत् संकेत करती है तो कभी उन संकेतों का विश्लेषण करती है। आत्ममंथन का बारंबार प्रयास करती उनकी 'ब्रह्मराक्षस' कविता की पंक्तियाँ देखिए–

वह ज्योति अनजानी सदा को सो गयी,
यह क्यों हुआ !
क्यों यह हुआ !!
मैं ब्रह्मराक्षस का सजल–उर शिष्य
होना चाहता
जिससे कि उसका वह अधूरा कार्य,
उसकी वेदना का स्रोत
संगत, पूर्ण निष्कर्षों तलक
पहुँचा सकूँ।

'अंधेरे में' कविता के माध्यम से मुक्तिबोध की पूँजीवादी समाज की विद्रूपताओं के विरूद्ध तीव्र सामाजिक प्रतिक्रिया उनके गहरे अंतर्द्वंद, आंतरिक पीड़ा और व्यथा के साथ कुछ इस तरह अभिव्यक्त हुई है–

कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूँ
वर्तमान समाज चल नहीं सकता
पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता।

शोषक पूँजीपति समाज के दोगले स्वभाव के प्रति मुक्तिबोध की ग्लानि और घृणा से उपजी भर्त्सना को उजागर करती 'पूँजीवादी समाज के प्रति' कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ शोषितों–पीड़ितों को उससे मुक्ति पाने के लिए सामूहिक शक्ति एकत्रित करने का आह्वान करती प्रतीत होती हैं–

छोड़ो हाय, केवल घृणा और दुर्गंध
तेरी रेशमी वह शब्द–संस्कृति अंध
देती क्रोध मुझको, खूब जलता क्रोध
तेरे रक्त में भी सत्य का अवरोध
तेरे रक्त में भी घृणा आती तीव्र
तुझको देख मितली उमड़ आती शीघ्र
तेरे ह्रास में भी रोग – कृमि हैं उग्र
तेरा नाश तुझ पर क्रुद्ध, तुम पर व्यग्र।

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जीवन और व्यक्ति की संश्लिष्ट जीवन परिस्थितियों के बारे में अपनी पीड़ा को 'मुझे भ्रम होता है कि' कविता के माध्यम से मुक्तिबोध ने इस तरह अभिव्यक्ति दी है–

ओ मेरे आदर्शवादी मन
ओ मेरे सिद्धांतवादी मन
बहुत–बहुत ज्यादा लिया
दिया बहुत–बहुत कम
मर गया देश, अरे, जीवित रह गए तुम।

मुक्तिबोध ने मानव के सुख–दुःख, निराशा, टूटन आदि संवेदनाओं को अपने काव्य में स्थान देने के साथ उससे मुक्ति का मार्ग भी बताया है। अन्याय न सहने व उसके विरूद्ध संघर्ष करते रहने के लिए 'सत्य के गरबीले अन्याय न सह' कविता की पंक्तियाँ–

किंतु पहले तू सिद्ध कर
अपनी ही आँखों में अपनी तस्वीर को व उनकी तस्वीर को फिर, समुद्‌घाटित कर न्याय की किरणों में जीवन की पीर को
मिथ्या के अंधतम कुहरे को चीरकर
सुनहली धूप–सा निखर उठ
लोकजीवन के सूरज को प्रणाम करता हुआ
अन्याय को चुनौती दे कि उभर उठ !!

'जन–जन का चेहरा एक' कविता में मुक्तिबोध के भावों की अभिव्यक्ति संयत और स्वाभाविक रूप में हुई है–

संग्राम का घोष एक,
जीवन–संतोष एक।
क्रांति का, निर्माण का, विजय का सेहरा एक,
चाहे जिस देश, प्रांत, पुर का हो
जन–जन का चेहरा एक।

मुक्तिबोध की काव्य–भाषा भी उनकी विचारधारा की विशिष्टताओं की तरह यथार्थ व मौलिक है। उन्होंने अपने काव्य में अप्रतिम भाषा और विशिष्ट शिल्प का प्रयोग किया है। आवेग, ध्वनि, इंद्रिय–बोध, कल्पना, चित्रात्मकता, प्रतीकात्मकता, सटीक शब्द प्रयोग मुक्तिबोध की काव्य भाषा के प्राण हैं। भावों व विचारों की सशक्त व सार्थक अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने अरबी, फारसी, अंग्रेजी, मराठी आदि भाषाओं तथा उसके तत्सम–तद्भव रूपों का निःसंकोच प्रयोग किया। विचार तत्व की प्रधानता के अनुरूप शब्दों के सौंदर्य की अपेक्षा उन्होंने शब्दों के अर्थ पर विशेष जोर दिया। जीवन और जगत के विभिन्न क्षेत्रों से उठाए गए सटीक शब्द उनकी कविता के लिए ही नहीं वरन् समूची हिंदी कविता के लिए एक बड़ी उपलब्धि हैं। भाषा चयन के स्थान पर भाषा गढ़ने की मुक्तिबोध की विशेषता के संबंध में लेखिका डॉ. ललिता अरोड़ा का कहना है, 'मुक्तिबोध की भाषा कभी संस्कृतनिष्ठ सामाजिक पदावली की अलंकृत वीथिका से गुजरती है तो कभी अरबी, फारसी, उर्दू के नाजुक लचीले हाथों को थामकर चलती है, तो कभी अंग्रेजी की इलैक्ट्रिक ट्रेन पर बैठकर जल्दी से खटाक–खटाक कर निकल जाती है।''

स्वयं मुक्तिबोध के अनुसार– ''कवि भाषा का निर्माण करता है, विकास करता है, वह निःसंदेह महान होता है। भाषा एक जीवित परंपरा है, जो निरंतर चलती रहती है। भाषा एक सामाजिक निधि है, जो साहित्य में रचनाकार की अनुभूति के रूप में उतर साहित्य जगत को रौशन करती है।'' मुक्तिबोध का मानना है कि– ''कलाकार को शब्द साधना द्वारा नये–नये भाव और नये अर्थ स्वप्न मिलते हैं'', जिसे उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से चरितार्थ भी किया है।

मुक्तिबोध के काव्य में विशेषणों का भी प्रचुरता से प्रयोग हुआ है, उदाहरणार्थ– अंगार–राग मर्मर, आलिंगन उत्सुक–बांहें, उत्सुक–शाखां, औदार्य स्निग्ध–पत्ते, गहन–क्षितिज, गहरी–तृषा, गहरी–दरार, दृढ़–अनुभव, नया–भार, नव नवल–लता, नील शांत–कोना, मधु–आवाह्न, व्यापक–अभाव, श्यामल–तना, सहचर–मित्र, सहस्त्र–डालें, स्नेह मुग्ध–चेतना, स्नेह हरित–वेदना, हरी–आग, हरी–ज्वाला, हरी–दीप्ति, हरे–मेघ, हरे–वृक्ष इत्यादि।

अभिव्यक्ति की सारगर्भिता के लिए मुक्तिबोध ने मुहावरों का प्रयोग भी किया। शब्दों में मितव्ययता और सघनता के लिए नये मुहावरे भी गढ़े, यथा– अपना गणित करना, ऑख फाड़कर देखना, ऑखों देखी, आइना होना, आह लेना, उर में तिर आना, उल्लू का पट्ठा होना, केंचुली उतारना, गुल करना, जमाना सख्त होना, जमाना सांप का काटा, जिंदगी के झोल, जी तोड़ मेहनतकश, टूट पड़ना, थाह लेना, दॉत किटकिटाना, दॉत पीसना, दिमाग की मोरी में पानी डालना, दिल की बस्ती उजाड़ना, देवदासी चोलिया उतारना, धर लिया जाना, बौद्धिक सींग उगना, भाग खड़े होना, भौंहें चढ़ाना, मछलियॉ मारना, मन टटोलना, मूठ मारना, रास्ता काटना, लार टपकना, सच्चाई की ऑख निकलना, सिट्टी–पिट्टी गुम होना, सिर फिरना, हार का बदला चुकाना, हृदय की लुटिया होना आदि। मुक्तिबोध के मुहावरों के प्रयोग के बारे में देश भक्त व राष्ट्र चिंतक कवि नारायण मौर्य के विचार हैं– ''मुक्तिबोध की काव्य भाषा की बहुत बड़ी शक्ति है– मुहावरों का प्रयोग। इतने सटीक और सहज अर्थ देने वाले मुहावरों का प्रयोग आधुनिक हिंदी काव्य में कम हुआ है। ये मुहावरे अपने आप में काव्य की एक इकाई से लगते हैं।''

मुक्तिबोध ने अपने काव्य में जीवन से संबंधित क्रियाकलापों एवं दैनिक घटनाओं का वर्णन करने के लिए सामान्य जीवन से कई अछूते प्रतीकों का भी साभिप्राय तथा स्थितियों व भावों के अनुकूल नए संदर्भों में प्रयोग किया है। उनके ये अनूठे प्रतीक यथार्थ को आकार प्रदान करते हैं और उनकी मार्क्सवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके काव्य में अंधेरा–भय का प्रतीक है, अंधेरा तालाब–मस्तिष्क का, अरुण कमल–नई अर्थवत्ता, ओरॉग–उटॉग–व्यक्तिवाद, गगन में सुनहरे कमल–आशा, गिद्ध–सत्ता से जुड़े प्रतिष्ठित अहंवादी, घुग्गू (उल्लू)–पूँजीवादी व्यवस्था के वाहकों व शोषणजीवी व्यवस्था का प्रतीक है। चाँद–पूँजीवादी व्यवस्था व उसके राजतंत्र तथा ज्ञान व चेतना का प्रतीक है, तो चाँदनी–फैशनेबल नारी का प्रतीक है। जहाज–संगठित विरोध के साहसी समाज का, टीला–मध्य वर्ग का प्रतीक है। डालियों की टकराहट–मानसिक संघर्ष, नाचती बिजलियॉ –क्रांतिकारी विचार, बावड़ी–निराशा, ब्रह्मराक्षस–आज के बाह्य व आंतरिक संघर्षों के बीच पिसते हुए मानव का

प्रतीक है। भैरों–विद्रोही राजनीतिक चेतना, मसखरी चाँदनी –गुप्तचर, लाल–लाल मशाल–क्रांतिकारी जागरूक विचार तथा वानर–जनवादी क्रांति का प्रतीक है। शिवाजी अन्याय, अत्याचार, तानाशाही के विराधी विद्रोही व्यक्तित्व का प्रतीक है। सागर–शोषणजीवी व्यवस्था और उसके राजतंत्र का प्रतीक है। सूर्य–समाजीकरण के विचार पुंज सहित सत्ता पोषित अहंवादी बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतीक है। उसी प्रकार कंडे की लाल आग, ईमान का डंडा, अभय की गेती आदि शोषित जीवन के प्रतीक हैं। मुक्तिबोध ने एक ही प्रतीक को विभिन्न रूपों में भी प्रयुक्त किया है। 'अंधेरे में' कविता में बरगद परंपरा बोध और विषादमय जीवन के प्रतीक के साथ शोषित और उत्पीड़ित के सहयात्री और आश्रय के प्रतीक के रूप में चित्रित है–

यही सही है कि चिलचिला रहे फासले
तेज दुपहरी भरी
सब ओर गरम दाह–सा रेंगता चला
काला–बांका–तिरछा
पर, हाथ तुम्हारे में जब भी मित्र का हाथ
फैलेगी बरगद–छाँह वहीं।
भयंकर बरगद –
सभी उपेक्षितों, समस्त वंचितों,
गरीबों का वही घर, वही छत
उसके ही तल–खोह–अँधेरे में सो रहे
गृहहीन कई प्राण।

मुक्तिबोध के ध्वनि, गति आदि के अनूठे बिंब किसी दृश्य या अनुभूति का समूचा चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित कर उसका प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराने के साथ भाषा को गति एवं सक्रियता प्रदान करते हैं। 'अंधेरे में' कविता की इन पंक्तियों के जीवंत और सार्थक बिंब के माध्यम से भाव चित्र उपस्थित हुआ है–

तालाब के आस–पास अंधेरे में वन–वृक्ष
चमक–चमक उठते हैं हरे–हरे अचानक
वृक्षों के शीश पर नाच–नाच उठती हैं बिजलियाँ,
शाखां, डालियाँ झूमकर झपटकर

चीख, एक दूसरे पर पटकती हैं सिर कि अकस्मात –
वृक्षों के अंधेरे में छिपी हुई किसी एक
तिलस्मी खोह का शिला–द्वार
खुलता है धड़ से।

मुक्तिबोध की दमदार, अर्थपूर्ण और चित्रमय भाषाभिव्यक्ति के बारे में शिक्षाविद् एवं हिंदी के आधुनिक कवि जगदीश गुप्त के उद्‌गार हैं, ''मैं उनकी कविताओं को पढ़कर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के अनुरूप रूपकों, प्रतीकों, बिंबों की परिकल्पना करते हुए सशक्त भाषा गढ़ी है। अतः जितने अंशों में उनकी अभिव्यक्ति सफल हुई है, उतने अंशों में वे अपनी मान्यता के अनुरूप महान कहलाने के हकदार हैं।''

मुक्तिबोध की कविताओं में उपमा, रूपक अलंकार, बिंब, प्रतीक एक साथ मिलकर फैंटेसी अर्थात् स्वप्न कथा शैली के विविध रूपों से अभिव्यक्त हुए हैं। उनके ये यथार्थ और काल्पनिक दृश्य इतने घुलमिल गए हैं कि उन्हें अलगाया नहीं जा सकता। 'ब्रह्मराक्षस' की फैंटेसी से रहस्यमय वातावरण, जिज्ञासा और कौतुहल उत्पन्न होता है–

शहर के उस ओर खंडहर की तरफ
परित्यक्त सूनी बावड़ी
के भीतर
ठंडे अंधेरे में
बसी गहराइयाँ जल की . . . .
सीढ़ियाँ डूबी अनेकों
उस पुराने घिरे पानी में . . . . .
समझ में आ न सकता हो
कि जैसे बात का आधार
लेकिन बात गहरी हो।

'चाँद का मुँह टेढ़ा है' कविता में वर्गहीन समाज की परिकल्पना अभिधात्मक रूप में व्यक्त हुई है–

मेरे सभी नगरों और गांवों में
सभी मानव
सुखी, सुंदर व शोषणमुक्त
कब होंगे?

मुक्तिबोध के काव्य का सशक्त माध्यम उनकी व्यंग्यात्मक भाषा शैली भी है। उनकी अधिकतर कविताएं व्यंग्य की पैनी धार पर यथार्थ को उद्‌घाटित करती हैं, जिसके कारण उनकी कविताओं में रोचकता और जिज्ञासा

भी निरंतर बनी रहती है। मुक्तिबोध ने 'मुझे कदम–कदम पर' कविता में सामान्य–जन की विवशता पर इस प्रकार व्यंग्य किया है–

अजीब है जिंदगी !
बेवकूफ बनने की खातिर ही
सब तरफ अपने को लिए–लिए फिरता हूँ,
और यह देख–देख बड़ा मजा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ.....

मुक्तिबोध ने अलंकारों का प्रयोग काव्य सौंदर्य में वृद्धि करने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि काव्याभिव्यक्ति को सरल व प्रभावी बनाने के लिए स्वाभाविक रूप से किया है। कविताओं को छंदों में न बांधकर मुक्त छंद की सटीक व सहज ग्राह्य भाषा का प्रयोग किया है। इस कारण उन्हें कबीर और निराला परंपरा को आगे बढ़ाने वाला काव्य प्रेरक भी माना जाता है। मुक्तिबोध की कविताओं के बारे में आधुनिक हिंदी कविता के प्रगतिशील कवि शमशेर बहादुर सिंह ने लिखा है– 'इनमें लय और सुर–ताल की बारीकियाँ न ढूँढो। ये लिपियों की बारीकियॉ नहीं, इनमें विचार गुनगुनाते हैं। इनमें तस्वीर बहुत ही जागे हुए होश की हैं।'

मुक्तिबोध ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं को अपनी लेखनी से समृद्ध बनाया। 'काठ का सपना', 'विपात्र' और 'सतह से उठता आदमी' मुक्तिबोध के 2 प्रसिद्ध कहानी–संग्रह हैं। 'नई कविता का आत्म–संघर्ष', 'नए साहित्य का सौंदर्य शास्त्र', 'समीक्षा की समस्याएं', 'एक साहित्यिक की डायरी' और 'कामायनीः एक पुनर्विचार' इनके समीक्षा ग्रंथ हैं। 'चॉद का मुँह टेढ़ा है' और 'भूरी–भूरी खाक धूल' इनके काव्य–संग्रह है। कुछ कविताएं 'तार सप्तक' में भी संकलित हैं। उन्होंने 'भारतः इतिहास और संस्कृति' इतिहास, 'मुक्तिबोध रचनावली' (7 खंड) और निबंध भी लिखे हैं। हिंदी के प्रमुख कवि, समीक्षक, विचारक एवं विदेशी कवियों के अनुवादक गिरिधर राठी के शब्दों में, ''कविता, कहानी, आलोचना, पत्र, निबंध, डायरी जिस किसी विधा को मुक्तिबोध ने छुआ, अपनी छाप छोड़ी. . . . .''

जीवन में सफलता नहीं, सार्थकता चाहने वाले मुक्तिबोध के संबंध में विशुद्ध आलोचना के प्रतिष्ठापक तथा प्रगतिशील आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षर डॉ. नामवर सिंह ने कहा है– ''मुक्तिबोध उन कवियों में से हैं जो अपने युग के सफल कवि नहीं, बल्कि सार्थक कवि कहलाने योग्य हैं।''

17 फरवरी, 1964 को मुक्तिबोध को पक्षाघात हुआ। 8 महीने मृत्यु से जूझने के पश्चात 11 सितंबर, 1964 को संवेदनशील, सशक्त व यथार्थवादी कवि मुक्तिबोध का स्वर्गवास हो गया। कहा जाता है कि मुक्तिबोध के जीवनकाल में उनकी केवल एक किताब 'एक साहित्यिक की डायरी' प्रकाशित हुई थी, तथापि आज वे कवि, कथाकार, उपन्यासकार, निबंधकार, आलोचक, साहित्यिक डायरी लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त हैं। जुझारू, प्रगतिशील तथा रचनाकारों के महान प्रेरणा स्रोत गजानन माधव मुक्तिबोध का काव्य आज के युग में भी सामयिक, शाश्वत, अटल और प्रासंगिक है।

पेड़-पौधों की जुबानी

बलवंत रंगीला*

फल फूल छाया देता हुआ औरों के लिए जीता हूँ मैं
पर्यावरण शुद्ध करता हुआ प्रदूषण का जहर पीता हूँ मैं
वृक्ष संसार को सर्वस्व त्याग का पैगाम देते हैं
पत्थर मारने पर भी किसी को नहीं इल्जाम देते हैं
हम वो फूलों से मुस्कराते चेहरों पर फिदा रहते हैं
परवाह नहीं, दुनिया वाले दिल वालों को क्या–क्या कहते हैं
पाकर फूलों और कलियों को अचानक अपने सामने
एक शब्द भी तारीफ का मुँह से निकला नहीं
मैं पूरी तरह से बेजुबान होकर रह गया।
देखने लगा एक टक और देखता ही रह गया
कुछ न कुछ मिलेगा ही कलियों की महफिल में
फूल पौधों ने जगह बना ली है अपनी हर दिल में
मैं देखता चला गया उपवन के एक–एक फूल को
और लिखता चला गया परोपकार भरी कहानियाँ
चाँद चाँदनी की दौलत लुटाता है हर रात
मरहम लगाता और सहलाता है वियोगियों के गात
गुन–गुनाती हवा सुनती नहीं है, किसी की बात
रंगीला दिलो दिमाग में क्यों देती खुशियों की बरसात।

*जी–97 सरिता विहार, नई दिल्ली

जन-जन से यह कहना है, वृक्ष धरा का गहना है...!

प्रशांत कृष्णकुमार तायडे*

आप सभी को पता ही होगा कि भारत का रोड नेटवर्क काफी अच्छा है। भारत दुनिया में सड़क की लंबाई के मामले में संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरे नंबर पर है। मैं कुछ निजी कार्य करने हेतु छुट्टी लेकर बस से घर जा रहा था। रास्ते में लगभग सभी जगह काम शुरू था। महाराष्ट्र में तो बड़े जोर–शोर से रास्तों को चौड़ा करने का कार्य चल रहा है। सभी मामलों में भारत हाई–टेक हो रहा है, इस बात से हम सहमत हैं। सच में, हम हाई–टेक हो रहे हैं, तभी तो हम अन्य विकसित देशों की तरह आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए पेड़ों को काटने के बजाय उन्हें शिफ्ट करने का सरकार द्वारा विचार किया जा रहा है।

वन मंत्री सुधीर मुनगंटीवार द्वारा महाराष्ट्र में एक मुहीम 2016 में शुरू की गई थी। तदनुसार पूरे राज्य में 2 करोड़ 81 लाख 38 हजार 634 पेड़ लगाए गए। मुहिम का नाम ''लिमका बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड'' में दर्ज हुआ। तीन साल में 50 करोड़ पेड़ लगाने का संकल्प वन मंत्री सुधीर मुनगंटीवार द्वारा लिया गया है, यह एक प्रशंसनीय बात है। उत्तराखंड में पर्यावरण संरक्षण को संस्कृति से जोड़ने के लिए पारंपरिक पर्व 'हरेला' को "आओ मनाए हरियाला" अभियान के रूप में चलाया जा रहा है। तत्कालीन मुख्यमंत्री हरीश रावतजी ने कहा कि, प्रत्येक गांव में हरियाला प्रतिस्पर्धा आयोजित की जायेगी, जिससे जन सहभागिता में वृद्धि होगी तथा तीन साल वृक्ष (पौधे) की रक्षा का दायित्व वृक्ष रोपित करने वाले व्यक्ति का होगा, तीन वर्ष सुरक्षित रहने पर 300/– रु. प्रति वृक्ष दिए जाने की घोषणा भी की गयी। इससे भारत को हरित भारत बनाने में जरूर बढ़ावा मिलेगा। उत्तरप्रदेश में भी वृक्षारोपण महाकुंभ की शुरुआत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा की गयी है तथा वनमंत्री दारा सिंह चौहान जी ने निःशुल्क पौधे वितरण की घोषणा की है। इस तरह लगभग संपूर्ण भारत में वृक्षारोपण अभियान शुरू है।

भारत जैसे प्रकृति पूजक देश में पर्यावरण पर संकट आना गंभीर विषय है। पर्यावरणिक समस्या से निपटने में वृक्षारोपण एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने में सक्षम है। भारतीय इतिहास के ऐसे वृक्षारोपण के कई उदाहरण हैं जिसमें वृक्षारोपण कार्य सद्भावना, निष्ठा एवं आनंदमयी तरीके से किया जाता था। हमें इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

आपको शायद पता होगा कि वृक्षारोपण का इतिहास कितना दिलचस्प है। अग्निपुराण में तो वृक्षारोपण को एक पवित्र मांगलिक समारोह के रूप में बताया गया है। पौधों को रोपने के पूर्व उन्हें औषधीय पौधों के रस से नहलाया जाता था या कुछ समय के लिए डुबोया जाता था।

*अधीक्षक, सेन्ट्रल वेअरहाउस, वाशिम

इसके पीछे भावना यही होती थी कि पौधे में यदि कोई संक्रमण वगैरह हो तो समाप्त हो जाए एवं पौधे से एक स्वस्थ पेड़ बने। इसके बाद शीर्षस्थ भागों पर, जहां से वृद्धि होती है, वहां सोने की सलाई से हल्दी कुंकु लगाकर अक्षत से पूजा की जाती थी।

गुजरात के अहमदाबाद पर 52 वर्षों तक शासन करने वाले सुल्तान मोहम्मद बेगड़ा ने 60 हजार से ज्यादा वृक्षारोपण किया था। बेगड़ा के शासनकाल में वर्षा के दिनों में 15 दिनों तक वृक्षारोपण का महोत्सव मनाया जाता था। राजा स्वयं अपने परिवार के साथ वृक्षारोपण स्थल पर रहते थे। शुभ मुहूर्त में खोदे गए गड्ढ़ों में बैंड–बाजों की धुन के साथ इमली, चंदन, अशोक, पीपल तथा नीम आदि के पौधे सावधानीपूर्वक रोपे जाते थे। वन माह की अंतिम पूर्णिमा के दिन जब समारोह का समापन होता था, उस समय एक घंटे में अधिक से अधिक पौधे रोपने वाली युवती को 'वृक्षों की रानी' नाम की पदवी से सम्मानित किया जाता था।

बंगाल में बंग पंचांग का चलन ज्यादा है जिसके तहत बाइशे श्रावण यानी सावन की बाईसवीं तिथि का काफी महत्व है। शांति निकेतन में भी इसी दिन वृक्षारोपण किया जाता था। शांति निकेतन में गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम जीवंतता एवं प्रसन्नता का प्रतीक था। इसी आयोजन के कारण आज शांति निकेतन में सैकड़ों वृक्ष हैं। वृक्षारोपण के दिन सभी लोग सज–धज कर आते थे। लड़के बसंती रंग के कुर्ते व धोतियां पहनकर कमर में दुपट्टा व सिर पर बसंती रंग का कपड़ा बांधते थे। महिलाएं तथा लड़कियां भी बसंती घाघरा व साड़ी पहनकर गले में फूलमालाएं व बालों में गजरे सजाती थीं। सभी लोग एक जगह एकत्र हो कर फिर एक जुलूस के रूप में नाचते–गाते पूरे परिसर में घूमते थे।

पर्यावरण को बेहतर बनाने में वृक्ष मदद करते हैं। ये हवा को शुद्ध करते हैं, पानी को संरक्षित करते हैं, मिट्टी की शक्ति को बरकरार रखते हैं, जलवायु नियंत्रण में रखते हैं और कई अन्य तरीके से पूरे पर्यावरण को लाभ पहुंचाते है। यही कारण है कि वृक्षारोपण के महत्व पर समय–समय पर जोर दिया गया है। पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण की वजह से वृक्षारोपण की आवश्यकता इन दिनों और अधिक हो गई है। वृक्षारोपण से तात्पर्य वृक्ष लगाना और हरियाली बढ़ाना है। पर्यावरण के लिए वृक्षारोपण की प्रक्रिया महत्वपूर्ण है। अगर हम वास्तव में जीवित रहना चाहते है और अच्छे जीवनयापन करना चाहते हैं तो अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाने चाहिए। ऑक्सीजन छोड़ने और कार्बन डाइऑक्साइड लेने के अलावा पेड़, पर्यावरण से अन्य हानिकारक गैसों को अवशोषित करते हैं जिससे वायु शुद्ध और ताजा बनती है।

केंद्रीय भंडारण निगम के परिसर में भी मानसून से पहले वृक्षारोपण किया जाता है तथा उनकी सुरक्षा हेतु उचित प्रयास भी किए जाते हैं। आज वृक्षारोपण केवल प्रशासनिक कार्यक्रम ही नहीं है, बल्कि समूची सृष्टि को बचाने के लिए एक आंदोलन हो गया है। भावी पीढ़ी के लिए जल, जंगल और जमीन बचाने की चुनौती को ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार ने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। महाराष्ट्र के सद्गुरू ने नदियों के किनारे वृक्षारोपण का संकल्प लिया है जो नदियों को बचाने में मददगार साबित होगा।

वृक्षारोपण को लेकर अब लोगों की मानसिकता में बदलाव देखा जा रहा है। लोग जन्मदिन और मंगल कार्यक्रमों में भी वृक्षारोपण करने लगे हैं, जो अच्छे बदलाव की नई शुरूआत है। इसका एक अच्छा उदाहरण केंद्रीय भंडारण निगम में भी देखा जा सकता है, जिसे मैंने अनुभव किया है। जब मैं केंद्रीय भांडागार, अकोला–2 में था तब वहाँ हर कर्मचारी अपने जन्मदिन पर एक पौधा लगाया करता था, इसी कार्यक्रम को मैंने अभी भी जारी रखा है। अब मेरे द्वारा केंद्रीय भांडागार, वाशिम में वह प्रथा का आरंभ किया गया है। केंद्रीय भांडागार– अकोला, वाशिम, अमरावती, मिरज, सांगली, कोल्हापुर, नांदेड और लगभग सभी भांडागारों में वृक्षारोपण किया जाता है। सामान्यतया हम कह सकते हैं कि वृक्षारोपण हमारे जीवन में अत्यंत लाभप्रद व सहायक है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने आस–पास पेड़–पौधे लगाने चाहिए और उनकी ठीक–ठीक प्रकार से देखभाल करनी चाहिए। यह पृथ्वी हमारी है, इस पर हमारा पूर्णतः अधिकार है। इस नाते हमें इसका पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। भविष्य हमारा खुशहाल बनेगा, अगर आज से वृक्ष बचेगा.....! सभी स्तरों में सकारात्मक बदलाव आने से पर्यावरण सुरक्षित होने की आशा है, तो आइए हम सभी पर्यावरण सुरक्षित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

हिंदी फोनेटिक की-बोर्ड पर कार्य कैसे करें ?

नम्रता बजाज*

पिछले अंक में हमने आपकों विभिन्न माध्यमों से यूनिकोड टाइपिंग के विषय में बताया था। अब इसी शृंखला को आगे बढ़ाते हुए हम आपको एक नए टूल के विषय में अवगत कराना चाहते हैं जिससे आप न केवल हिंदी में अपितु बंगला, तमिल, मराठी, पंजाबी, गुजराती, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम जैसी 10 भारतीय भाषाओं में भी आसानी से टाइप कर सकते हैं।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि कंप्यूटर में इंडिक ट्रेडिशनल इंस्क्रिप्ट पहले से इनबिल्ट होता है और हमें इसे केवल सक्रिय करने की आवश्यकता होती है। अब माइक्रोसॉफ्ट के विंडोज 10 के नए बिल्ट के साथ इंडिक ट्रेडिशनल इंस्क्रिप्ट में हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के लिए इंडिक फोनेटिक की–बोर्ड भी जुड़ गया है। फोनेटिक की–बोर्ड मूल रूप से टाइप करने का एक सुविधाजनक तरीका है जो अंग्रेज़ी QWERTY की–बोर्ड का लाभ उठाता है। इंडिक INSCRIPT की–बोर्ड के साथ, इंडिक फोनेटिक की–बोर्ड Natural Pronunciation पर आधारित हैं और उपयोगकर्ता इसे बिना किसी प्रशिक्षण के उपयोग कर सकते हैं। जैसे ही मौजूदा की–बोर्ड का उपयोग कर शब्द टाइप किया जाता है, इंडिक फोनेटिक की–बोर्ड संभव इंडिक टेक्स्ट विकल्पों का अनुवाद करते समय आपको सुझाव देता है, उदाहरण के लिए, यदि हम फोनेटिक की–बोर्ड का उपयोग करके इंग्लिश में Namaste टाइप करते हैं तो आप 'नमस्ते' विकल्प का चयन कर सकते हैं।

इसे अपने कंप्यूटर पर सक्रिय करने के लिए आपको निम्नलिखित कार्य करने होंगे:–

1. START पर जाकर Settings पर जाएं।
2. Settings में Time and Language पर जाएं।

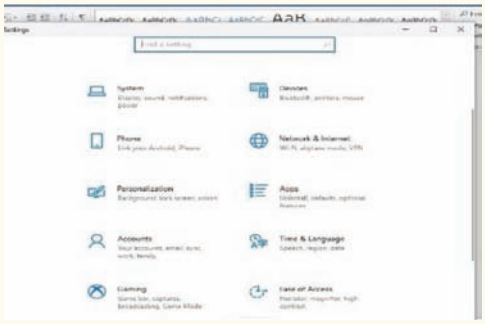

3. Time and Language में Language पर जाएं।

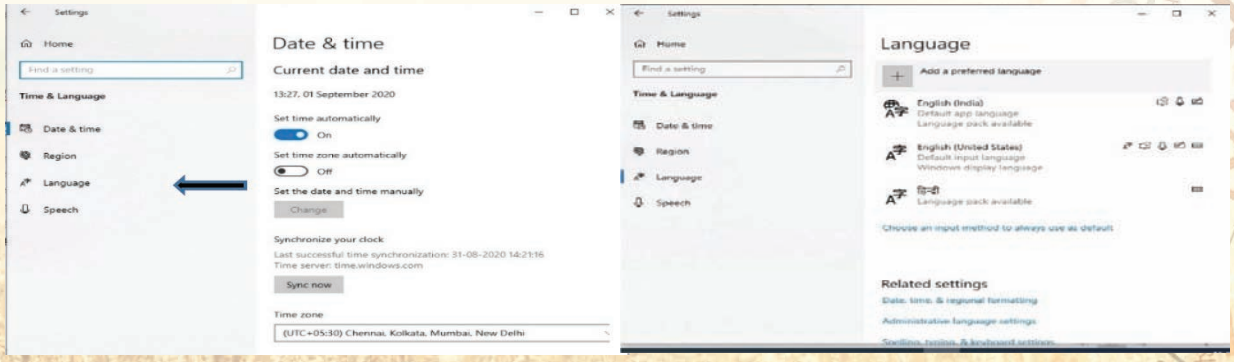

*प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

4. +Add a preferred Language में जाएं और अपनी भाषा चुनें।

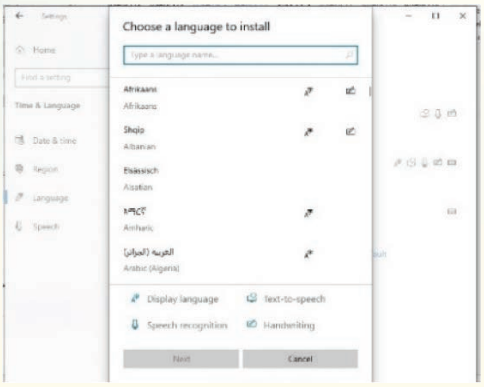

5. जब आप अपनी भाषा जैसे हिंदी का चयन कर लेंगे तब आपको उसका की–बोर्ड चुनने के लिए विकल्प मिलेगा, जो हिंदी फोनेटिक का की–बोर्ड होगा।

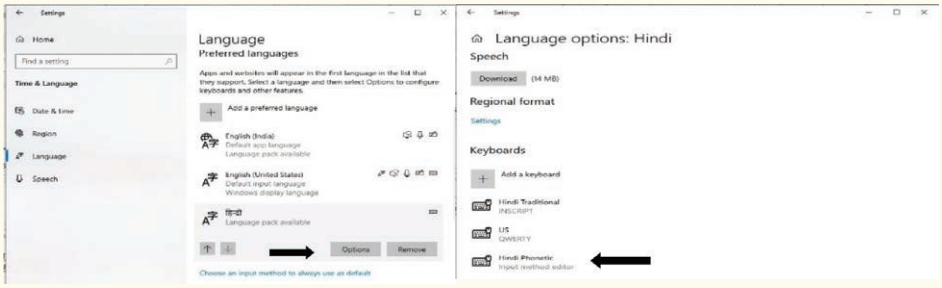

6. अब आप अपने Task bar में HI phonetic को Select कर लें, तो आप हिंदी फोनेटिक की–बोर्ड पर काम करने के लिए तैयार हैं।

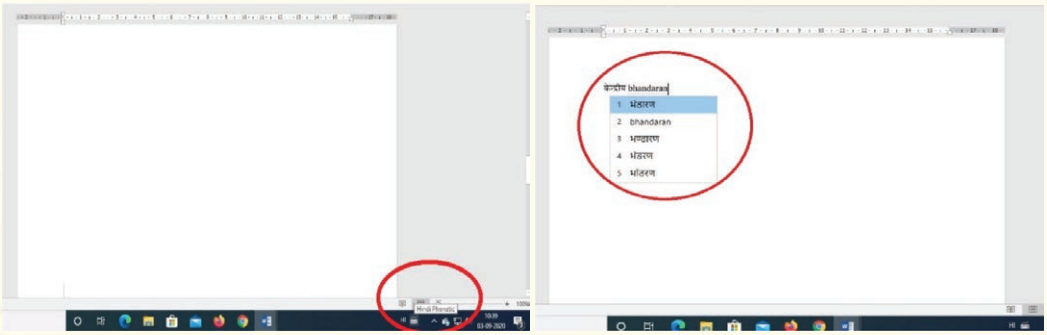

इस प्रकार आप हिंदी फोनेटिक की–बोर्ड का प्रयोग कर अपने कम्प्यूटर पर हिंदी में अधिक से अधिक कार्य सुगमता से कर सकते हैं।

अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश–

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

वो ग्यारह मिनट

रेखा दुबे*

घर लोगों से खचाखच भरा हुआ था। संध्या कमरे में चुपचाप बैठी थी। जो भी आता उसको गले लगाता और दिलासा देकर चला जाता लेकिन उसकी आंखों में आंसू नहीं थे। कल उसके हाथ चूड़े, मेहंदी से सजे हुए थे और आज हाथों में मेहंदी तो है लेकिन सूनी। एक ही रात में वो सुहागन से विधवा हो गई। अभी तो संजय को समझ भी नहीं पाई थी कि वो सदा के लिए साथ छोड़ कर चला गया। आंखों के आगे अभी तक वही नजारा है कि सुबह 8.00 बजे उसकी डोली ससुराल पहुंची और सभी रिश्तेदार उसे घेरे हुए थे। किसी से अभी बात भी नहीं कर पाई थी कि मौसी जी हड़बड़ी में आईं और मेरी झोली में एक सैट और एक लिफाफा थमा कर बोली संध्या बेटा मैं तेरी मुंह दिखाई तक रुक नहीं पाऊंगी मुझे अपने देवर के बेटे की शादी में जाना है। फ्लाइट का समय हो रहा है इसलिए निकलती हूं। अब तुम दोनों हमारे घर आना.. कह कर सिर पर प्यार से उन्होंने हाथ फेरा।

मौसी – टैक्सी आ गई? संजय ने पूछा

नहीं बेटा ट्रैफिक जाम में फंसा है वो मैं ऑटो कर लेती हूं।

क्या मौसी मेरे होते हुए आप ऑटो में जाएंगी मैं छोड़ देता हूं आपको कहकर संजय प्यार से मौसी के गले लग गए।

नहीं तू रहने दे.....अभी कई फंक्शन बाकी हैं तेरे।

कोई नहीं हो जाएंगे आप चलिए और मौसी के मना करने के बावजूद भी संजय उनका बैग पकड़े निकल गए। मां भी कुछ कह नहीं पाई क्योंकि मौसी की फ्लाइट न छूट जाए ये डर उन्हें भी था।

दो घंटे बाद संजय नहीं आए लेकिन एक फोन आया कि उनकी कार का एक्सीडेंट और उसके बाद क्या हुआ संध्या को कुछ भी याद नहीं।

जब उसे होश आया तो आसपास लोगों की फुसफुसाहट कानों में पड़ने लगी कि कैसी लड़की के पांव पड़े कि जवान बेटा दुनिया से चला गया।

भारी मन से सबने संजय को आखिरी विदाई दी और रात के अंधेरे में घर का सूनापन काटने लगा। लड़ी वाले लड़ियां उतार रहे थे। कुछ ही घंटों में सब कुछ बदल गया।

भाभी.....मां ने आपके लिए भेजा है कुछ खा लीजिए।

भूख नहीं है दी। हम जानते हैं लेकिन भाभी आपने सुबह से कुछ नहीं खाया। खा लो प्लीज।

दी मां–बाबूजी ने कुछ खाया।

नहीं अभी नहीं।

वो कहां हैं ....संध्या ने पूछा और प्लेट में खाना लिए नीतू दी के पीछे चल दी।

मां–बाबूजी का बुरा हाल था। उसके कदम दरवाजे पर ही ठिठक गए। उसे लगा कि वे भी उसी को दोषी मानेंगे। वो दोनों के कदमों में बैठ गई और सिर झुका लिया समझ नहीं आया कि क्या कहे। बाबूजी ने प्यार से सर पर हाथ फेरा। बाबूजी प्लीज कुछ खा लीजिए आप दोनों की तबीयत खराब हो जाएगी। आप दोनों को भी मेरा इस घर में आना बुरा लगा है मां लेकिन मैं क्या करूं.....कह वह रोने लगी। वो हैरान रह गई जब मां ने उसे उठाया और बोली तूने कुछ खाया। हम तो अपनी बेटी का स्वागत भी नहीं कर पाए और तुझ पर मुसीबतों का पहाड़ टूट गया। मां उसे गले लगाकर रोने लगी। लोग चाहे कुछ भी कहें लेकिन बेटियों के कदम किसी भी घर में अशुभ हो ही नहीं सकते। हमने अपना बेटा खोया है तो एक बेटी भी पाई है। आज से हमारे लिए तू संजय का ही रूप है। हम तीनों एक साथ ही कुछ खाएंगे ऐसे रोएंगे तो उसकी आत्मा को कभी शांति नहीं मिलेगी। उसे अपनी किस्मत पर रोना आ गया कि कितना अच्छा ससुराल मिला अपने मां–बाबूजी को छोड़ा तो ऐसे ही दूसरे मां–बाबूजी मिले.....लेकिन पति कहीं खो गया। संध्या का मन भर आया..... हे ईश्वर मुझ से क्या गलती हो गई।

धीरे–धीरे घर रिश्तेदारों से खाली हो गया। उसे मां ने कहा कि वो उनके साथ मायके चले लेकिन वो ससुराल छोड़कर नहीं जाना चाहती थी। मां ने सास–ससुर जी से बात भी की लेकिन उन्होंने बस यही कहा कि अगर

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

संध्या जाना चाहती है तो हम उसे नहीं रोकेंगे। अब मेरा यही घर है.... मां को जाते–जाते मैं बस इतना ही कह पाई। उन्होंने बहुत समझाया कि अभी 23 साल की उम्र में पूरी जिंदगी यूं अकेले गुजारना लेकिन संध्या अपने फैसले पर अटल थी।

संध्या के प्यार ने मां–बाबूजी का दिल जीत लिया था। संजय को तो वे कभी भूल नहीं सकते थे लेकिन संध्या के चेहरे पर ओढ़ी हुई मुस्कान से वो भी मन बहलाने लगे थे। संध्या ने घर की सारी जिम्मेदारियां उठा ली थी। बाबूजी की प्रेरणा से उसने सरकारी नौकरी के लिए पढ़ाई भी शुरु की और तब महसूस हुआ कि उनकी प्रेरणा उसकी जिंदगी को आसान बनाने के लिए कितनी जरूरी थी। आखिरकार उसे उसकी मेहनत का फल मिल ही गया। संजय की पहली बरसी के दिन उसे नौकरी का पत्र मिला और लगा जैसे उन्होंने ही मेरी नई जिंदगी की शुरूआत का तोहफा दिया। अपना लैटर उसने बाबूजी के कदमों में रखा तो उनकी आंखों में आंसू आ गए। आपके कारण मेरे जीवन को नई दिशा मिली है बाबूजी .....मैं बस इतना ही कह पाई। नहीं बेटा ये तेरी मेहनत का फल है।

नई जगह नए लोग संध्या को शुरू में बहुत अजीब लगा लेकिन धीरे–धीरे ऑफिस में कई दोस्त मिले। जिंदगी अब कुछ आसान सी हो रही थी। संध्या ऑफिस की सारी बातें आकर मां–बाबूजी को बताती थी उसके चेहरे की मुस्कान से अब घर फिर से चहकने लगा था। एक दिन बाबूजी के कमरे के बाहर उसके कदम ठिठक गए मां और बाबूजी आपस में बात कर रहे थे।

मुझे कभी–कभी लगता है कि हमने संध्या के मायके न जाने के फैसले को मानकर गलती तो नहीं की। अभी उसकी उम्र ही क्या है। अगर हमारी बेटी के साथ ऐसा होता तो हम दोबारा उसका संसार बसाने की सोचते। अब तो उसकी सरकारी नौकरी भी लग गई है। हम लोगों के बाद उसका क्या होगा कभी सोचा है आपने....

हां कमला सोचा है तभी उसको नौकरी के लिए प्रेरित किया। उसके जीवन को एक दिशा मिल गई है और अब ईश्वर हमारी बच्ची के भविष्य की चिंता स्वयं करेगा।

बाबूजी हमें कहीं नहीं जाना और मां आपको मैं बोझ लग रही हूं जो आप ऐसा कह रहे हो।

मेरे भाग्य ने मुझे जहां जाना था, ले आया और अब यही मेरा घर है। तुझे सारी उम्र संजय की जिम्मेदारियां उठाने के लिए नहीं रख सकते। मां प्लीज आप ऐसा कहकर मुझे पराया मत करो। एक तरफ बेटी कहते हो, दूसरे ही पल पराया कर देते हो।

आप ही समझाइये इसे आपकी लाडली है आपकी बात ही मानेगी। अच्छा चाय पिएगी....हां मां बना दो और संध्या अपनी सास के कंधे पर प्यार से झूल गई। कभी–कभी कमला को महसूस होता कि वो अपनी बेटी नीतू से ज्यादा संध्या से प्यार करने लगी है। तब ईश्वर से बड़ी शिकायत होती कि इतनी प्यारी बच्ची के साथ इतना जुल्म अगर संजय होता तो ऐसी पत्नी पाकर धन्य हो जाता। नीतू भी शायद हमसे इतना प्यार नहीं पा सकी जो संध्या ने अपने व्यवहार से पा लिया।

जीवन की गाड़ी अब चलने लगी थी। घर के हर फैसले में नीतू दी से पहले उसकी राय ली जाती थी। सुबह उठी तो मां ने बताया कि आज मौसी आ रही है जय के साथ। जय मौसी का एकलौता बेटा था। कंपनी के काम से अमेरिका गया हुआ था इसलिए शादी में नहीं आ पाया। संजय जय से बस 6 महीने ही छोटे थे जय के नाम पर ही मौसी ने संजय नाम रखा था। मां अक्सर कहती थी कि संजय को मुझसे ज्यादा मौसी से प्यार था। तब मौसी भी दिल्ली रहती थी लेकिन मौसा जी का मुंबई में बिजनस अच्छा चलने लगा तो वो मुंबई चले गए।

मां आज मैं छुट्टी ले लेती हूं, आप दोनों खूब सारी बातें करना और मैं घर का सारा काम संभाल लूंगी। नीतू दी को भी बुला लेते हैं वो भी मौसी से मिल लेंगी। बेटा तेरा काम बढ़ जाएगा। आप टेंशन मत लीजिए, मैं सब संभाल लूंगी। मां के चेहरे पर बहुत दिनों बाद आज मुस्कान आई थी। दोपहर तक सारा काम खत्म कर वह अपने कमरे में आई ही थी कि बैल बजी। उसने दरवाजा खोला तो सामने मौसी और जय थे वो झुक कर पैर छूने लगी तो मौसी ने रोक दिया। घर की बेटियां पैर नहीं छूती, गले मिलती हैं और मौसी ने गले से लगा लिया वो स्पर्श वाकई ममतामयी था।

इतने दिनों बाद घर में रौनक आई थी सब बड़े खुश थे। शाम तक नीतू दी भी आ गई। उसके बाद दोनों भाई–बहन की मस्ती से उसे अपने घर की याद आ गई वो और करण भैया भी इसी तरह सारे घर में धमाचौकड़ी मचाते थे। मां हमारी लड़ाई और मस्ती को देखकर थक जाती थी।

उसने चाय और पकोड़े बनाए और ट्रे लेकर लॉन में पहुंची तो सब खामोश थे कुछ अजीब सा लगा।

क्या हुआ आप सब इतने सीरियस क्यों हैं ?

कुछ नहीं, तू मेरे पास बैठ, बात करनी है तुझसे

संध्या तेरे मन में भी आना होगा कि मन में कब से बड़ा बोझ लेकर जी रही हूं। अगर उस दिन संजय मुझे छोड़ने न जाता तो आज तेरा जीवन कितना रंगीन होता। मेरी वजह से तेरे जीवन के सारे रंग चले गए।

मौसी आप कैसी बात कह रहे हो। ईश्वर ने जो मेरे भाग्य में लिखा था वही हुआ है। आप अपने मन पर कोई भी बोझ मत रखिये। मैंने एक रिश्ता तो खोया लेकिन मां–बाबूजी ने मुझे नीतू दी से ज्यादा प्यार दिया है और अगर आज मेरे जीवन में एक नया मोड़ आया है वो भी बाबूजी की वजह से। आप प्लीज यूं आंखों में आंसू मत लाओ संजय को बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा वो मुझसे नाराज हो जाएंगे कि मौसी मेरी वजह से दुखी है और मैं मौसी के गले लग गई।

कमला मेरा मन इसके लिए बहुत दुखता है। मेरा बस चले तो.....कह वो चुप हो गई।

मैं कमरे में आई तो पुरानी यादों से सचमुच मेरी आंखें भी नम हो गई। ये पांच दिन कैसे गुजर गए कुछ पता ही नहीं चला। मौसी ने मुझे ऑफिस जाने ही नहीं दिया। इसी बीच जय की भी कंपनी ने उसे दिल्ली का प्रोजेक्ट दे दिया। मां तो सुनकर बहुत खुश हो गई। तू अब हमारे पास रहेगा .....मां ने प्यार से पूछा। नहीं मौसी, मुझे ऑफिस की तरफ से फ्लैट मिलेगा। आपको डिस्टर्ब नहीं करूंगा। तू यहीं रहेगा बस, इस बार बाबूजी बोले। बड़े पापा आपकी बात को मैं टाल नहीं सकता लेकिन मेरा टाइम बड़ा ऑड है, आप सभी को मुश्किल होगी। तुम हमारे साथ ही रहोगे। तुझे देखते हैं तो संजय की याद आ जाती है। कम से कम कुछ पल तो हमें संजय के साथ जी लेने दे। बड़े पापा मैं आपका संजय ही हूं आप प्लीज मत रोइये।

ओके, मैं यही रहूंगा।

कमला ये तेरे पास रहेगा तो मुझे भी चिंता नहीं होगी।

जय अगले हफ्ते ही अपना सामान लेकर आ गए और मां–बाबूजी के चेहरे पर चमक आ गई। जय ने बाबूजी को मार्निंग वॉक की भी आदत डाल दी। वो सब तो खुश थे लेकिन पता नहीं मुझे क्यों जय को देखते ही संजय की याद आ जाती थी। दोनों की शक्ल भी मिलती थी। सच में सगे भाई लगते थे दोनों। मेरी इस झिझक को शायद जय जान रहे थे और एक दिन शाम जब मां–बाबूजी चाय पीकर चले गए तो उन्होंने मुझसे कुछ बात करने की इच्छा जताई। मैं कुछ असमंजस में थी। संध्या मेरे आने से तुम्हें तकलीफ हो गई है मैं जानता हूं। मुझे आने में 10.30 बज जाते हैं। अमेरिका में सारे काम करने की मेरी आदत हो गई है इसलिए तुम्हें जागने की जरूरत नहीं है। मैं किचन से डिनर ले लूंगा। ऐसी कोई बात नहीं है। काम खत्म करते –करते मुझे इतना समय पहले भी लग जाता था। आपकी वजह से कोई दिक्कत नहीं है।

अगर वाकई तम्हें मेरी वजह से कोई परेशानी नहीं है तो क्या हम दोस्त बन सकते हैं।

जी.....

क्या हम दोस्त बन सकते हैं जय ने फिर दोहराया। उसने इतने सहज ढंग से कहा कि मैं मना कर ही नहीं पाई।

छः महीने में ही मेरी और जय की अच्छी बनने लगी। जय सुबह मेरी हैल्प भी करते और बाबूजी को सैर पर भी ले जाने लगे। मां के साथ रोज सुबह की चाय और खिलखिलाने की आवाज से घर गूंजने लगा था।

उस दिन मेरा बर्थडे था और ऑफिस में दोस्तों ने पार्टी मांगी। मैंने बाबूजी को बताया सब पार्टी मांग रहे हैं, इसलिए आने में कुछ देर हो जाएगी तो उन्होंने कहा कि अपने दोस्तों को घर पर ले आओ हम जय के साथ मिलकर सब तैयारी कर लेंगे। वाकई जब शाम को मेरे दोस्त घर पहुंचे तो मैं खुद अपने घर को पहचान नहीं पाई। इतना सुंदर तरीके से घर सजा हुआ था। जय ने सब एरेंजमैंट्स इतने अच्छे किए थे कि वो उस दिन के हीरो हो गए। सबने जाते–जाते इतनी तारीफ की और रूचि तो अपने मजाकिया मूड के कारण जय को छेड़ने से बाज़ नहीं आई कि मुझे तो आपके जैसा पति चाहिए।

लेकिन मैं तो बुक हो चुका हूं, कहते हुए जय ने मेरी ओर तिरछी नजर से देखा।

हैरानी मेरे चेहरे पर भी थी।

सबके जाते ही मैंने जय को आड़े हाथ लिया। बाबूजी इन्होंने हमसे इतनी बड़ी बात छुपाई। बाबूजी और मां भी मेरे ग्रुप में शामिल हो गए। सही समय ढूंढ रहा था और आज आप सब भी खुश हैं तो मैं.....लेकिन पहले मंमी को फोन करूंगा फिर आपको बताऊंगा।

हम सभी इसी इंतजार में थे। जय ने सीधा ही स्पीकर ऑन करके मौसी को कहा, मंमी आपकी पसंद अब मेरी भी पसंद है। आपकी टिकट भेज रहा हूं, कल पापा के

साथ आप आ जाओ। मौसी तो खुशी के मारे पागल सी हो रही थी और बोली जय तूने मुझे जीवन की बहुत बड़ी खुशी दे दी। संध्या कहां है, मेरी बात करा उससे।

अभी नहीं कल। अभी मैंने यहां किसी से बात नहीं की.....आप सबसे कल ही बात करना।

जय ये क्या माजरा है, तूने हमें नहीं बताया और तेरी मां ने भी। मैं तुझसे बहुत गुस्सा हूं। मैं और बाबूजी भी एक ही सुर में बोले हम भी गुस्सा हैं।

बड़े पापा और मां का हाथ थामे जय उन्हें अपने कमरे में ले गए और दरवाजा बंद कर लिया। कुछ देर के बाद वो बाहर निकले तो मां–बाबूजी की आंखों में आंसू थे। क्या हुआ आप दोनों को। आपने क्या कहा कि ये दोनों रो रहे हैं। अरे कुछ नहीं पगली इसने तो हमारे जीवन की सबसे बड़ी खुशी हमें दे दी। ये खुशी के आंसू हैं। इतने में जय ने एक लाल चुनरी लाकर मां के हाथ में दी और मां ने उसे खोलकर मुझे ओढ़ा दिया और मुझे आइने के आगे ले जाकर बोली ये है मेरे जय की दुल्हन.....मैं हैरान रह गई .....मैं इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी। मां, ये क्या है.... मैं ऐसा नहीं कर सकती। आप कैसी बात कर रहे हो। मैं बोलती जा रही थी लेकिन मां और बाबूजी बस प्यार से मेरी निहार रहे थे। संध्या तुम्हें सोचने का टाइम चाहिए तो ठीक है लेकिन प्लीज फैसला मेरे हक में करना क्योंकि तुम्हारे जैसी पार्टनर मुझे कभी नहीं मिलेगी.... कह कर जय ने मेरी ओर देखा और सच में पहली बार उन आंखों में ये भाव मैंने देखे। पूरी रात मेरी आंखों में कटी और मन बहुत भटक रहा था। मैं किचन में आई तो जय चाय बना रहे थे। तुम्हारी भी बना दूं क्या। हां...नहीं मैं हड़बड़ा गई। क्या हुआ नींद नहीं आई क्या।

आपसे कुछ कहना है बिना संकोच मैंने कहा .....क्या हम अच्छे दोस्त हैं।

तुम्हें कोई शक है क्या ?

सच बताइये.... आप मुझसे शादी क्यों करना चाहते हैं।

क्योंकि तुमसे अच्छा पार्टनर मुझे नहीं मिल सकता।

मुझे ऐसा लग रहा है आप कहीं मौसी के मन का बोझ तो नहीं उतारना चाहते।

नहीं संध्या, तुम बैठो तुम्हें कुछ बताना है। मैं इतना अच्छा बेटा भी नहीं हूं जो अपनी पूरी जिंदगी मंमी–पापा के फैसले पर गुजार दूं। ये बात सही है कि तुम मां की पसंद हो लेकिन केवल बोझ के कारण नहीं तुमने अपने व्यवहार से सबका मन जीता है। मंमी ने अपनी पसंद मुझे बताई लेकिन मैंने कहा कि मैं संध्या से मिले और उसे जाने बिना कोई फैसला नहीं लूंगा और शायद मंमी की दुआओं में असर था कि मेरी पोस्टिंग भी इस शहर में हो गई। मेरे नसीब अच्छे थे कि तुम्हे जानने का मुझे मौका मिला और सच में तुममें एक पॉजिटिविटी है जो किसी को भी तुम्हारा मुरीद कर सकती है। तुम और लड़कियों से बहुत अलग हो।अब इससे ज्यादा तारीफ मैं नहीं करूंगा कुछ शादी के बाद के लिए भी। मेरी चाय खराब कर दी तुमने अब तुम बनाओ मैं बड़े पापा को सैर के लिए उठा कर आता हूं। जय चला गया और मैं इसी सोच में रह गई कि ये कैसा है ..... इतना कांफिडेंट कि मैं हां ही करुंगी। उससे इस व्यवहार की तो मुझे उम्मीद ही नहीं थी। पहली बार किसी ने मुझसे ज्यादा मुझे समझा है ऐसा महसूस हुआ।

बाबूजी और जय सैर के निकले तो जय पलट कर मेरी ओर आए और बोले अब मंमी आ रही हैं तो उनसे भी पूछ लेना। तुम्हारे मन में कोई शंका रह न जाए .....और हां शादी जल्दी करनी है मुझे इसलिए प्लीज हां करने में देर मत करना और वो मुस्कराते हुए चले गए।

आज फिर दोबारा से मेरे हाथों में मेंहदी लगी है। सब कुछ इतनी जल्दी हो रहा था कि .....लेकिन मैं खुश हूं कि जय मुझे मिले और उन ग्यारह मिनट में जो खुशियां मेरे हाथों से फिसल गई थी वो ईश्वर ने फिर से मेरी झोली में डाल दिए। जय ने मेरी मेहंदी लगे हाथों को अपने हाथ में लिया और कहा संध्या अब तुम्हारी मेहंदी का रंग कभी फीका नहीं होगा.....और मैं बस उन आंखों में अपना पूरा जीवन देखने लगी।

कोई बात हमें छोटी लग रही होती है, पर होती नहीं। कई बार एक छोटी बात ही जीवन में बहुत गहरे से जुड़ी होती है। असल अंदाजा तब होता है, जब हम उस मामूली लगने वाली बात से बाहर निकलते हैं। कहावत है कि सिर के बालों का वजन उन्हें कटवाने के बाद पता चलता है। इसी तरह मन के डर हमें किस कदर बांधे हुए होते हैं, इसका पता खुद को उनसे आजाद करने के बाद ही मालूम पड़ता है।

चिट्ठी-पत्री

मीनाक्षी गम्भीर*

एक था खतों का जमाना,
वो खतों को सहेज कर रखना।
जैसे साथ हो कोई अपना,
वो खतों को इत्मीनान से लिखना।
वो खतों को सुकून से पढ़ना,
अब तो लगता है जैसे था कोई सपना।
पहले हरेक की जिंदगी का थे ये खत हिस्सा,
हकीकत है दोस्तों नहीं है ये कोई किस्सा।

अपनों की खैरियत का सुखद इंतजार, चिट्ठी मिलने पर अपनों से आधी मुलाकात हो जाने का अहसास, तकिए के नीचे चिट्ठी रखना और घरवालों की याद आते ही उसे निकाल कर पढ़ना अब यह सब कुछ मानों किस्से–कहानियों की बातें हो चुकी हैं।

जी हाँ, बिलकुल सही समझे हैं आप!! दरअसल कल कुछ सफाई करते हुए एक चिट्ठी मुझे मिली तो सोचा क्यों न आज चिट्ठी की ही बात की जाये। चिट्ठी, खत, पत्र इसका लुत्फ जितना मेरे समकक्ष लोगों ने लिया है शायद ही उसके बाद के लोगों ने लिया हो क्यूँकि कई तरह के संचार माध्यमों के प्रावधान जो होने लगे जोकि एक खत के आने जाने से कहीं तेज हैं। मैं अपने आपको किस्मत की धनी कहूँ तो अतिश्योक्ति नहीं होगी, क्यूंकि हमारी पीढ़ी ने पत्रों से मोबाइल तक के सफर को जिया है। समय की तेज रफ्तार और इलेक्ट्रॉनिक की बढ़ती सुविधाओं की वजह से चिट्ठी– पत्री का सिलसिला कहीं खो सा गया है। हो सकता है आप को लगे कि भला जब इतना सुविधाजनक व्हाटसऐप है तो फिर चिट्ठी की क्या बात करना! सवाल ये है कि हम सभी लोग इतने आराम और सुविधा के आदी हो चुके है कि चिट्ठी के महत्व को भूल गये हैं। बस फटाफट मोबाइल पर लिखा और भेज दिया और जिसे भेजा उसने तुरन्त जवाब भी दे दिया, कभी कुछ लिख कर तो कभी कोई ईमोजी बनाकर। ये अलग बात है कि अब किसी को भी किसी की भी चिट्ठी का इन्तजार नहीं रहता है पर हाँ एक समय था जब हर कोई चिट्ठी का इन्तजार करता था। हम तो खूब करते थे। अन्तर्देशीय पत्र, पोस्टकार्ड और लिफाफे में चिट्ठियाँ भेजी जाती थीं और विदेश एयरमेल से! पर अब घर बैठे मिनटों में मैसेज किसी को भी भेज देते हैं। अब कहाँ कोई अन्तर्देशीय पत्र लाये और चिट्ठी लिखे। पहले विदेश से तो चिट्ठी तकरीबन दस से पन्द्रह दिन में आती थी पर लोकल मतलब अपने यहाँ दो से तीन दिन में। शादी ब्याह तय होने पर भी सबसे पहले सबको चिट्ठी भेजी जाती थी। अन्तर्देशीय पत्र में एक–एक जगह पर लिखते थे यहाँ तक की जो साइड में मोड़ने वाली जगह होती थी वहाँ भी लिखते थे। इतनी बातें होती थी कि जगह कम पड़ जाती थी। पोस्टकार्ड में ज्यादातर अगर किसी को कोई सूचना देनी होती थी तो लिखते थे और लिफाफे में अक्सर एक नहीं दो चिट्ठियाँ भी आती थीं। ऐसा मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि जब भी मौसी मम्मी को चिट्ठी लिफाफे में भेजती थी तो उसमें एक चिट्ठी हमारी प्यारी मौसेरी बहन की भी होती थी।

पहले तो हिन्दी फिल्मों में गाने भी होते थे जैसे – 'हम दोनों मिल के, कागज पे दिल के चिट्ठी लिखेंगे –जवाब आएगा', 'खत लिख दे सांवरिया के नाम बाबू', 'फूल तुम्हें भेजा है खत में', 'ये मेरा प्रेम पत्र पढ़कर तुम नाराज न होना', 'डाकिया डाक लाया', 'चिट्ठी आई है, आई है, चिट्ठी

*निजी सचिव, निदेशक(कार्मिक), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

आई है', जैसे गीतों के अर्थ अब समय के सीने में समा गये हैं। अब खत में फूल भेजना तो दूर कोई किसी को खत भी नहीं लिखता। अब तो बड़े दिनों के बाद भी चिट्ठी नहीं आती और न ही कोई घर के दरवाजे पर निगाहें गढ़ाता हुआ डाकिए का इंतजार करता है। "चिट्ठी ना कोई संदेश, ना जाने कौन सा देश, जहां तुम चले गये", जगजीत सिंह की यह गजल आज खुद चिट्ठी पर ही खरा उतरती दिखती है। गीतों की अब प्रासंगिकता धीरे–धीरे समाप्त होती जा रही है। संचार क्रांति के इस युग में अब नहीं आती अपनों की चिट्ठी–पत्री। घर से जाते समय अब कोई नहीं कहता कि पहुंचते ही चिट्ठी लिखना और न पत्र लिखने की जरूरत है। घर से निकलकर मंजिल तक पहुंचने के क्रम में फोन व मोबाइल के माध्यम से कई बार रास्ते के समाचार से लोग अवगत हो जाते हैं। नयी पीढ़ी पत्र लेखन की कला से कोसो दूर है। नयी पीढ़ी यह भी नहीं जानती कि डाकिया भी कोई होता है और न ही उसे पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र व लिफाफे की जानकारी है।

चिट्ठी लिखने का भी अपना अलग अन्दाज होता था जिसमें शुरूआत में अपनी और दूसरे की ख़ैरियत बताई और पूछी जाती थी। अत्र कुशलम तत्रास्तु, आदरणीय पिताजी को सादर चरण स्पर्श। आगे समाचार यह है कि मैं यहां पर ठीक प्रकार से हूं और आशा करता हूं कि ईश्वर की कृपा से आप भी कुशल मंगल से होंगे, उसके बाद कुछ घर परिवार की बात होती, फिर किसने कौन सी पिक्चर देखी और सबसे मजेदार बात कि मौसम का हाल भी लिखते थे और अन्त में सभी बड़ों को सादर नमस्ते और छोटों को प्यार लिख कर चिट्ठी ख़त्म करते थे। पहले लोग दूर दराज रहने वाले अपने नाते रिश्तेदारों को पोस्टकार्ड और अंतर्देशीय पत्र के जरिए संदेश भेजा करते थे और पत्र लिखने की बाकायदा एक शैली होती थी। वो दिन भी क्या दिन थे, जब चिट्ठी लिखी जाती थी, प्यार की झलक उसमें साफ नजर आती थी इंतजार रहता था उस चिट्ठी का जिसके आते ही पढ़ने की होड़ सी लग जाती थी। उसमें लिखे शुरू के शब्द आज भी बहुत याद आते हैं कि हम सब यहाँ कुशल–पूर्वक हैं और आपकी कुशलता भगवान से नेक चाहते हैं। अब तो ना ही कहीं पोस्ट बॉक्स दिखता है और ना ही पोस्टमैन आकर आवाज लगाता है। पहले हर गली मोहल्ले में लाल रंग का पोस्ट बॉक्स होता था और रोज एक पोस्टमैन उसमें से चिट्ठियाँ निकाल कर पोस्ट ऑफिस ले जाता और वहाँ से चिट्ठियों को उनके गन्तव्य स्थान तक एक बार फिर पोस्टमैन ही पहुँचाते थे। जब हद इंतजार के बाद एक खत आता था उसमें इतना कुछ होता था कि पढ़ते–पढ़ते कभी आंख नम हो जाती थी, तो कभी सारे जहान की खुशियां एक चिठ्ठी में सिमट आती थीं। चिठियाँ अपने साथ खुशियां लाती थी, किसी को मुन्ने का हाल सुनाती थी, तो किसी को नौकर का संदेशा देती थी, बूढ़े मां–बाप को बेटे के मनीऑडर का इंतेजार होता था, बॉर्डर पर बैठे लाडले की चिठ्ठी मिलने के बाद माँ की आँख से जार–जार आंसू बहते थे। किसी की शादी का दावतनामा होता था, तो कभी नये साल पर ढेर सारे ग्रीटिंग कार्ड पहले से ही भेज दिए जाते थे। गर्मी की छुट्टियों से पहले ही फटाफट नानी को संदेशा भेजते थे, इस बार गर्मी की छुट्टियों में आ रहे हैं। पंद्रह पैसे का एक पोस्टकार्ड पंद्रह दिन का हाल सुना जाता था। कई बार तो बैरंग पत्र आते थे, जब डाकिया बाबू को उसके लिये दो से पांच रूपए भी देने पड़ते थे, लेकिन चिठ्ठी के उतावलेपन में पैसे खर्च करने का भी कोई गम नहीं होता था। घर में कहीं से कोई पत्र आता था, तो सबसे पहले उस पर से डाक टिकट छुटाने में जुट जाते थे, अजीब शौक था डाक टिकट इकट्ठी करने का। हमारे मोहल्ले में कई लोग ऐसे भी थे, जिन्हे खत लिखना या पढ़ना नहीं आता था। ऐसे लोगों के लिए हम समाज सेवा करने में हमेशा आगे रहते थे और किसी की चिठ्ठी लिखने और पड़ने में जो लुत्फ आता था उसका अपना अलग ही मजा था लेकिन अब हर तरफ सूनापन है, सरकारी कामकाज न हो तो शायद डाकखाने तो अब तक बंद हो गये होते। मोबाइल और इंटरनेट ने तार बेशक जोड़े हैं लेकिन अब संवेदनाएं कहीं मर सी गई हैं। संचार क्षेत्र में टेलीफोन और मोबाइल क्रांति ने खतों की इस दुनिया को लगभग खत्म सा कर दिया है। समय के साथ लोगों की सोच में बदलाव आया है। अब हर तरफ मोबाइल ही छाया हुआ है। आज व्हाट्सऐप और फेसबुक का जमाना है क्योंकि आज पल भर में अपनी बात पहुँचानी है। जहाँ इसने दो देशों की दूरियाँ मिटाई है वहीं इसने लोगों के मन में दूरियाँ भी बढ़ाई है। अब पल भर में कोई अपना बन जाता है दूसरे पल देखते ही देखते वो भी कहीं खो जाता है। इंतजार के वो मीठे पल ना जाने कहाँ खो गये, चिट्ठी में छिपे प्यार से तो बेगाने भी अपने हो जाते थे। पलभर में मोबाइल से हजारों मैसेज तो भेज पाते हैं किन्तु चिट्ठी

में छिपे प्यार के उन शब्दों को कहाँ से लायें। जी हां, सच यही है कि अब दिल की बात, सुख–दुख, हंसी–ठिठोली का अहसास कराने वाली चिट्ठी मोबाइल फोन में खो गई है और इसी के साथ खत्म होती जा रही हैं हमारी संवेदनाएं, हमारे अहसास। सब कुछ छीन लिया है इस मोबाइल फोन ने। अब तो नए साल पर कोई ग्रीटिंग कार्ड भी नहीं आता। आता है, तो मोबाइल फोन पर बस एसएमएस। अब इधर एसएमएस आया, उधर उसे डिलिट किया। शायद लोगों के पास समय ही नहीं रहा या फिर वे सुविधा भोगी हो गए हैं। कौन लिखे चिट्ठी या खरीदकर लाए ग्रीटिंग कार्ड और उसे पोस्ट करने के लिए डाकघर भी तो जाना पड़ेगा। पता नहीं कितने दिन बाद चिट्ठी मिलेगी और यह जरुरी भी नहीं कि मिल ही जाये। एक समय था कि चिट्ठी पाने के लिए अधीरता के साथ डाकिए का इंतजार रहता था। चिट्ठी मिलने पर एहसास होता था कि चिट्ठी लिखने वाला सशरीर उसके पास है। दसियों बार चिट्ठी पढ़ी जाती थी और हर बार उससे जुड़ी यादों में मन खो जाता था। पति–पत्नी, प्रेमियों के लिए तो चिट्ठी दुर्लभ वस्तु की तरह होती थी, जिसे वे सीने से लगाए रखते थे। यही नहीं एक–दूसरे की चिट्ठी पढ़ने की भी ललक होती थी और लोग चोरी छिपे पढ़ने से चूकते भी नहीं थे। एक फिल्मी गीतकार कहता है– 'पहले जब तू खत लिखता था कागज में चेहरा दिखता था.' सचमुच कागज में लिखने वाले की सूरत नजर आती थी। कागज पर हाथ से लिखे अक्षरों में जो एक शब्दातीत आत्मीयता हुआ करती थी वह ई–मेल, मोबाइल के जरिये भेजे जाने वाले संदेशों में हो ही नहीं सकती। अब मोबाइल फोन पर आवाज तो सुनने को मिल जाती है लेकिन वह एहसास नहीं होता जो चिट्ठी पढने में होता था। वहीं कोना कटा पोस्टकार्ड देखते ही मन आशंकित हो जाता था (किसी की मृत्यु होने पर दसवां तेरहवीं संस्कार की सूचना देने के लिए लिखी गयी चिट्ठी) और अर्जेंट लिखे बिना ही अर्जेंट माना जाता था। किसी के गंभीर बीमार होने या दूसरे किसी किस्म के आपातकाल में पत्र के आखिर में यूँ लिखा जाता था। चिठ्ठी को तार समझो और फौरन अगली गाड़ी से रवाना हो जाओ। समझने वाला उसे तार ही समझता। पहले पत्र–मित्र बनाने के लिए भी चिट्ठियाँ लिखी जाती थीं। इसके लिए अखबारों–पत्रिकाओं में बाकायदा एक स्तम्भ भी होता था। जगह–जगह पत्र–मित्र क्लब बने हुए थे। समय के साथ अब यह भी खत्म होता जा रहा है। चिट्ठी पत्रों से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व और लेखन क्षमता का भी पता चलता था। मोतियों जैसे सुन्दर अक्षर, भाषा और शैली देखकर ही मन मुग्ध हो जाता था। पत्र लेखन एक कला मानी जाती थी। अब तो यह मात्र स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा मात्र ही रह गयी है।

दूरसंचार साधनों के विस्तार के साथ ही आज दुनियां जैसे सिकुड़ सी गई है। मोबाइल, इंटरनेट जैसे साधनों की मदद से लोग हर पल अपनों से जुड़े रहते हैं। वे जब चाहें मीलों दूर बैठकर एक दूसरे की कुशलता की जानकारी ले सकते हैं और कोई भी सन्देश उन तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही लोग पुरानी डाक और तार जैसी सुविधाओं को जैसे भूल से गए हैं। आज हम दूरसंचार के मामले में काफी आगे निकल चुके हैं। सूचना प्रौद्योगिकी युग में नित नए अविष्कारों के बीच मशीनें और रफ्तार भले ही बढ़ी हों, लेकिन मिट्टी और दिल से जुड़ी बहुत सी चीजें गायब हो गई हैं। अब पत्र के इंतजार में कोई दरवाजे पर नजर नहीं टिकाता, मनीआर्डर की आस में बूढ़े मां–बाप डाकिए का इंतजार नहीं करते और तार आने पर अमंगल की आशंका से माथे पर चिंता की लकीरें पड़ने का सिलसिला भी खत्म हो गया है। आज देश के किसान भी फसलों के बारे में इंटरनेट से जानकारी ले रहे हैं। एसएमएस से रेलवे रिजर्वेशन की जानकारी मिल रही है। अब आपको अपनों को पैसा या कोई उपहार भेजने के लिए बैंक या डाकघर के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं। अपनी जेब में पड़े मोबाइल के जरिए यह काम आप चुटकियों में कर लेते हैं और तो और मोबाइल आपके लिए बटुए का काम भी कर रहा है। पहले तत्काल संदेश भेजने के लिए तार का उपयोग होता था, मोबाइल आने के बाद इसका चलन एक प्रतिशत से भी कम है। एक समय था कि खाकी लिबास पहने इस सरकारी मुलाजिम का खास इंतजार होता था डाकिया आया, डाक लाया। डाकिया के आने के साथ ही लोग उसके पीछे दौड़ जाते थे तथा चिट्ठी के बावत जानकारी लेते थे। जिनके यहां की चिट्ठी होती थी तो उनके परिवार की बांछे खिल जाती थीं। वहीं न होने की स्थिति में लोगों में उदासी छा जाती थी। हालांकि अब भी डाक और डाकिए बचे हैं, लेकिन सिर्फ सरकारी दस्तावेज लाने, ले–जाने के लिए। डाकिया को देखते ही लोगों के आंखो में चमक आ जाती थी तथा उसके द्वारा लायी गयी चिट्ठी को पूरा परिवार मिल–जुलकर पढ़ता था, चिट्ठी संचार की एक सशक्त माध्यम थी। माध्यम

सिर्फ संचार की ही नहीं थी, यह रिश्तों में मिठास तो घोलती ही थी, लोग अपनों द्वारा भेजे गये उस पत्र को संजोकर को रखते और बार–बार पढ़ते। चिट्ठी लोगों को एक दूसरे का हाल बताने के साथ ही पूरे परिवार को जोड़ने का कार्य करती थी। जब चिट्ठी लेकर लोग घर पहुंचते थे तो पूरा परिवार इकट्ठा हो जाता था। एक व्यक्ति उसे पढ़ता था तथा परिवार के अन्य सदस्य बड़े मनोयोग से उसे सुनने का कार्य करते थे। आज मोबाइल युग में चिट्ठी–पत्री अतीत की बात हो गयी हैं। आज मोबाइल की घंटी बजते ही लोग एकांत में जाकर बात करने में लग जाते हैं। चिट्ठी परिवार को जोड़ने का कार्य करती थी वहीं मोबाइल ने लोगों को एकान्तवादी बना दिया है। मोबाइल ने चिट्ठी का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया है। प्रेम की पाती भी आज एसएमएस के जरिये भेजी जा रहीं हैं। आज भले ही संचार क्रांति के युग में हम अपनों से वीडियो कालिंग के जरिये बात कर रहे हैं और उनका हाल आंखों देखी ले रहे हैं यह विकास के युग में अच्छा है। लेकिन सच तो यह भी है कि जो भाव चिट्ठी को मिलने पर मन में उतरता था उसके मायने ही कुछ और था। निश्चित तौर पर मोबाइल के आने से सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में क्रांतिकारी विकास संभव तो हुआ है, परन्तु कड़वा सच यह भी है कि इसने संयुक्त परिवार की जड़ें भी हिला दी हैं।

बेशक हम पीछे नहीं आ सकते, न बीच रास्ते में अड़ सकते हैं। हमें हर विषय में, हर हाल में आगे ही जाना होगा परन्तु आज भी दरवाजे पर टकटकी लगाए आंखे एक अदद चीज का इंतजार करती है। मन करता है कि साइकिल की घंटी सुनाई पड़े और दौड़कर दरवाजे पर चलें शायद कोई चिट्ठी आई हो, शायद कोई संदेशा आया हो, शायद कोई अपना हो, जिसने हाले–दिल लिख भेजा हो लेकिन न तो साइकिल की घंटी सुनाई पड़ती है, और न ही डाकिया बाबू नजर आते हैं। अब कुछ आता है, तो मोबाइल पर फोन की घंटी, एसएमएस और ई–मेल। टेक्नोलॉजी की दुनिया ने उन सुनहरे दिनों को कहाँ पीछे छोड़ दिया है।

मत फाड़ इनको कि जब अपनों से दिल घबराएगा
हौसला देंगी तुझे ये चिठ्ठियाँ, रहने भी दे।

पैगाम अमन का

कविता

पियाल चक्रवर्ती*

ये तेरा और मेरा घर कह के
हर घर को हम यूं बांट चले,
हुकूमती सत्ता के पिछे
इंसानियत ही भूल चले।

देश बंटे लोग बंटे
कई रिश्ते टूटे बंटवारों में,
कोई तेज गति दौर चला शिखर पर
कोई भटके अंधेरे गलियों में।

फिर भी प्यास जो कम न होती
न भूख मिटे हासिल करने की,
एक दूजे का सुख जो सह न पाए
छेड़े लड़ाई हैवानियत की।

यूं कितने माँओं ने बेटे खोए
कही सिंदूर मिटे तो बच्चे अनाथ हुए,
कोई जीते और कोई हारे
पर लाखों सपने टूट गए।

हैरानियत इस बात पे आई
जब नजदीक से हम गौर किए,
जो हारे वो गम में थे
जो जीते वो भी आँसू बहाएँ।

फिर क्यूं यह खेल जीत–हार का
क्यूं छेड़े हम रियासत की लड़ाई,
आओ जुड़े इंसानियत के धागे से
अमन का यह झंडा लहराएँ।

*वेअरहाउस सहायक ग्रेड–1, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

भारतीय सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य जीवन एवं उसका महत्व

सच्चिदानंद राय*

भारत एक सनातन संस्कृति एवं मानव धर्म का पक्षधर, पर आधारित (अहिंसा परमो धर्मः) का देश रहा है। जब धर्म की बात आती है तो आम लोग आधुनिक सांप्रदायिक संगठनो के भ्रम में पड़ कर मनुष्य जीवन की महत्ता से अनभिज्ञ रहकर विभिन्न संप्रदायों मे फँस कर रह जाते हैं। भारतीय धर्म की बात आती है तो यह मनुष्य की व्यक्तिगत विकास, उत्थान की होती है जिसमें उस व्यक्ति का व्यक्तिगत संबंध होता है। यह सामूहिक या भीड़–भाड़ से परे शांति की बात होती है जिसमें व्यक्ति का चरित्र महत्वपूर्ण होता है और उसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर पड़ता है।

भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव का जीवन मिलना ही दुर्लभ होता है। इसके महत्व की व्याख्या सनातन ग्रन्थों, वेद व श्रीमद्भगवत् जी में विशेष तौर पर मिलता है। जगत में मुख्यतः 11 धर्म चल रहे हैं। इनमें से 7 धर्म (सनातन धर्म, इस्लाम धर्म, क्रिश्चयन धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सीख धर्म व पारसी धर्म) तो भारत में हैं। इनके अलावा संसार में बहुत सारे संप्रदाय हैं। बात सिर्फ मनुष्य की हो रही है क्योंकि मनुष्य ही इस धरा पर बुद्धिमान प्राणी माना जाता है।

बात जब उठी है तो पहले मैं अपनी स्थिति स्पष्ट कर दूँ। इस लेख के माध्यम से लेखक किसी व्यक्ति को शिक्षित करने की कोशिश नहीं कर रहा है। आधुनिक जीवन व्यस्तता की पराकाष्ठा पर है। किसी के पास दूसरे की तो छोड़िए, स्वयं तक की बात को सुनने के लिए समय कम पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में कौन किसको क्या बताएगा? पर जीवन की उलझने बढ़ती जाने से वास्तविकता से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। हम सभी कहने को तो मानव हैं और मानवता का पता नहीं। गजब की परिस्थिति बन गयी है। मनुष्य को अपनों से बात करने में भी संकोच होने लगा है। अब तो सोचना पड़ता है कि घर परिवार के लोगों से क्या बात करूँ? जब कभी मौका मिलता है तो थोड़ी सी हेलो–हाई कर के, बातें टाल दी जा रही हैं। वैसे तो प्रत्येक मनुष्य के दो धर्म होते हैं। एक भौतिक धर्म दूसरा आध्यात्मिक धर्म और दोनों ही जरूरी हैं।

स्वार्थ एक ऐसा शब्द है जिसका आध्यात्मिक मतलब आत्मा का विकास या उद्धार करना है। आधुनिक भौतिक जीवन में इसका अर्थ बिलकुल उल्टा हो जाता है। संकुचित हृदय का या कंजूस प्रकृति का व्यक्ति स्वार्थी कहा जाता है। ऐसे लोग येन–केन–प्रकारेण अपनी रोटी सेंकना पसंद करते हैं। ऐसे लोगों द्वारा परमार्थ नाम की कोई चीज नहीं होती दिखती है। परोपकार को ऐसे लोग मूर्खता मानते हैं। क्षणिक जीवन का कोई भरोसा नहीं होता। कभी भी जीवन का खेल खत्म हो सकता है। ऐसी धारणा सिर्फ भारतीय संस्कृति में खुलकर दिखती है। सारी दुनिया में भारत जैसा कोई दूसरा देश नहीं जहाँ आगंतुक को भगवान का दर्जा दिया जाता हो। ईश्वर का स्वरूप माना जाता हो। इसकी शिक्षा हमें आचार्यकुलम या गुरुकुलम की शिक्षा से मिलती है। भारतीय संस्कृति को नष्ट करने की मनसा से लॉर्ड मकाले (Lord Macaulay–1935) ने एक गहरी साजिश के तौर पर आध्यात्मिक रस से सराबोर पवित्र पौराणिक शिक्षा पद्धति खत्म कर आधुनिक आचरणहीन व निरस शिक्षा की पद्धति लागू की। इसका बहाना था उपयोगी शिक्षा यानि भौतिकवादी शिक्षा जो औद्योगिकरण पर आधारित हो। और पारंपरिक संस्कृत भाषा का प्रयोग हटाते हुए भारतीय शिक्षा पद्धति का अंग्रेजीकरण कर दिया गया। अब सिर्फ श्रीमंत लोगों को भ्रष्ट करके अंग्रेजी शिक्षा से भारतीय संस्कृति का पतन होने लगा। भारत शुरू से ही समृद्ध देश रहा है और किसी भी अन्य देश पर अपना अधिकार नहीं जमाया है।

अब फिर आते हैं अपनी पूर्व लीक पर। कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति नहीं रहा या इस दुनिया से चला गया। वैसे तो ये तथ्य सभी प्राणियों पर लागू होता है चूंकि बात मनुष्य की हो रही है तो इसी का संदर्भ यहाँ लिया जा रहा है। अब बात आत्मा की है तो यह सभी प्रकार के शरीरों में कर्म के अनुसार भ्रमण करती है। सिर्फ मनुष्य ही कर्म करने का अधिकारी होता है वो भी मृत्यु लोक में ही। इस के बाद कर्म के अनुसार ही जीवात्मा का अगला जीवन निर्धारित होता है। यह एक सर्वसाधारण प्रक्रिया है और वैदिक रीति से यही सत्य है। भारतीय संस्कृति में

*अधीक्षक, केन्द्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

"सत्यम परम धीमही" की परंपरा है। भारतीय परंपरा के ग्रंथ सिरोमणि श्रीमद्भागवत् जी का आरंभ ही सत्य की आराधना से किया गया है।

सच्चिदानंद रूपाया विश्वोत्पत्त्या आदि हेतवे।
ताप त्रय विनाशाय श्री कृष्णाय वयं नुमः ।।

भारतीय परंपरा जो सभी सभ्यताओं में पुरानी एवं पूर्ण है के अनुसार भगवान श्री कृष्ण को ही भगवान कहा जाता है इनके स्वांश एवं विभिन्नांशो का प्रकटीकरण हुआ है। स्वांश मेन सभी भगवान जैसे भगवान शिवजी, ब्रम्हाजी व विष्णुजी आदि भगवान जो बिल्कुल भगवान ही हैं इनमें भेद नहीं होता है। विभिन्नान्श को जीव सहकती कहा जाता है। इन सबकी संख्या अनंत है सिर्फ श्रीकृष्ण एक हैं। इनकी व्याख्या वेदों एवं उपनिषदों में विस्तृत है। इतने के बाद भी भगवान को कोई जानता नहीं है। इन्हे सिर्फ वही जान सकता है जिसे भगवान अपनी दिव्य ज्ञान–चक्षु प्रदान कर देते हैं। चूंकि भारतीय संस्कृति एक पूर्ण विकसित परंपरा थी है और रहेगी भी। इसे किसी पाश्चात्य पंडितों के अनुमोदन की आवश्यकता नहीं है। जो सभ्यता प्राणी मात्र का ख्याल रखती हो उसे ही सार्वभौमिक विकसित सभ्यता कहा जा सकता है। अब अपने मूल मुद्दों पर आते हैं।

अध्यात्म के बिना संसार नर्क बन जाता है। लोग स्वार्थी एवं निर्दयी हो जाते हैं। मनुष्य में चेतना का अपमान होने से प्राणी मात्र की महत्ता घट जाती है। आत्मकल्याण का मार्ग बंद सा लगने लगता है। लोग मनमौजी हो जाते हैं। आंतरिक सुचिता क्षीण हो जाती है।

मनुष्य का शरीर सभी शरीरों में से बहुमूल्य माना गया है। इस शरीर में रह कर जीवात्मा परमात्मा (भगवान) को उनकी भक्ति द्वारा प्राप्त कर सकती है। मनुष्य शरीर ने जैसा कर्म किया है उसी के परिणाम के अनुसार वह कर्मफल भोगता है।

आत्मा अजर है। सदा से है। यह न तो मरती है, न मारी जाती है। इसे आग नहीं जला सकती। वायु इसे सूखा नहीं सकता। जल इसे भिगा नहीं सकता। यह शाश्वत है। आत्मा को कोई भी शस्त्र काट नहीं सकता। श्रीमद्भगवत गीता जी में इस बात को स्पष्ट किया गया है। यह मानव जाति के लिए एक बहुमूल्य वरदान है। कहते हैं कि श्रीमद्भगवत गीता का संदेश मनुष्य जाति के लिए अनमोल अमृत वचन है–

नैनं छिंदंति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
नचौनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

वास्तव में मनुष्य जीवन का उद्देश्य सिर्फ अन्य प्राणिओं की भांति खाना, सोना व संतति जनना नहीं है, बल्कि स्वात्मा का उद्धार करना है। सनातन संस्कृति में श्रीमदभागवत गीता का संदेश एक अनमोल धरोहर है। यह मनुष्य जाति के उद्धार हेतु एक अद्भुत ग्रंथ है। इन बहुमूल्य उपदेशों के बदौलत भारत को संसार में मानव की वास्तविक महत्ता को उजागर करने का स्थान प्राप्त है। यह किसी संप्रदाय विशेष का ग्रंथ नहीं है और यही कारण है कि भारत आज भी सम्पूर्ण संसार में 'वसुधा ही कुटुंब' है। हमारा देश सीमा को बढ़ाने की चाह नहीं रखता है। यही सच्ची मानवता की है। मनुष्य की संवेदना समस्त प्राणी के प्रति होनी चाहिए। किसी की अवहेलना भारतीय संस्कृति में नहीं मिलती। भारतीय संस्कृति की विशेषता की व्याख्या करना सरल नहीं। मनुष्य एवं प्रकृति एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। इस संसार में मनुष्य को छोड़ कर कोई ऐसा प्राणी नहीं जो इस प्रकृति का दोहन कर सके।

सनातन ग्रंथों जैसे वेद, पुराण, श्रीमदभगवद्गीता और श्रीमदभागवतम महापुराण में मनुष्य के होने के महत्व को बखूबी से बताया गया है। आज के आधुनिक जीवन में भागम–भाग की स्थिति बनी हुई है। मनुष्य स्थिर मन से अंतरमुख नहीं हो पा रहा है। इसी कारण अपनी उद्विग्नता को शांत नहीं कर पा रहा है। दुविधा की स्थिति मन में सदा बनी रहती है। एक बार स्वामी विवेकानंद जी अपने ध ार्मिक प्रवचन से विराम लेकर अमेरिका में भ्रमण कर रहे थे। शाम का समय था बच्चे एक मैदान में निशानेबाजी का अभ्यास कर रहे थे। अचानक स्वामी जी ने उनके पास पहुँच गए, वो साधू के भेष में थे। जो बच्चा अभ्यास कर रहा था उसके हाँथ से गन ले कर धड़ा–धड़–धड़ा–धड़ दो तीन लक्ष्य साध दिये। बच्चे हक्के से मुँह देखते रह गए और पुछने लगे कि साधू को गन लाने का अभ्यास कैसे हुआ। इस पर स्वामी जी ने बताया इसमें कोई बड़ी बात नहीं है। मनुष्य का मन एकाग्र हो जाए तो उसे कोई चीज दुनिया में असंभव नहीं लगती। इससे सिद्ध होता है कि आज की अधिकतर जनसंख्या भौतिक क्षणिक सुखों में अपने बहुमूल्य जीवन को नष्ट–सा करती जा रही है।

एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
'रहिमन' मूलहि सींचिबो, फूलहि फलहि अघाय।।

स्वामी जी ने अपने भाषणों में यह स्पष्ट कहा है कि मनुष्य को उन्नति करनी चाहिए जो त्यागपूर्ण जीवन से सुलभ हो जाता है। शरीर और आत्मा का अध्ययन जरूरी

है। एक व्यक्ति तब–तक अपने व्यक्तित्व को भौतिक संसार में बरकरार रख सकता है जब–तक उसकी चेतना शरीर में विद्यमान रहती है। चेतना को आत्मा के नजदीक जाना जा सकता है। जैसे–जैसे चेतना को शरीर से अलग अनुभूति होती है वैसे–वैसे शरीर और आत्मा में अंतर समझना सुगम हो जाता है। सत्य तो ये है कि आत्मा दिव्य है जिसको मायिक यानि भौतिक नश्वर संसाधन से नहीं जाना जा सकता। निःसन्देह दिव्यवस्तु की परख भी दिव्य साधन से ही हो सकती है। अब प्रश्न उठता है कि आखिर मनुष्य की सारी कोशिश उसकी बुद्धि की सीमा से ऊपर नहीं हो सकती। अतः ईश्वर दिव्य होने के नाते मनुष्य की मायिक बुद्धि से परे है। ईश्वर की प्राप्ति के लिए मन को साधना द्वारा पवित्र, निर्मल करना आवश्यक है।

वैदिक शास्त्रों के अध्ययन करते हुए, महान विद्वानों के सानिध्य में रहकर उनके उपदेशों या दिशानिर्देशों का अक्षरसः पालन करके, मनुष्य भगवान की कृपा से ही उनको जान सकता है। भौतिक जगत के सत्यापन से अलग, यह एक बिलकुल विपरीत स्थिति होती है। इसमें विद्वानों द्वारा बताए गए मार्गों पर अडिग विश्वास के साथ आगे बढ़ना पड़ता है। संदेह की तनिक भी गुंजाइश नहीं होती। जब मनुष्य निर्देशों का पालन करने लगता है तो स्वयं प्रमाण बन जाता है, ईश्वर के होने का। ईश्वर कोई वस्तु व्यक्ति नहीं बल्कि एक उच्चतम स्थिति है जिसके बाद या पहले कुछ है ही नहीं। यानि आनंदघनपुंज, जो सब कुछ होता है। सर्वज्ञ होता है। सर्वशक्तिमान होता है। सर्वव्यापक होता है। अध्यात्म की ओर यात्रा रोचक होती है एवं परहित के हेतु होती है।

वैदिक काल की गणना भी बहुत रोचक होती है जिसे आम बोलचाल की भाषा में 'काल' या 'समय' कहते हैं। लोग किसी की मृत्यु पर यह बोली बोलते हुए सुने जाते हैं कि जो व्यक्ति मर गया उसका 'काल' आया था यानि जो व्यक्ति मर गया उसके लिए वही क्षण अंतिम क्षण होता है। जन्म एवं मरण के बीच के समय को जीव विशेष का जीवन काल कहते हैं। चेतना का शरीर में मौजूद रहने के समय को ही तो जीवन कहते हैं। अब चाहे उसे जीतने भागों में बाँटना चाहे बाँट दें। बचपन, किशोरावस्था, जवानी व बुढ़ापा आदि जीवन में शरीर की अवस्थाओं के नाम हैं। ये जितनी फिक्र हो रही है ये सिर्फ मनुष्य ही करता है अन्य प्राणिओं को कोई चिंता नहीं कि कितना समय हुआ है क्योंकि उनके हाथों में या उनके निवास स्थानों पर घर की दीवारों पर कोई घड़ी नहीं होती है, बल्कि वे प्रकृति से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार काल सीमित होता है और महाकाल का आंकलन नहीं किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति में 'महाकाल' भगवान के लिए प्रयोग में आता है जिसका आदि एवं अंत न हो उस अनंत भगवान के अंदर ही सारी क्रियाएँ हो रही हैं।

इस तरह यदि धर्म एवं इसकी अवधि पर विचार करें तो एक बात समझ में आती है कि सनातन धर्म या मानव धर्म या वैदिक धर्म कुछ भी नाम से जान लें, का आरंभ एवं अंत नहीं है। यह सदा से है एवं सृष्टि के आदि में भगवान द्वारा ही वेदों के रूप में ज्ञान की व्यवस्था की जाती है। जैसे संसार में विभिन्न देशों की सरकारें होती हैं वैसे ही इस ब्रह्माण्ड को संचालित करने हेतु दैविक प्राकृतिक व्यवस्था होती है। जीवन के लिए जल, पृथ्वी, वायु अग्नि व आकाश के रूप में पंच भूतों की आवश्यकता होती है। जीवन का विकास एक सतत प्रक्रिया है, चाहे वह शारीरिक हो या दैविक (दिव्य)। मनुष्य ही इन सभी में श्रेष्ठ प्राणी माना जाता है।

'दिव्य' इस लिए कि आरंभ में जीव माँ के गर्भ में रज–वीर्य के संयोग से बने पिंड में कुछ समय बाद प्रविष्ट करता है और इस पिंड का पोषण माँ के द्वारा गर्भ में होता रहता है। जिवनी शक्ति के अभाव में पिंड या शरीर प्रकृति में विलीन हो जाता है जिसे वैज्ञानिक ढंग से विघटन कहते हैं।

जीवात्मा क्या है? प्रश्न उठता है। कहाँ से आता है? शरीर को त्यागने के बाद (मरने पर) कहाँ जाता है? जब जन्म लेता है मनुष्य का बच्चा तो उसका नाम रखा जाता है कुछ भी जैसे रामू, श्याम, गोपाल, आदि। लेकिन जब वही व्यक्ति मर जाता है तो लोग बोलते है, रामू चला गया। प्रश्न तब खड़ा होता है कि कौन रामू? उत्तर समाधान कारक नहीं मिल पाता। लोग दबी जबान से एवं पूरी जानकारी लिए बगैर स्वीकार कर लेते हैं कि रामू मर गया। कहाँ गया रामू? जबाब नहीं मिलता। बस गया और फिर लोग अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में व्यस्त हो जाते हैं। सगे–संबंधी कुछ रोज याद करते हैं, वो भी उसके शरीर को जिसे कोई भी अपने साथ घर में रख नहीं सकता क्योंकि शरीर का विघटन होने के बाद रामू नाम का कोई अस्तित्व नहीं दिखाई देता है। ख्याल रहे जन्म होने से पहले भी कोई रामू नहीं था लेकिन शरीर जब जन्मा तो नाम पड़ा। रामू और जब चेतना ने त्याग दिया शरीर को तो नाम भी खत्म हो गया। लोग ये नहीं कहते की ये रामू है बल्कि कहते हैं कि यह रामू का शव है। शव कभी बोल नहीं सकता।

पूछते रह जाते हैं मोह में फंसे सगे–संबंधी लेकिन कोई जवाब नहीं मिलता उस रामू नाम के शव से। इससे साबित होता है कि जिसे रामू नाम दिया गया था वो चेतना थी और शरीर त्यागने के बाद रामू नहीं रहा। यही स्थिति जीव की प्रत्येक शरीर की चेतना के त्याग के बाद होती है। इससे साबित होता है कि शरीर एवं उसकी चेतना शक्ति अलग अलग हैं क्योंकि चेतना के त्यागने के बाद शरीर का विघटन आरंभ हो जाता है।

चेतना को ही आत्मा, जीव आदि नामों से वैदिक संस्कृति में जाना जाता है। वेद के सार उपनिषदों में ब्रह्म, परमात्मा व भगवान की व्याख्या खूब की है। ये तीनों पर्यायवाची शब्द हैं एक ही सत्ता के। ब्रह्म में कम शक्तियों का विकास रहता है। परमात्मा में ब्रह्म से अधिक लेकिन भगवान से कम तथा भगवान में पूर्ण शक्तियों का विकास सदैव रहता है। इन्हीं परम शक्ति को भगवाम श्री कृष्ण कहा जाता है। इनकी महत्ता एवं गुणों का वर्णन कोई नहीं कर सकता है। ये अनंत है और अनादि काल से हैं। माया इनकी जड़ शक्ति है जो बहिरंगा शक्ति हैं। जीव इनकी तटस्था शक्ति है। जीव को बहुत पुण्य एवं भगवान की विशेष कृपा होने के बाद मनुष्य का जीवन मिलता है जिसमें जीव अच्छे कर्म करके अपनी मुक्ति का उपाय कर सकता है। इसी जीवन में किए हुए कर्म जीव के निम्न एवं उच्च योनि में जन्मने का कारण बनते हैं तथा जीव अन्य किसी भी योनि में कोई कर्म नहीं कर सकता। अतः मनुष्य जीवन इस सृष्टि का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवन संरचना में महत्वपूर्ण जीवन है।

इस प्रकार मनुष्य ही इस सृष्टि का सर्वोत्तम जीव माना गया है उसमें भी यदि उसे ईश्वर की भक्ति का सानिध्य मिले तो वह सोने पे सुहागे के समान हो जाता है। ऐसी सोच जिसमें सिर्फ मनुष्य मात्र की चिंता की गयी हो किसी अन्य धार्मिक ग्रन्थों में नहीं मिलता। इसीलिए भारतीय संस्कृति को विश्व की धरोहर समझना चाहिए। इसे कभी भी भौतिक स्वार्थ के तराजू पर नहीं तौला जाना चाहिए। यही एक प्राचीन सभ्यता पूरे विश्व में जीवित बची है क्योंकि इसमें आत्मसम्मान की परिकल्पना मिलती है और अंतिम लक्ष्य तक इसे सिद्ध हुआ पाया गया है।

भूल न जाना

आर. एन. गौतम*

बच्चों मुझको भूल न जाना।
आना जाना मिलना जुलना।
यह सब है एक बहाना।
तुमको है बस याद दिलाना।
बच्चों मुझको भूल न जाना
हर पल आती याद तुम्हारी।
दिल में है तस्वीर तुम्हारी
लिखने पढ़ने की उम्र तुम्हारी।
तुम पे बढ़ी रहे जिम्मेदारी।
पूर्ण निष्ठा से इसे निभाना।
बच्चों मुझको भूल न जाना
उत्तम रहे स्वास्थ्य तुम्हारा।
सत्कर्म हो लक्ष्य तुम्हारा।
परसेवा हो व्यवहार तुम्हारा।
सत संगत हो मार्ग तुम्हारा।
शुद्ध भारतीय आदर्श बनाना।
बच्चों मुझको भूल न जाना
कभी न करना झूठा वादा।
बोलो कम चिन्तन ज्यादा।
हो दूर दृष्टि नेक इरादा।
उच्च विचार भोजन सादा।
विश्व में उज्ज्वल नाम कमाना।
बच्चों मुझको भूल न जाना
मेरे बाद नभ में एक तारा देखोगे।
उसमें तुम मेरी छाया खोजोगे।
मिल जुलकर तुम सब सोचोगे।
नाना–दादा की सूरत खोजोगे।
दो बूँदें आँसू की टपकाना।
बच्चों मुझको भूल न जाना

* द्वारा श्री अमरीश गौतम, उप. महाप्रबंधक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

मैं जिन्दा रहूँगा

साहित्यिकी

विष्णु प्रभाकर*

साहित्यकार विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून, 1912 को मीरपुर, जिला–मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। विष्णु जी को लिखने की प्रेरणा उनकी मां से मिली। एक बार उन्होंने मां से पूछा कि यह किताबें कौन लिखता है। क्या मैं भी ऐसा लिख सकता हूँ। मां ने जबाव देते हुए कहा कि हाँ जरूर तुम भी लिख सकते हो, जिन्होंने यह किताबें लिखी हैं वह भी तो हमारी तरह साधारण लोग हैं। तब से उनके मन में किताब लिखने की प्रेरणा उत्पन्न हुई। विष्णु जी को बच्चों से बहुत प्यार था। वे इन्हें राष्ट्र की रीढ़ कहकर पुकारते थे। उन्होंने बच्चों के लिए विपुल साहित्य की रचना की।

देश–विदेश के अनेक सम्मान पुरस्कारों से उन्हें विभूषित किया गया। आवारा मसीहा के लिए पाब्लो नेरूदा सम्मान (इंडियन राइटर्स एसोसिएशन) और सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार, अंतरराष्ट्रीय मानव पुरस्कार, राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, सूर पुरस्कार (हरियाणा साहित्य अकादमी), तुलसी पुरस्कार (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान) आदि पुरस्कार प्राप्त हुए।

इनकी प्रमुख रचनाएं–दर्पण का व्यक्ति, जिंदगी के थपेड़े, सफर के साथी, मेरी तैंतीस कहानियाँ, मेरी इक्यावन कहानियाँ, नवप्रभाव, युगे–युगे क्रांति, गांधार की भिक्षुणी, अशोक तथा अन्य एकांकी, ऊंचा पर्वत गहरा सागर, मोटे लाला, कुंती के बेटे, रामू की होली, दादा की कचहरी आदि हैं।

दावत कभी की समाप्त हो चुकी थी, मेहमान चले गये थे और चाँद निकल आया था। प्राण ने मुक्त हास्य बिखेरते हुए राज की ओर देखा। उसको प्रसन्न करने के लिए वह इसी प्रकार के प्रयत्न किया करता था। उसी के लिए वह मसूरी आया था। राज की दृष्टि तब दूर पहाड़ों के बीच, नीचे जाने वाले मार्ग पर अटकी थी। हल्की चाँदनी में वह धुँधला बल खाता मार्ग अतीत की धुँधली रेखाओं को और भी धुँधला कर रहा था। सच तो यह है कि तब वह भूत और भविष्य में उलझी अपने में खोयी हुई थी। प्राण के मुक्त हास्य से वह कुछ चौंकी। दृष्टि उठाई। न जाने उसमें क्या था, प्राण काँप उठा, बोला, ''तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?''

राज ने उस प्रश्न को अनसुना करके धीरे से कहा, ''आपके दाहिनी ओर जो युवक बैठा था, उसको आप अच्छी तरह जानते हैं?''

''किसको, वह जो नीला कोट पहने था?''

''हाँ, वही।''

''वह किशन के पास ठहरा हुआ है। किशन की पत्नी नीचे गयी थी, इसीलिए मैंने उसे यहाँ आने को कह दिया था। क्यों, क्या तुम उसे जानती हो?''

''नहीं, नहीं, मैं वैसे ही पूछ रही थी।''

''मैं समझ गया, वह दिलीप को बहुत प्यार कर रहा था। कुछ लोग बच्चों से बहुत प्रेम करते हैं।''

''हाँ, पर उसका प्रेम 'बहुत' से कुछ अधिक था।''

''क्या मतलब?''

''तुमने तो देखा ही था, दिलीप उनकी गोद से उतरना नहीं चाहता था।''

प्राण ने हँसते हुए कहा, ''बच्चा सबसे अधिक प्यार को पहचानता है। उसका हृदय शरत की चाँदनी से भी निर्मल होता है।''

तभी दोनों की दृष्टि सहसा दिलीप की ओर उठ गयी। वह पास ही पलँग पर मखमली लिहाफ ओढ़े सोया था। उसके सुनहरे घुँघराले बालों की एक लट मस्तक पर आ गयी थी। गौर वर्ण पर उसकी सुनहरी छाया चन्द्रमा के प्रकाश के समान बड़ी मधुर लग रही थी। बच्चा सहसा मुस्कराया। राज फुसफुसायी, ''कितना प्यारा है!''

प्राण बोला, ''ऐसा जान पड़ता है कि शैशव को देखकर ही किसी ने प्यार का आविष्कार किया था।''

दोनों की दृष्टि मिली। दोनों समझ गये कि इन निर्दोष उक्तियों के पीछे कोई तूफान उठ रहा है, पर बोला कोई कुछ नहीं। राज ने दिलीप को प्यार से उठाया और

अन्दर कमरे में ले जाकर लिटा दिया। मार्ग में जब वह कन्धे से चिपका हुआ था, तब राज ने उसे तनिक भींच दिया। वह कुनमुनाया, पर पलँग पर लेटते ही शान्त हो गया। वह तब कई क्षण खड़ी–खड़ी उसे देखते रही। लगा, जैसे आज से पहले उसने बच्चे को कभी नहीं देखा था, पर शीघ्र ही उसका वह आनन्द भंग हो गया। प्राण ने आकर कहा, ''अरे! ऐसे क्या देख रही हो, राज?''

''कुछ नहीं।''

वह हँसा, ''जान पड़ता है, प्यार में भी छूत होती है।''

राज ने वहाँ से हटते हुए धीरे से कहा, ''सुनिए, अपने उन मित्र के मित्र को अब यहाँ कभी न बुलाइए।''

इन शब्दों में प्रार्थना नहीं थी, भय था। प्राण की समझ में नहीं आया। चकित–सा बोला, ''क्या मतलब?''

राज ने कुछ जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप बाहर चली गयी और अपने स्थान पर बैठकर पहले की भाँति उस बल खाते हुए मार्ग को देखने लगी। नीचे कुलियों का स्वर बन्द हो गया था। ऊपर बादलों ने सब कुछ अपनी छाया में समेट लिया था। चन्द्रमा का प्रकाश भी उसमें इस तरह घुल–मिल गया था कि उनकी भिन्नता रहस्यमय हो उठी थी। राज को लगा, बादलों की वह धुन्ध उसके अन्दर भी प्रवेश कर चुकी है और उसकी शान्ति को लील गयी है। सहसा उसकी आँखें भर आयीं और वह एक झटके के साथ कुर्सी पर लुढककर फूट–फूटकर रोने लगी। प्राण सब कुछ देख रहा था। वह न सकपकाया, न क्रुद्ध हुआ। उसी तरह खड़ा हुआ उस फूटते आवेग को देखता रहा। जब राज के उठते हुए निःश्वास कम हुए और उसने उठकर आँखें पोंछ डालीं, तब उसने कहा, ''दिल का बोझ उतर गया? आओ तनिक घूम आएँ।''

राज ने भीगी दृष्टि से उसे देखा। एक क्षण ऐसे ही देखती रही। फिर बोली, ''प्राण, मैं जाना चाहती हूँ।''

''कहाँ?''

''कहीं भी।''

प्राण बोला, ''दुनिया को जानती हो। क्षण–भर पहले यहाँ सब कुछ स्पष्ट था, पर अब नहीं है, सब कुछ बादलों की धुन्ध में खो गया है।''

''मैं भी इस धुन्ध में खो जाना चाहती हूँ।''

प्राण ने दोनों हाथ हवा में हिलाये और गम्भीर होकर कहा, ''तुम्हारी इच्छा। तुम्हें किसी ने बाँधा नहीं है, जा सकती हो।''

राज उठी नहीं। उसी तरह बैठी रही और सोचती रही। रात आकर चली गयी, उसका सोचना कम नहीं हुआ, बल्कि और भी गहरा हो उठा। उसने दिन–भर दिलीप को अपने से अलग नहीं किया। स्वयं ले जाकर माल पर झूले में झुला लायी। स्वयं घुमाने ले गयी और फिर खिला–पिलाकर सुलाया भी स्वयं। बहुत देर तक लोरी सुनायी, थपथपाया, सहलाया। वह सो गया, तो रोयी और रोते–रोते बाहर बरामदे में जाकर अपने स्थान पर बैठ गयी। वही चन्द्रमा का धुँधला प्रकाश, वही बादलों की धुन्ध, वही प्रकृति की भाँति ऊपर अपूर्व शान्ति और अन्दर तूफान की गरज। प्राण ने आज राज को कुछ भी न कहने का प्रण कर लिया था। वह उसकी किसी इच्छा में बाधा नहीं बना। अब भी जब वह दृष्टि गड़ाये उस बल खाते मार्ग को ढूँढने की विफल चेष्टा कर रही थी, वह कुर्सी की पीठ पर हाथ रखे हुए खड़ा था। तभी लगा कोई जीने में आ रहा है। राज एकाएक बोल उठी,, ''वे आ गये।''

''कौन?''

''आपके मित्र के मित्र।''

वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि वे मित्र बरामदे में आते हुए दिखाई दिये। प्राण ने देखा कि वे अकेले नहीं हैं। उनके साथ एक पुरुष तथा एक नारी भी है। दोनों सभ्य लगते हैं। नारी विशेष सुन्दर है, पर इस समय वे अतिशय गम्भीर हैं, उनकी आँखें बताती हैं कि वे व्यग्र भी हैं। प्राण उन्हें देखकर काँपा तो, पर आगे बढकर उसने उनका स्वागत भी किया। मुस्कराकर बोला, ''आइए, आइए। नमस्ते। किशोर नहीं आये?'

''जी, किशोर नहीं आ सके।''

''बैठिए, आइए, आप इधर आइए।''

बैठ चुके तो प्राण ने अपरिचितों की ओर देखकर पूछा, ''आपका परिचय।''

''ये मेरी बहन हैं और ये बहनोई।''

''ओह!'' प्राण मुस्कराया, हाथ जोड़े, दृष्टि मिली, जैसे कुछ हिला हो। फिर भी सम्भलकर बोला, ''आप आजकल कहाँ रहते हैं?''

मित्र ने दीर्घ निःश्वास लेकर कहा, ''कहाँ रहते। विधाता ने ऐसा उखाड़ा है कि कहीं जमते ही नहीं बनता।''

प्राण बोला, ''हाँ भाई। वह तो जैसा हुआ सभी जानते हैं, पर उसकी चर्चा किससे करें।''

और फिर मुडकर राज से, जो बुत बनी बैठी थी,

कहा, ''अरे भई, चाय–वाय तो देखो।''

मित्र एकदम बोले, ''नहीं, नहीं। चाय के लिए कष्ट न करें। इस वक्त तो एक बहुत आवश्यक काम से आये हैं।''

प्राण बोलो, ''कहिए।''

मित्र कुछ झिझके। प्राण ने कहा, ''शायद एकान्त चाहिए।''

''जी।''

''आइए उधर बैठेंगे।''

वह उठा ओर कोने में पड़ी हुई एक कुरसी पर जा बैठा। मित्र भी पास की दूसरी कुर्सी पर बैठ गये। एक क्षण रुककर बोले, ''क्षमा कीजिए, आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। है तो वह बेहूदा ही।''

''कोई बात नहीं,'' प्राण मुस्कराया, ''प्रश्न पूछना कभी बेहूदा नहीं होता।''

मित्र ने एकदम सकपकाकर पूछा, ''दिलीप आपका लडका है?''

प्राण का हृदय धक्–धक् कर उठा। ओह, यह बात थी। उसने अपने–को सँभाला और निश्चित स्वर में कहा, ''जी हाँ! आज तो वह मेरा ही है!''

''आज तो?''

''जी हाँ, वह सदा मेरा नहीं था।''

''सच?''

''जी हाँ! काफले के साथ लौटते हुए राज ने उसे पाया था।''

''क्या'', मित्र हर्ष और अचरज से काँप उठे, ''कहाँ पाया था?''

''लाहौर के पास एक ट्रेन में।''

''प्राण बाबू, प्राण बाबू! आप नहीं जानते यह बच्चा मेरी बहन का है। मैं उसे देखते ही पहचान गया था। ओह प्राण बाबू! आप नहीं जानते, उनकी क्या हालत हुई,'' और उछलकर उसने पुकारा, ''भाई साहब, भाई साहब। रमेश मिल गया।''

और फिर प्राण को देखकर कहा, ''आप प्रमाण चाहते हैं? मेरे पास उसके फोटो हैं। यह देखिए।''

और उसने जेब से फोटो पर फोटो निकालकर सकपकाये हुए प्राण को चकित कर दिया। क्षण–भर में वहाँ का दृश्य पलट गया। रमेश के माता–पिता पागल हो उठे। माँ ने तड़पकर कहा, ''कहाँ है। रमेश कहाँ है?''

राज ने कुछ नहीं देखा। वह शीघ्रता से अन्दर गयी और दिलीप को छाती से चिपकाकर फफक उठी। दूसरे ही क्षण वे सब उसके चारों ओर इकट्ठे हो गये। वे सब उद्विग्न थे, पर प्राण अब भी शान्त था। उसने धीरे से राज से कहा, ''राज, दिलीप की माँ आ गयी है।''

''उसकी माँ!'' राज ने फफकते हुए कहा, ''तुम सब चले जाओ। तुम यहाँ क्यों आये? दिलीप मेरा है। मैं उसकी माँ हूँ।''

दिलीप (रमेश) की माँ रोती हुई बोली, ''सचमुच, माँ तुम्हीं हो। तुमने उसे पुनर्जन्म दिया है।''

सुनकर राज काँप उठी। उसने दृष्टि उठाकर पहली बार उस माँ को देखा और देखती रह गयी। तब तक दिलीप जाग चुका था और उस चिल्ल–पों में घबराकर, किसी भी शर्त पर, राज की गोद में उतरने को तैयार नहीं था। वह नवागन्तुकों को देखता और चीख पड़ता।

साल–भर पहले जब राजा ने उसे पाया था, तब वह पूरे वर्ष का भी नहीं था। उस समय सब लोग प्राणों के भय से भाग रहे थे। मनुष्य मनुष्य का रक्त उलीचने में होड़ ले रहा था। नारी का सम्मान और शिशु का शैशव सब पराभूत हो चुके थे। मनुष्य का मनुष्यत्व ही नष्ट हो चुका था। भागते मनुष्यों पर राह के मनुष्य टूट पड़ते और लाशों का ढेर लगा देते, रक्त बहता और उसके साथ ही बह जाती मानवता। ऐसी ही एक ट्रेन में राज भी थी। हमला होने पर जब वह संज्ञाहीन–सी अज्ञात दिशा की ओर भागी, तो एक बर्थ के नीचे से अपने सामान के भुलावे में वह जो कुछ उठाकर ले गयी, वही बाद में दिलीप बन गया। यह एक अद्भुत बात थी। अपनी अन्तिम सम्पत्ति खोकर उसने एक शिशु को पाया, जो उस रक्त–वर्षा के बीच बेखबर सोया हुआ था। उसने कैम्प में आकर जब उस बालक को देखा तो अनायास ही उसके मुँह से निकला, ''मेरा सब कुछ मुझसे छीनकर आपने यह कैसा दान दिया है प्रभु।'' लेकिन तब अधिक सोचने का अवसर नहीं था। वह भारत की ओर दौड़ी। मार्ग में वे अवसर आये, जब उसे अपने और उस बच्चे के बीच किसी एक को चुनना था, पर हर बार वह प्राणों पर खेलकर उसे बचा लेने में सफल हुई। मौत भी जिस बालक को उससे छीनने में असफल रही, वही अब कुछ क्षणों में उससे अलग हो जाएगा, क्योंकि वह उसका नहीं था, क्योंकि वह उसकी माँ नहीं थी। ''नहीं, नहीं...दिलीप उसका है।'' और वह फफक–फफककर रोने लगी। प्राण ने और भी पास आकर धीरे से शान्त स्वर में कहा, ''राज! माँ बनने से भी

एक बड़ा सौभाग्य होता है और वह है किसी के मातृत्व की रक्षा।''

''नहीं, नहीं...'' वह उसी तरह बोली, ''मैं वह सौभाग्य नहीं चाहती।''

''सौभाग्य तुम्हारे न चाहने से वापस नहीं लौट सकता राज, पर हाँ! तुम चाहो तो दुर्भाग्य को सौभाग्य में पलट सकती हो।''

राज सहसा प्राण की ओर देखकर बोली, ''तुम कहते हो, मैं इसे दे दूँ?''

''मैं कुछ नहीं कहता। वह उन्हीं का है। तुम उनका खोया लाल उन्हें सौंप रही हो इस कर्तव्य में जो सुख है, उससे बड़ा सौभाग्य और क्या होगा! उस सौभाग्य को क्षणिक कायरता के वश होकर ठुकराओ नहीं राज।''

राज ने एक बार और प्राण की ओर देखा, फिर धीरे–धीरे अपने हाथ आगे बढ़ाये और दिलीप को उसकी माँ की गोदी में दे दिया। उसके हाथ काँप रहे थे, होंठ काँप रहे थे। जैसे ही दिलीप को उसकी माँ ने छाती से चिपकाया, राज ने रोते हुए चिल्लाकर कहा, ''जाओ। तुम सब चले जाओ, अभी इसी वक्त।''

प्राण ने कोई प्रतिवाद नहीं किया, बल्कि जीने तक उनको छोडने आया। उन लोगों ने बहुत कुछ कहना चाहा, पर उसने कुछ नहीं सुना। बोला, ''मुझे विश्वास है, बच्चा आपका है, वह आपको मिल गया। आपका–सा सौभाग्य सबको प्राप्त हो, लेकिन मेरी एक प्रार्थना है।''

''जी, कहिए। हमें आपकी हर बात स्वीकार है।''

प्राण ने बिना सुने कहा, ''कृपा कर अब आप लोग इधर न आएँ।''

वे चौंके, ''क्या?''

''जी, आपकी बड़ी कृपा होगी।''

''पर सुनिए तो...।''

प्राण ने कुछ न सुना और अगले दिन मसूरी को प्रणाम करके आगे बढ़ गया। राज की अवस्था मुरदे जैसी थी। वह पीली पड़ गयी थी। उसके नेत्र सूज गये थे। प्राण ने उस क्षण के बाद फिर एक शब्द भी ऐसा नहीं कहा, जो उसे दिलीप की याद दिला सके, लेकिन याद क्या दिलाने से आती है? वह तो अन्तर में सोते की भाँति उफनती है, राज के अन्तर में भी उफनती रही। उसी उफान को शान्त करने के लिए प्राण मसूरी से लखनऊ आया। वहाँ से कलकत्ता और फिर मद्रास होता हुआ दिल्ली लौट आया। दिन बीत गये, महीने भी आये और चले गये। समय की सहायता पाकर राज दिलीप को भूलने लगी। प्राण ने फिर व्यापार में ध्यान लगाया, पर साथ ही उसके मन में एक आकांक्षा बनी रही। वह राज को फिर शिशु की अठखेलियों में खोया देखना चाहता था। वह कई बार अनाथालय और शिशु–गृह गया, पर किसी बच्चे को घर न ला सका। जैसे ही वह आगे बढ़ता कोई अन्दर से बोल उठता, 'न जाने कौन कब आकर इसका भी माँ–बाप होने का दावा कर बैठे।''

और वह लौट आता। इसके अलावा बच्चे की चर्चा चलने पर राज को दुख होता था। कभी–कभी तो दौरा भी पड़ जाता था। वह अब एकान्तप्रिय, सुस्त और अन्तर्मुखी हो चली थी। प्राण जानता था कि वह प्रभाव अस्थायी है। अन्तर का आवेग इस आवरण को बहुत शीघ्र उतार फेंकेगा। नारी की जड़ें जहाँ हैं, उसके विपरीत फल कहाँ प्रकट हो सकता है? वह एक दिन किसी बच्चे को घर ले आवेगा और कौन जानता है तब तक...।

वह इसी उधेड़बुन में था कि एक दिन उसने होटल से लौटते हुए देखा कि एक व्यक्ति उन्हें घूर–घूरकर देख रहा है। उसने कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया। लोग देखा ही करते हैं। आज के युग का यह फैशन है, उसके पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं। जब–तब अवसर पाकर छत की दीवार से झाँककर राज को देखा करते हैं। राज ने कई बार उनकी इस हरकत की शिकायत भी की थी। लेकिन अगले दिन, फिर तीसरे दिन, चौथे दिन यहाँ तक कि प्रतिदिन वही व्यक्ति उसी तरह उनका पीछा करने लगा। अब प्राण को यह बुरा लगा। उसने समझ इसमें कोई रहस्य है क्योंकि वह व्यक्ति राज के सामने कभी नहीं पड़ता था और न राज ने अब तक उसे देखा था। कम से कम वह इस बात को नहीं जानता था। यही सब कुछ सोचकर प्राण ने उस व्यक्ति से मिलना चाहा। एक दिन वह अकेला ही होटल आया और उसने उस व्यक्ति को पूर्वतः अपने स्थान पर देखा। प्राण ने सीधे जाकर उसके कन्धे पर हाथ रख दिया। वह व्यक्ति एकदम काँप उठा, बोला, ''क्या, क्या है?''

प्राण ने शान्त भाव से कहा, ''यही तो मैं आपसे पूछने आया हूँ।''

अचरज से वह व्यक्ति जिस तरह काँपा, उसी तरह एकदम दृढ़ होकर बोला, ''तो आप समझ गये। क्षमा करिए, मैं स्वयं आपसे बात करने वाला था।''

''अब तक क्यों नहीं कर सके?''

उसने उसी तरह कहा, ''क्योंकि मैं पूर्ण आश्वस्त नहीं था और आप जानते हैं, आज के युग में ऐसी–वैसी बातें करना मौत को बुलाना है।''

प्राण उसकी वाणी से आश्वस्त तो हुआ, पर उसका हृदय धक्–धक् कर उठा। उसने कहा, ''आप ठीक कहते हैं, पर अब आप निस्संकोच होकर जो चाहें कह सकते हैं।''

वह बोला, ''बात ऐसी ही है। आप बुरा न मानिए।''

''आप कहिए।''

वह तनिक झिझका, फिर शीघ्रता से बोला, ''आपके साथ जो नारी आती है, वह आपकी कौन है?''

''आपका मतलब?''

''जी... ।''

प्राण सँभला, बोला, ''वह मेरी सब कुछ है और कुछ भी नहीं है।''

''जी, मैं पूछता था क्या वे आपकी पत्नी हैं?''

''मेरी पत्नी...?''

''जी।''

''नहीं।''

''नहीं?''

''जी हाँ।''

''आप सच कह रहे हैं?'' उसकी वाणी में अचरज ही नहीं, हर्ष भी था।

''जी हाँ! मैं सच कहता हूँ। अग्नि को साक्षी करके मैंने कभी उससे विवाह नहीं किया।''

''फिर?''

''लाहौर से जब भागा था, तब मार्ग में एक शिशु के साथ उसे मैंने संज्ञाहीन अवस्था में एक खेत में पाया था।''

''तब आप उसे अपने साथ ले आये।''

''जी हाँ।''

''फिर क्या हुआ?''

''होता क्या? तब से वह मेरे साथ है।''

''लोग उसे आपकी पत्नी समझते हैं।''

''यह तो स्वाभाविक है। पुरुष के साथ इस तरह जो नारी रहती है, वह पत्नी ही होगी, इससे आगे आज का आदमी क्या सोच सकता है, पर आप ये सब बातें क्यों पूछते हैं? क्या आप उसे जानते हैं?''

''जी,'' वह काँपा, बोला, ''वह...वह मेरी पत्नी हैं।''

''आपकी पत्नी,'' प्राण सिहर उठा।

''जी।''

''और आप उसे चोरों की भाँति ताका करते हैं?''

अब उसका मुँह पीला पड़ गया और नेत्र झुक गये, पर दूसरे ही क्षण न जाने क्या हुआ। उसने एक झटके के साथ गरदन ऊँची की, बोला, ''उसका एक कारण है। मैं उसे छिपाऊँगा नहीं। उन मुसीबत के क्षणों में मैं उसकी रक्षा नहीं कर सका था।''

प्राण न जाने क्यों हँस पड़ा, ''छोडकर भाग गये थे। अक्सर ऐसा होता है।''

''भागा तो नहीं था, पर प्राणों पर खेलकर उस तक आ नहीं सका था।''

''वह जानती है?''

''नहीं कह सकता।'' ''आपको भय है कि वह जानती होगी?''

''भय तो नहीं, पर ग्लानि अवश्य है।''

प्राण के भीतर के मन को जैसे कोई धीरे–धीरे छुरी से चीरने लगा हो, पर ऊपर से वह उसी तरह शान्त स्वर में बोला, ''तो राज आपकी पत्नी है, सच?''

उस व्यक्ति ने रुँधे कण्ठ से कहा, ''कैसे कहूँ। मैंने उसको ढूँढने के लिए क्या नहीं किया? सभी कैम्पों में, रेडियो स्टेशन पर, पुलिस में सभी जगह उसकी रिपोर्ट मौजूद है।''

प्राण बोला, ''आप उसे ले जाने को तैयार हैं?''

वह झिझका नहीं, कहा, ''जी इसीलिए तो रुका हूँ।''

''आपको किसी प्रकार का संकोच नहीं?''

''संकोच'', उसने कहा, ''संकोच करके मैं अपने पापों को और नहीं बढ़ाना चाहता। महात्मा जी...''

''तो फिर आइए,'' प्राण ने शीघ्रता से उसकी बात काटते हुए कहा, ''मेरे साथ चलिए।''

''अभी?''

''इसी वक्त। आप कहाँ रहते हैं?''

''जालंधर।''

''काम करते हैं?''

''जी हाँ। मुझे स्कूल में नौकरी मिल गयी है।''

''आपके बच्चे तो दोनों मारे गये थे?''

''जी, एक बच गया था।''

''सच?''

''जी, एक बच गया था।''

''सच?''

''जी, वह मेरे पास है।''

प्राण का मन अचानक हर्ष से खिल उठा। शीघ्रता से बोला, ''तो

''सुनिए, राज घर पर है। आप उसे अपने साथ ले जाइए। मैं पत्र लिखे देता हूँ।''

''आप नहीं चलेंगे?''

''जी नहीं। मैं बाहर जा रहा हूँ। लखनऊ में एक आवश्यक कार्य है। तीन–चार दिन में लौटूँगा, आप उसे ले जाइएगा। कहना उसका पुत्र जीवित है। मुझे देखकर वह दुखी होगी। समझे न।''

''समझ गया।''

''आप भाग्यवान हैं। मैं आपको बधाई देता हूँ और आपके साहस की प्रशंसा करता हूँ।''

वह व्यक्ति कृतज्ञ, अनुगृहीत कुछ जवाब दे कि प्राण ने एक परचा उसके हाथ में थमाया और बिजली की भाँति गायब हो गया।

पत्र में लिखा था–

राज!

बहादुर लोग गलती कर सकते हैं, पर धोखा देना उनकी प्रकृति के विरुद्ध है। फिर भी दो शब्द मुझे तुम्हारे पास लाने को पर्याप्त हैं। प्रयत्न करना उनकी आवश्यकता न पड़े। मुझे जानती हो, मरने तक जीता रहूँगा। कृप्राण

यह व्यक्ति ठगा–सा बहुत देर तक वहीं खड़ा रहा। कंगाल की फटी झोली में कोई रत्न डाल गया हो, ऐसी उसकी हालत थी, पर जन्म से तो वह कंगाल नहीं था। इसलिए साहस ने उसे धोखा नहीं दिया और वह प्राण के बताये मार्ग पर चल पड़ा।

पूरे पन्द्रह दिन बाद प्राण लौटा। जब तक उसने द्वार को नहीं देखा, उसके प्राण सकते में आये रहे। जब देखा कि द्वार बन्द है और उसका चिर–परिचित ताला लगा है तो उसके प्राण तेजी से काँपे। किवाड़ खोलकर वह ऊपर चढ़ता ही चला गया। आगे कुछ नहीं देखा। देख ही नहीं सका। पालना पड़ा था, उससे ठोकर लगी और वह पलंग की पट्टी से जा टकराया। मुख से एक आह निकली। माथे में दर्द का अनुभव हुआ। खून देखा, फिर पालना देखा, फिर पलंग देखा, फिर घर देखा। सब कहीं मौन का राज्य था। प्रत्येक वस्तु पूर्वतः अपने स्थान पर सुरक्षित थी। प्राण के मन में उठा, पुकारें– राज!

पर वह काँपा...राज कहाँ है? राज तो चली गयी। राज का पति आया था। राज का पुत्र जीवित है। सुख भी कैसा छल करता है। जाकर लौट आता है। राज को पति मिला, पुत्र मिला। दिलीप को माँ–बाप मिले। और मुझे...मुझे क्या मिला...?

उसने गरदन को जोर से झटका दिया। फुसफुसाया–'ओह मैं कायर हो चला। मुझे तो वह मिला, जो किसी को नहीं मिला।'

तभी सहसा पास की छत पर खटखट हुई, राज को घूरने वाले पड़ोसी ने उधर झाँका। प्राण को देखा, तो गम्भीर होकर बोला, ''आप आ गये?''

''जी हाँ।''

''कहाँ चले गये थे?''

''लखनऊ।''

''बहुत आवश्यक कार्य था क्या? आपके पीछे तो मुझे खेद है...।''

''जी, क्या?''

''आपकी पत्नी...।''

''मेरी पत्नी?''

''जी, मुझे डर है वह किसी के साथ चली गयी।''

''चली गयी? सच। आपने देखा था?''

''प्राण बाबू, मैं तो पहले ही जानता था। उसका व्यवहार ऐसा ही था। कोई पन्द्रह दिन हुए आपके पीछे एक व्यक्ति आया था। पहले तो देखते ही आपकी पत्नी ने उसे डाँटा।''

''आपने सुना?''

''जी हाँ। मैं यहीं था। शोर सुनकर देखा, वह क्रुद्ध होकर चिल्ला रही है, 'जाओ, चले जाओ। तुम्हें किसने बुलाया था? तुम क्यों आये? मैं उन्हें पुकारती हूँ?' ''

''सच, ऐसा कहा?

''जी हाँ।''

''फिर?''

''फिर क्या प्राण बाबू। वे बाबू साहब बड़े ढीठ निकले। गये नहीं। एक पत्र आपकी पत्नी को दिया, फिर हाथ जोड़े। पैरों में पड़ गये।''

''क्या यह सब आपने देखा था?''

''जी हाँ, बिलकुल साफ देखा था।''

''फिर?''

''फिर वे पैरों में पड़ गये, पर आपकी पत्नी रोती रही। तभी अचानक उसने न जाने क्या कहा। वह काँपकर

वहीं गिर पड़ी। फिर तो उसने, क्या कहूँ, लाज लगती है। जी में तो आया कि कूदकर उसका गला घोंट दूँ, पर मैं रुक गया। दूसरे का मामला है। आप आते ही होंगे। रात तक राह देखी, पर आप नहीं आये। सवेरे उठकर देखा, तो वे दोनों लापता थे।''

''उसी रात चले गये?''

''जी हाँ।''

प्राण ने साँस खींची, ''तो वे सच्चे थे, बिलकुल सच्चे।''

पड़ोसी ने कहा, ''क्या?''

''जी हाँ। उन्होंने वही किया, जो उन्हें करना चाहिए था।''

और फिर अचरज से बुत बने पड़ोसी की ओर देखकर बोला, ''वे भाई, राज के पति थे।''

''राज के पति?'' चकित पड़ोसी और भी अचकचाया।

''जी हाँ। पंजाब से भागते हुए हम लोगों के साथ जो कुछ हुआ, वह तो आप जानते ही हैं। राज को भी मैंने लाशों के ढेर में से उठाया था, वह तब जानती थी कि उसके पति मर गये हैं, इसीलिए वह मेरे साथ रहने लगी।''

पड़ोसी अभी तक अचकचा रहे थे, बोले, ''आपके साथ रहने पर भी उन्हें राज को ले जाने में संकोच नहीं हुआ?''

प्राण ने कहा, ''सो तो आपने देखा ही था।''

वह क्या कहे, फिर भी ठगा–सा बोला, ''आपका अपना परिवार कहाँ है?''

''भागते हुए मेरी पत्नी और माँ–बाप दरिया में बह गये। बच्चे एक–एक करके रास्ते में सो गये।''

''भाई साहब,'' पड़ोसी जैसे चीख पड़ेंगे, पर वे बोल भी न सके। मुँह उनका खुले का खुला रह गया और दृष्टि स्थिर हो गयी।

भंडारगृह

कविता

हरि मोहन*

हार चाहिए ना पुरस्कार चाहिए।
हर एक के दिल में बसूँ, मुझे सबका प्यार चाहिए।।

प्रारम्भ में देखी थी मैंने, अपनी आँखों में नमी।
सभी के प्रयासों से मेरी, दूर हो गयी है कमी।।

सेवा से संतुष्ट कर दूंगा, मेरे द्वार तो आइए।
हर एक के दिल में बसूँ, मुझे सबका प्यार चाहिए।।

आज चर्चा हर जुबां पर, चारों ओर मेरे काम की।
मोहताज अब नहीं हूँ मैं, किसी परिचय के नाम की।।

वैज्ञानिकता से परिपूर्ण हूँ,
मुझे सेवाभाव और व्यवहार चाहिए।
हर एक के दिल में बसूँ, मुझे सबका प्यार चाहिए।।

कुछ दूरी पर पानी बदले, कुछ दूर पर बोलियाँ।
सेवा जब पाओगे मेरी, भर जाएंगी झोलियाँ।।

चाहत मेरी कहती है ये, मुझे आपका दीदार चाहिए।
हर एक के दिल में बसूँ, मुझे सबका प्यार चाहिए।।

गाँव–गाँव और शहर–शहर, सारे हिंदुस्तान में।
भंडारण में है सबसे आगे, ये है सबके संज्ञान में।।

तीव्र गति से चल रहा हूँ मैं, मुझे तो सवार चाहिए।
हर एक के दिल में बसूँ, मुझे सबका प्यार चाहिए।।

प्रशिक्षित और ज्ञान वान, सब कर्मी मेरे साथ हैं।
दिन–रात काम करने वाले, फुर्तीले से हाथ हैं।।

हरि मोहन कहे निगम और, देश का उद्धार चाहिए।
हर एक के दिल में बसूँ, मुझे सबका प्यार चाहिए।।

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

निगम के अधीनस्थ वेअरहाउस-एक परिचय

भंडारण भारती पत्रिका के अंक–73 में सैन्ट्रल वेअरहाउस, आदिलाबाद, दुग्गीराला तथा बड़ौदा–I का परिचय प्रकाशित किया गया था। इस अंक में में सैन्ट्रल वेअरहाउस पुदुचेरी, कीर्ति नगर, राणाप्रताप बाग, अगरतला (हापानिया) एवं आमिनगांव का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

सैन्ट्रल वेअरहाउस-पुदुचेरी

केन्द्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई की स्थापना अगस्त, 1969 को हुई। क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई के अंतर्गत तमिलनाडु राज्य, पुदुचेरी और अंडमान व निकोबार द्वीपों के केन्द्र शासित प्रदेशों में स्थित वेअरहाउस आते हैं। तमिलनाडु में 04 डायरेक्ट पोर्ट एंट्री व कंटेनर फ्रेट स्टेशन एवं 01 बांडेड वेअरहाउस और 20 सामान्य वेअरहाउस सहित कुल 25 वेअरहाउस हैं जिनकी कुल क्षमता 6.93 लाख मीट्रिक टन है। सैन्ट्रल वेअरहाउस, पुदुचेरी, कल्लरै रोड बनारापेट में स्थित है। यह वेअरहाउस पुदुचेरी रेलवे स्टेशन के नजदीक है।

पुदुचेरी एक केन्द्र शासित प्रदेश है। यहाँ अनेक पर्यटन स्थल, समुद्र तटों और तत्कालीन सभ्यता देखने को मिलती है। यह प्रदेश सड़क मार्ग एवं रेल मार्ग द्वारा व्यापक रूप से जुड़ा हुआ है। पुराने समय में यह फ्रांस के साथ होने वाले व्यापार का मुख्य केन्द्र था। आज भी यहाँ फ्रांसीसी वास्तुशिल्प और संस्कृति देखने को मिल जाती है।

सैन्ट्रल वेअरहाउस, पुदुचेरी की स्थापना वर्ष 1972 में 3000 मीट्रिक टन की प्रारंभिक क्षमता के साथ की गई थी और अब वर्तमान में इसकी क्षमता 7350 मीट्रिक टन हो गयी है।

नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामले विभाग, पुदुचेरी द्वारा चावल और बंगाल चना स्टॉक के भंडारण के लिए 600 मीट्रिक टन जगह आरक्षित की है। निजी डिपॉजिटर्स जैसे कि कांकरिया ट्रेडर्स, श्री शक्ति बालाजी ऑयल मिल्स, श्रीकृष्ण पैडी प्रोसेसर्स आदि कीट नियंत्रण और कोरोना कीटाणुशोधन कार्य के द्वारा डेग्राम, गिंगली, ग्राउंडनट और उबले हुए चावल को भी स्टोर किया जा रहा है।

यह वेअरहाउस सी.सी.टी.वी. निगरानी प्रणाली से युक्त है। वेअरहाउस के चारों तरफ वाहनों के पर्याप्त आवागमन का स्थान है। वेअरहाउस का परिसर पूरी तरह से अग्निशमन यंत्रों से युक्त है। वेअरहाउस में सितम्बर, 2018 में ई.एन. डब्ल्यू.आर. तहत पंजीकृत है। वेअरहाउस पर कीट नियंत्रण सेवाएं भी उपलब्ध है। वेअरहाउस के कार्य में अधिक गति लाने, अद्यतन करने तथा वेअरहाउस के सुगमता से प्रचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यू.एम.एस.) को लागू किया गया है।

सैन्ट्रल वेअरहाउस-कीर्तिनगर

सैन्ट्रल वेअरहाउस, कीर्तिनगर, क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली के अधीन है। यह क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली राज्य में है। दिल्ली राज्य में केन्द्रीय भंडारण निगम के वेअरहाउसों का विशाल नेटवर्क फैला हुआ है। क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली के अधीनस्थ कीर्ति नगर वेअरहाउस का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैः–

1. सैन्ट्रल वेअरहाउस, कीर्तिनगर की 19025 मीट्रिक टन क्षमता है।
2. यह वेअरहाउस 1982 के दौरान अस्तित्व में आया था।
3. इस वेअरहाउस में सुगमता से प्रचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यूएमएस) को लागू किया गया है।
4. यह वेअरहाउस सी.सी.टी.वी. की निगरानी प्रणाली से युक्त है।
5. इस वेअरहास में पर्याप्त श्रमशक्ति उपलब्ध है।
6. यह वेअरहाउस भंडारण के अतिरिक्त पैस्ट कंट्रोल सेवाएं (पीसीएस) भी प्रदान करता है।
7. वेअरहाउस का परिसर पूरी तरह अग्निशमन यंत्रों से युक्त है।
8. सैन्ट्रल वेअरहाउस, कीर्तिनगर ने केन्द्रीय और राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकरण से (एफएसएसएसएआई) एफ.एस.एस.आई लाइसेंस प्राप्त किया है।
9. सैन्ट्रल वेअरहाउस, कीर्तिनगर आईएसओ 9001:2015, ईएमएस 14001:2015 एवं ओएचएसएएस 18001:2007 प्रमाणन प्राप्त वेअरहाउस है।
10. स्टॉक की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए तकनीकी स्टाफ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।
11. वेअरहाउस की दूरी मायापुरी मैट्रो स्टेशन से लगभग 1.5 किलोमीटर है, जबकि कीर्तिनगर मैट्रो स्टेशन से 3.00 किलोमीटर है।
12. किसानों के लिए स्टोरेज चार्ज पर अतिरिक्त छूट दी जाती है तथा वेअरहाउस रसीद पर बैंक/वित्तीय संस्थानों द्वारा उचित रेट पर लोन उपलब्ध होता है।

सैन्ट्रल वेअरहाउस-राणा प्रताप बाग

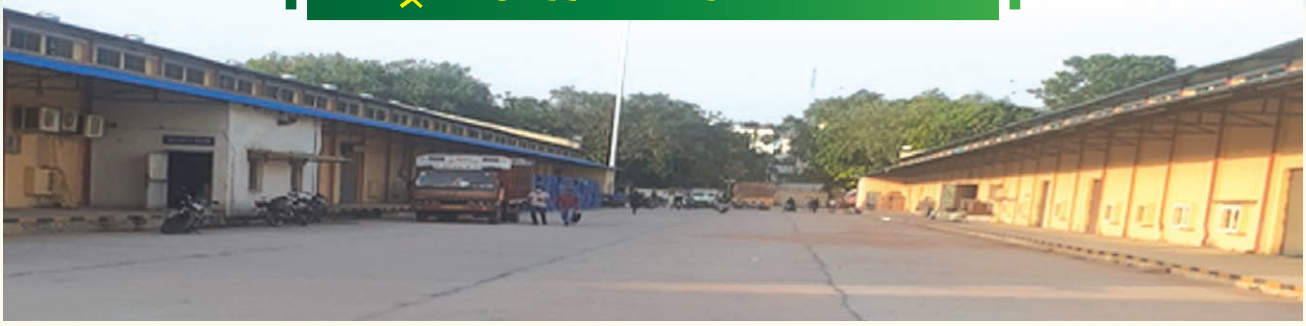

सैन्ट्रल वेअरहाउस, राणा प्रताप बाग (आर.पी.बाग) स्टेट बैंक कालोनी के सामने जी टी करनाल रोड, दिल्ली में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली के अधीनस्थ इस वेअरहाउस का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है:–

1. सैन्ट्रल वेअरहाउस, राणा प्रताप बाग 10 एकड़ जमीन पर बना हुआ है।
2. सैन्ट्रल वेअरहाउस, राणा प्रताप बाग वर्ष 1969 में अस्तित्व में आया था।
3. इस वेअरहाउस में 20047 वर्ग मीटर का कवर्ड भण्डारण एवं 1331 वर्ग मीटर खुला (ओपन) भण्डारण उपलब्ध है।
4. यह वेअरहाउस आजादपुर मंडी दिल्ली से दो किमी की दूरी पर स्थित है।
5. वेअरहाउस के चारों ओर वाहनों के आवागमन का पर्याप्त स्थान है। वेअरहाउस में 24 घंटे सुरक्षाकर्मी तैनात रहते हैं।
6. वेअरहाउस परिसर पूरी तरह अग्निशमन यंत्रों से युक्त है।
7. वेअरहाउस में पर्याप्त श्रमशक्ति उपलब्ध है।
8. वेअरहाउस परिसर में सभी सड़कें आर सी सी की बनी हुई हैं।
9. इस वेअरहाउस में लाइव लेन–देन करने तथा वेअरहाउस के सुगमता से प्रचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यूएमएस) को लागू किया गया है।

सैन्ट्रल वेअरहाउस-अगरतला (हापानिया)

सैन्ट्रल वेअरहाउस, अगरतला (हापानिया) त्रिपुरा की राजधानी में स्थित है जो शहर से 7 कि.मी. की दूरी पर है। त्रिपुरा राज्य इसकी पहाड़ियों की प्राकृतिक सुंदरता के कारण जाना जाता है। यह तीनों ओर से बांग्लादेश से घिरा हुआ है।

सैन्ट्रल वेअरहाउस, अगरतला (हापानिया) में उपलब्ध सुविधाएं

1. इस वेअरहाउस में 19250 मीट्रिक टन का कवर्ड भंडारण स्थान उपलब्ध है जिसमें 89 प्रतिशत क्षेत्र उपयोग में लाया जा रहा है।
2. यह वेअरहाउस आईएसओ 9001:2015 ईएसएस 14001:2015 एवं ओएचएसएएस 18001:2007 प्रमाणन प्राप्त है।
3. यह वेअरहाउस सी.सी.टी.वी. निगरानी प्रणाली से युक्त है।
4. वेअरहाउस के चारों ओर वाहनों के पर्याप्त आवागमन का स्थान है। इन स्थानों पर राज्य पुलिस विभाग के होम गार्ड हर समय तैनात रहते हैं।
5. वेअरहाउस का परिसर पूरी तरह अग्निशमन यंत्रों से युक्त है।
6. वेअरहाउस में 30 मीट्रिक टन का एक इलेक्ट्रॉनिक कांटा पूर्ण रूप से चालू है।
7. यह वेअरहाउस डब्ल्यूडीआरए के तहत पंजीकृत है।

8. यहां पर्याप्त श्रमशक्ति उपलब्ध है। वर्तमान समय में वेअरहाउस प्रबंधक द्वारा ई–ऑफिस में कार्य किया जा रहा है तथा डिजिटल हस्ताक्षर का भी प्रयोग किया जा रहा है, जो डिजिटलीकरण की ओर एक नया कदम है।
9. वेअरहाउस के सुगमता से प्रचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यू.एम.एस.) को लागू किया गया है।
10. इस वेअरहाउस में कीट नियंत्रण (पैस्ट कंट्रोल) सेवाएं भी उपलब्ध हैं। इस वर्ष अगरतला के निम्न स्थानों में पीसीएस कार्य किया जा रहा है:
    - क. आई.सी.पी., अगरतला के लैंड पोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया।
    - ख. एल.सी.एस. श्रीमंतपुर, एल.सी.एस. मनुघात और मुहुरीघाट (बेलोनिया)।
    - ग. बिशालगढ़, सोनामुरा कस्टम कार्यालय, अगरतला।
    - घ. रेलटेल कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड, इन्द्रनगर।
    - ड़. बैंक ऑफ इंडिया, अगरतला के सभी ब्रांच।
    - च. आईसीएफएआई विश्वविद्यालय, अगरतला, त्रिपुरा।

सैन्ट्रल वेअरहाउस-आमिनगांव

सैन्ट्रल वेअरहाउस, आमिनगांव, गुवाहाटी में स्थित है जो शहर से 15 कि.मी. की दूरी पर है तथा गुवाहाटी एयरपोर्ट के नजदीक है। यह वेअरहाउस ई.पी.आई.पी. परिसर के अंदर स्थित है। आई.सी.डी, कोंकर निकट होने के कारण वेअरहाउस में व्यापार के विभिन्न अवसर प्राप्त होते हैं।

सैन्ट्रल वेअरहाउस, आमिनगांव में उपलब्ध सुविधाएं:

1. इस वेअरहाउस में 19140 मीट्रिक टन का कवर्ड भंडारण स्थान उपलब्ध है जिसमें 87 प्रतिशत क्षेत्र विभिन्न जमाकर्ताओं द्वारा उपयोग में लाया जा रहा है।
2. यह भंडारगृह आईएसओ 9001:2015 ईएसएस 14001:2015 एवं ओएचएसएएस 18001:2007 प्रमाणन प्राप्त है।
3. इस वेअरहाउस में 8000 मी.टन बांडेड भंडारण स्थान है।
4. यह वेअरहाउस सी.सी.टी.वी. निगरानी प्रणाली से युक्त है।
5. वेअरहाउस के चारों ओर वाहनों के पर्याप्त आवागमन का स्थान है। इन स्थानों पर राज्य पुलिस विभाग के होम गार्ड हर समय तैनात रहते हैं।
6. वेअरहाउस का परिसर पूरी तरह अग्निशमन यंत्रों से युक्त है।
7. वेअरहाउस में 40 मीट्रिक टन का एक इलेक्ट्रॉनिक कांटा पूर्ण रूप से चालू है।
8. यहां पर्याप्त श्रमशक्ति उपलब्ध है। वर्तमान समय में वेअरहाउस प्रबंधक द्वारा ई–ऑफिस में कार्य किया जा रहा है तथा डिजिटल हस्ताक्षर का भी प्रयोग किया जा रहा है, जो डिजिटलीकरण की ओर एक नया कदम है।
9. वेअरहाउस के सुगमता से प्रचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यू.एम.एस.) को लागू किया गया है।
10. इस वेअरहाउस में कीट नियंत्रण (पैस्ट कंट्रोल) सेवाएं भी उपलब्ध हैं! वर्तमान में आई.सी.डी., कोंकर और सैन्ट्रल बैंक के विभिन्न ब्रांचों में पी.सी.एस. कार्य किया जा रहा है!

संघर्ष और चुनौतियाँ

विनोद जैन*

एक बार एक किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया। कभी बाढ़ आ जाये, कभी सूखा पड़ जाए, कभी धूप बहुत तेज हो जाए तो कभी ओले पड़ जाये। हर बार कुछ ना कुछ कारण से उसकी फसल थोड़ी ख़राब हो जाये।

एक दिन बड़ा तंग आकर उसने परमात्मा से कहा, देखिये प्रभु, आप परमात्मा हैं, लेकिन लगता है आपको खेती–बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है, एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिये, जैसा मै चाहू वैसा मौसम हो, फिर आप देखना मै कैसे अन्न के भण्डार भर दूंगा। परमात्मा मुस्कुराये और कहा ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम दूंगा, मै दखल नहीं करूँगा।

किसान ने गेहूं की फसल बोई, जब धूप चाही, तब धूप मिली, जब पानी तब पानी, तेज धूप, ओले, बाढ़, आंधी तो उसने आने ही नहीं दी, समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की खुशी भी, क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी। किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को, कि फसल कैसे करते हैं, बेकार ही इतने बरस हम किसानो को परेशान करते रहे। फसल काटने का समय भी आया, किसान बड़े गर्व से फसल काटने गया, लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा, एकदम से छाती पर हाथ रख कर बैठ गया। गेहूं की एक भी बाली के अन्दर गेहूं नहीं था, सारी बालियाँ अन्दर से खाली थी, बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा, प्रभु ये क्या हुआ?

तब परमात्मा बोले 'ये तो होना ही था, तुमने पौधों को संघर्ष का जरा सा भी मौका नहीं दिया, ना तेज धूप में उनको तपने दिया, ना आंधी ओलों से जूझने दिया, उनको किसी प्रकार की चुनौती का अहसास जरा भी नहीं होने दिया' इसीलिए सब पौधे खोखले रह गए, जब आंधी आती है, तेज बारिश होती है ओले गिरते हैं तब पौधा अपने बल से ही खड़ा रहता है, वो अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है और इस संघर्ष से जो बल पैदा होता है वो ही उसे शक्ति देता है, उर्जा देता है, उसकी जीवटता को उभारता है, सोने को भी कुंदन बनने के लिए आग में तपने, हथौड़ी से पीटने, गलने जैसी चुनौतियों से गुजरना पड़ता है तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है, उसे अनमोल बनाती है।

उसी तरह जिंदगी में भी अगर संघर्ष ना हो, चुनौती ना हो तो आदमी खोखला ही रह जाता है, उसके अन्दर कोई गुण नहीं आ पाता।

ये चुनौतियाँ ही हैं, जो आदमी रूपी तलवार को धार देती हैं, उसे सशक्त और प्रखर बनाती हैं, अगर प्रतिभाशाली बनना है तो चुनौतियाँ स्वीकार करनी ही पड़ेंगी, अन्यथा हम खोखले ही रह जायेंगे।

अगर जिंदगी में प्रखर बनना है, प्रतिभाशाली बनना है, तो संघर्ष और चुनौतियों का सामना तो करना ही पड़ेगा, बिना संघर्ष और चुनौतियों के हम कभी अपनी मंजिल को नहीं पा सकते। यह भी एक परीक्षा है जीवन की जिसके बिना हमें उसी तरह ज्ञान नहीं होता।

जिस तरह एक बच्चा परीक्षा दिए बिना अगली कक्षा में नही जा पाता उसी प्रकार संघर्ष और जीवन की चुनौतियों का सामना हम सभी को डटकर करना चाहिए। इसलिए यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं कि संघर्ष ही जीवन हैं और संघर्षशील व्यक्ति ही जीवन को जीने का आनन्द प्राप्त करता हैं। चूंकि संघर्ष और जीवन की चुनौतियों का सामना तो इस धरा पर आकर श्री राम और श्री कृष्ण जी ने भी किया।

*प्रतिनिधि, कंज्यूमर कोऑपरेटिव स्टोर लि0, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

तनाव रहित जीवन-सुखमय जीवन

शशि बाला*

तनाव अर्थात टेंशन। अगर ये किसी को हो जाए तो उसका भगवान ही मालिक। विशेषज्ञों की भाषा में तनाव एक व्यक्ति के दिलोदिमाग में उपजी वह अवस्था है जिसमें जीवन के हर हिस्से पर नकारात्मकता हावी हो जाती है। इसमें व्यक्ति जीवन में खुशियां होने के बावजूद नकारात्मक का प्रभाव इतना अधिक होता कि व्यक्ति उन खुशियों को खुद तो क्या अपने परिवार के साथ भी नहीं बांट पाता। व्यक्ति का मन किसी काम में नहीं लगता, हमेशा चुप–चुप रहता है, अपनों के बीच रहते हुए भी गुम–सुम रहना व उसको अपने ऊपर इतना विश्वास भी नहीं रहता कि वह सोचता है कि यदि मैंने किसी बात का उत्तर दिया तो सामने वाला व्यक्ति क्या सोचेगा आदि। व्यक्ति का मन किसी काम में नहीं लगता, वह छोटी–छोटी बातों पर आक्रामक हो उठता है और कभी–कभी आत्महत्या जैसा दुर्भाग्यपूर्ण कदम भी उठा लेता है जो न तो उसके परिवार के लिए और न ही समाज के लिए किसी भी तरह से उचित है। तनाव के अनेक कारण हो सकते हैं जैसे शादी, प्रेम, परिवार में परेशानी आना, करियर में सही प्रकार से आगे न बढ़ पाना, कार्यभार व जिम्मेदारी की अधिकता, पैसों की कमी इत्यादि। लेकिन कहते है न कि जहां चाह वहां राह। तनाव से बाहर निकलने के कुछ साधारण से उपाय है जिन्हें आप आजमा कर अपना जीवन सुखमय बना सकते हैं।

पहले हमें अपनी सोच को सकारात्मक बनाना होगा। कभी भी जीवन में आ रही कठिनाइयों से भागना नहीं चाहिए बल्कि उनका डटकर सामना करना चाहिए। सबसे पहले तनाव का उपाय सोचें और जीवन में आ रही प्रतिकूल परिस्थितियों का डटकर सामना करें। इससे बड़े से बड़ा तनाव भी दूर होगा सिर्फ हमें अपनी सोच सकारात्मक रखनी चाहिए। हमें कभी भी अपनी या अपने काम की तुलना किसी अन्य से नहीं करनी चाहिए। इस संसार में हम सब एक–दूसरे से अलग हैं, पहनावा अलग है, भाषा अलग है, रहन–सहन अलग है, यहां तक कि भाई–बहन भी जिनकी परवरिश एक ही घर एवम् एक ही माहौल में हुई है, सब एक–दूसरे से अलग होते हैं। अतः जब हम एक–दूसरे से भिन्न हैं तो हमारी परेशानियां भी एक–दूसरे से भिन्न होंगी। अनावश्यक तौर पर दूसरों की गई तुलना हमारे तनाव को और अधिक बढ़ा देंगी।

जब हमें तनाव हो ही जाए तो तनाव पर नहीं समाधान पर फोकस करें। और हां, हमें समस्या पर इतना ज्यादा सोचते नहीं रहना चाहिए और न ही उसके डर को अपने ऊपर हावी होने देना चाहिए। इसके समाधान के सभी विकल्पों के बारे सोचें और अमल करें। तनाव से दूर रहने का सबसे आसान तरीका है व्यस्त रहना। अपनी जिंदगी को पहले की तरह ही जिएं। जीवन की छोटी–छोटी खुशियां बटोरते चलें। यह देखा गया है कि हम छोटी–छोटी उपलब्धियों को नजरअंदाज करते चले जाते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि इनके द्वारा मिलने वाली खुशियों को खो देते हैं। तनाव को दूर करने का एक तरीका है जिम या एक्सरसाईज करना। इससे हम अपना चिड़चिड़ापन व गुस्सा दूर कर सकते हैं। रेगुलर एक्सरसाइज से हमारे मस्तिष्क बढ़ाने के साथ–साथ हमारी मानसिक थकान भी दूर होती है। एक्सरसाइज से मांसपेशियों में गतिशीलता बनी रहती है। शरीर स्फूर्तिदायक बना रहता है। इससे हमारे अंदर एक कान्फिडेंस आता है और हम तनाव से भी दूर होते हैं। तनाव से दूर रहने के लिए हम अपनी पसंद का म्यूजिक सुन सकते है, लांग ड्राइव पर जा सकते हैं, डांस कर सकते है, ड्राइंग कर सकते हैं इत्यादि। हमें अपने अंदर क्रिएटिविटी को जगाना चाहिए और अपने आप को छोटे–छोटे कामों में बिजी रखना चाहिए।

तनाव से दूर रहने के लिए हमें अपने आस–पास के जिंदादिल लोगों के साथ समय बिताना चाहिए। जिंदादिल लोग सकारात्मकता से भरे होते हैं। अपनी चिंता व तनाव को अपने परिवार के सदस्यों व मित्रों के साथ शेयर करें जिन्हें आपकी फिक्र है। आपको संतुलित व पौष्टिक आहार लेना चाहिए जिससे आप फिट रहें। जब आप तनाव में होते हैं तब आपको ज्यादा नींद की आवश्यकता होती है। ज्यादा न सोंये। इससे सिर में भारीपर व आलस्य की समस्या उत्पन्न हो सकती है। शारीरिक क्षमता से अधिक काम न करें क्योंकि तनाव की स्थिति में मानसिक तनाव के साथ–साथ शारीरिक समस्या का भी सामना करना पड़ सकता है। अतः तनाव को दूर करने के लिए दिए गए उपायों में कोई भी उपाय कारगर साबित नहीं हो तो डाक्टर की सलाह अवश्य लें क्योंकि यह आपकी जिंदगी का सवाल है।

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सचित्र गतिविधियां

निगम के अंशधारियों की 57वीं वार्षिक साधारण बैठक की झलकियाँ

निगमित कार्यालय द्वारा मंत्रालय को अंतरिम लाभांश का चैक प्रदत्त

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री जी को वर्ष 2019–20 के लिए लाभांश का चैक प्रदान करते हुए निगम के प्रबंध निदेशक एवं अन्य अधिकारीगण।

सैन्ट्रल वेअरहाउस–अजारा (ओपन यार्ड) की स्थापना

केन्द्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा सैन्ट्रल वेअरहाउस–अजारा (ओपन यार्ड) की स्थापना की गई जिसका उद्घाटन श्री सोमनाथ आचार्य, महाप्रबंधक (कार्मिक) तथा श्री सैम्युएल प्रवीण कुमार, महाप्रबंधक (वाणिज्यिक) के द्वारा किया गया।

इस वेअरहाउस की कुल क्षमता 8333 मीट्रिक टन हैं और वर्तमान में रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा 100 प्रतिशत आरक्षित है।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर निगमित कार्यालय में ध्वजारोहण

केन्द्रीय भंडारण निगम ने सुरक्षा और सावधानीपूर्ण उपायों के साथ सामाजिक दूरी रखते हुए 74वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव, प्रबंध निदेशक ने निगमित कार्यालय में तिरंगा फहराया। इस अवसर पर उन्होंने कोविड–19 के इस कठिन समय में खाद्यान्नों तथा कंटेनरों की निर्बाध रूप से सप्लाई चेन सुनिश्चित करने के लिए निगम के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की सराहना की। प्रबंध निदेशक ने इस अवधि के दौरान मजबूती से खड़े रहने के लिए कर्मचारियों को धन्यवाद दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हम अपना और अपने परिवारजनों का ख्याल रखें और सुरक्षित रहें।

निगम द्वारा कोविड-19 के दौरान की गई विभिन्न गतिविधियां

केंद्रीय भंडारण निगम एयरपोर्ट को कर रहा सेनिटाइज

रायपुर @ पत्रिका. स्वामी विवेकानंद अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट को रोजाना सेनिटाइज करने रायपुर एयरपोर्ट अथॉरिटी ने केंद्रीय भंडारण निगम को जिम्मेदारी सौंपी है। केंद्रीय भंडारगृह के संपर्क अधिकारी एसके यादव ने बताया कि 24 मई से प्रतिदिन एयरपोर्ट को सेनिटाइज किया जा रहा है। एयरपोर्ट पर लगे उपकरण और सिस्टम को भंडारण निगम की टीम तकनीकी प्रभारी के मौजूदगी में रात 8 बजे के बाद सेनिटाइज करना शुरू करते हैं। यह कार्य आगामी 90 दिनों तक करने आदेश जारी किया गया है।

गोदाम के निर्माण के लिए आधारशिला

श्री के.वी. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीडब्ल्यूसी द्वारा क्षेत्रीय प्रबंधक श्री पी.आर.के. नायर की उपस्थिति में दिनांक 24 अगस्त, 2020 को केरल तालस्सेरी में 10000 मीट्रिक टन के गोदाम के निर्माण के लिए आधारशिला रखी गई। केरल इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (केआईएनएफआरए) से 90 वर्षों के लिए लीज आधार पर ली गई 3.71 एकड़ भूमि में गोदाम का निर्माण किया जाएगा।

कोच्चि क्षेत्र का यह 12वाँ गोदाम कृषि उत्पाद के लिए 5000 मीट्रिक टन और अन्य स्टॉक के लिए 5000 मीट्रिक टन का होगा तथा इसका अनुमानित कुल पूंजीगत व्यय 1253.62 लाख रु. है। इस गोदाम के मार्च, 2021 के अंत तक शुरू होने की संभावना है।

निगमित कार्यालय में चिकित्सा शिविर का आयोजन

केंद्रीय भंडारण निगम, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली में इन्द्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल द्वारा आईजीजी एंटी–बॉडी टेस्ट कराने के लिए एक दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसके लिए सभी नियमित कर्मचारियों, कैजुअल श्रमिकों सहित सुरक्षा गार्ड एवं दैनिक श्रमिकों से स्वेच्छा आधार पर टैस्ट कराने का अनुरोध किया गया था, जो एक स्थान पर कार्यरत कर्मचारियों के अधिकतम हित में था। यह परीक्षण कोविड–19 के फैलाव की प्रवृत्ति को मॉनीटर एवं मूल्यांकन करने के लिए खून की जांच अर्थात् सीरो–सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया था। यह परीक्षण सार्स–सीओवी–2 से संक्रमित जनसंख्या सहित गैर लक्षण वाले व्यक्तियों के अनुपात की पहचान करने के लिए उपयोगी है।

निगमित कार्यालय में हिंदी दिवस का आयोजन

केंद्रीय भंडारण निगम, निगमित कार्यालय द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री जी एवं राज्यमंत्री जी का संदेश सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के ध्यान में लाने के उद्देश्य से पढ़कर सुनाया गया। निगम द्वारा 14 से 28 सितंबर, 2020 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है। इस दौरान विशेष हिंदी कार्यशाला, निबंध एवं राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता के अलावा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की जाएगी। ये कार्यक्रम यथासंभव ऑनलाइन अथवा सोशल डिस्टेंसिग के माध्यम से आयोजित किए जा रहे हैं।

एक दिवसीय ऑनलाइन राजभाषा कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

निगमित कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण अनुभाग एवं राजभाषा अनुभाग के सहयोग से हर वर्ष अखिल भारतीय स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस वर्ष भी दिनांक 30.07.2020 को राजभाषा पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जो निगम में राजभाषा को बढ़ाने की दिशा में एक सकारात्मक प्रयास है। इस कार्यक्रम में निगमित कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालयों तथा वेअरहाउसों में कार्यरत 34 प्रतिभागी शामिल हुए। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में 'सरकारी कामकाज में अनुवाद की भूमिका, वाक्य संरचना एवं ई–टूल्स का प्रयोग' तथा संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली तैयार करते समय तथा टिप्पण एवं आलेखन करते समय ध्यान में रखी जाने वाली बातों पर एवं द्वितीय सत्र में ' 'ई–ऑफिस में हिंदी में कार्य करते समय ध्यान में रखने वाली बातें' तथा कार्यालय कार्य में देवनागरी लिपि एवं शुद्ध वर्तनी का प्रयोग' विषय पर व्याख्यान दिया गया।

इस अवसर पर निदेशक (कार्मिक) महोदय द्वारा 'भंडारण भारती' के अंक–73 का ऑनलाइन विमोचन किया गया।

इस प्रकार प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रतिभागियों को निश्चित रूप से नई जानकारी प्राप्त होगी, जिसका उपयोग कार्यालय में राजभाषा की प्रगति के लिए सहायक सिद्ध होगा।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम (2020–21)

क्र. स.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपि की भर्ती	80%	70%	40%
6	हिंदी में डिक्टेशन/की–बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं अथवा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13	i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम–से–कम एक निरीक्षण		
14	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठकें वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

जन-जन के लिए भण्डारण

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास, नई दिल्ली-110016